

वार्षिक रिपोर्ट
2022- 2023

(01 जनवरी 2022 से 31 दिसंबर 2022 तक)



भारत सरकार
आयुष मंत्रालय

विषय-सूची

| अध्याय संख्या | अध्याय शीर्षक | पृष्ठ संख्या |
|---------------|--|--------------|
| | संक्षिप्तियां | i-iv |
| 1. | अवलोकन | 1 |
| 2. | आयुष पद्धतियां | |
| 3. | केंद्रीय आयुष पद्धतियों का संगठनात्मक ढांचा | |
| 4. | आयुष शिक्षा क्षेत्र | |
| 5. | आयुष मंत्रालय के अधीन संगठनों से जन-स्वास्थ्य सेवाएं | |
| 6. | आयुष क्षेत्र में अनुसंधान | |
| 7. | राष्ट्रीय आयुष मिशन | |
| 8. | सूचना, शिक्षा और संचार | |
| 9. | मीडिया आउटरीच | |
| 10. | भारत में औषधीय पादप क्षेत्र | |
| 11. | आयुष औषधियों का गुणवत्ता नियंत्रण और विनियमन | |
| 12. | भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग | |
| 13. | आयुष में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और वैश्वीकरण | |
| 14. | अन्य केंद्रीय क्षेत्र योजनाएं | |
| 15. | आयोजना एवं मूल्यांकन | |
| 16. | हिंदी का उत्तरोत्तर प्रयोग | |
| 17. | लैंगिक सशक्तिकरण एवं समानता | |
| 18. | आयुष ग्रिड | |
| | संलग्नक-क | |
| | संलग्नक-ख | |

संक्षिप्तियां

1. एसीटी - आयुर्वेद नैदानिक परीक्षण
2. एडीई - औषध प्रतिकूल मामला
3. एडीआर - औषध प्रतिकूल प्रभाव
4. एआईआईए - अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान
5. एएनसी - प्रसवोपरान्त देखभाल
6. एपी - आयुर्वेद भेषजसंहिता
7. एपीसी - आयुर्वेदिक भेषजसंहिता समिति
8. एएसयूडीसीसी - आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी औषध परामर्शदात्री समिति
9. एएसयूडीटीएबी - आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी औषध तकनीकी सलाहकार बोर्ड
10. बिम्सटेक - बहुक्षेत्रीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग हेतु बंगाल की खाड़ी पहल
11. सीएसएस - मौजूदा जागरूकता सेवा
12. सीबीडी - जैवीय विविधता पर सम्मेलन
13. सीसीएच - केंद्रीय होम्योपैथी परिषद
14. सीसीआईएम - भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद
15. सीसीआरएस - केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद
16. सीसीआरएच - केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद
17. सीसीआरएस - केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद
18. सीसीआरयूएम - केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद
19. सीसीआरवाईएन - केंद्रीय योग व प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद
20. सीजीएचएस - केंद्रीय सरकार स्वास्थ्य सेवा योजना
21. सीएचसी - सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र
22. सीएमई - अनवरत चिकित्सा शिक्षा
23. सीओपीडी - जटिल प्रतिरोधी फेफड़े के रोग
24. सीआरआई - केंद्रीय अनुसंधान संस्थान
25. सीआरयू - नैदानिक अनुसंधान एकांश
26. सीएसआईआर - वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद
27. डीबीटी - जैव-प्रौद्योगिकी विभाग
28. डीएच - जिला अस्पताल

| | | | |
|-----|------------------|---|--|
| 29. | डीटीएलएस | - | औषध परीक्षण प्रयोगशालाएं |
| 30. | ईएमआर | - | बहिर्वर्ती अनुसंधान |
| 31. | जीएयू | - | गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय |
| 32. | जीएलपी | - | उत्तम प्रयोगशाला पद्धतियां |
| 33. | जीएमपी | - | उत्तम विनिर्माण पद्धतियां |
| 34. | एचपीएल | - | होम्योपैथी भेषजसंहिता प्रयोगशाला |
| 35. | आईआईआईएम | - | भारतीय समेकित चिकित्सा संस्थान |
| 36. | आईएल एण्ड एफएस | - | अवसंरचना पट्टाकरण एवं वित्तीय सेवाएं |
| 37. | आईएमपीसीएल | - | इंडियन मेडिसिन फॉर्मास्युटिकल कार्पोरेशन लिमिटेड |
| 38. | आईपीडी | - | अंतरंग रोगी विभाग |
| 39. | आईपीजीटी एंड आरए | - | आयुर्वेद स्नातकोत्तर शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान |
| 40. | आईपीआर | - | बौद्धिक सम्पदा अधिकार |
| 41. | आईएसएम एंड एच | - | भारतीय चिकित्सा पद्धतियां एवं होम्योपैथी |
| 42. | एमडीएनआईवाई | - | मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान |
| 43. | एमओईएफ एंड सीसी | - | पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय |
| 44. | एनएएम | - | राष्ट्रीय आयुष मिशन |
| 45. | एनबीए | - | राष्ट्रीय जैव-विविधता प्राधिकरण |
| 46. | एनईआईएएच | - | पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान |
| 47. | एनईआईएएफएमआर | - | पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं लोक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान |
| 48. | एनजीओ | - | गैर-सरकारी संगठन |
| 49. | एनआईए | - | राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान |
| 50. | एनएचआरआईएमएच | - | राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य होम्योपैथी अनुसंधान संस्थान |
| 51. | एनआईएच | - | राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान |
| 52. | एनआईएन | - | राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान |
| 53. | एनआईएस | - | राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान |
| 54. | एनआईयूएम | - | राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान |
| 55. | एनआरएचएम | - | राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन |
| 56. | ओपीडी | - | बहिरंग रोगी विभाग |
| 57. | पीसीआईएम एंड एच | - | भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता प्रयोगशाला |
| 58. | पीईसी | - | परियोजना मूल्यांकन समिति |
| 59. | पीजी | - | स्नातकोत्तर |
| 60. | पीजीआईएमईआर | - | स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान |

| | | | |
|-----|-----------------------|---|---|
| 61. | पीएचसी | - | प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र |
| 62. | पीएलआईएम | - | भारतीय चिकित्सा भेषजसंहिता प्रयोगशाला |
| 63. | पीपीपी | - | सार्वजनिक निजी भागीदारी |
| 64. | क्यूसीआई | - | भारतीय गुणवत्ता परिषद |
| 65. | आरएवी | - | राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ |
| 66. | आरसीएच | - | प्रजनन बाल स्वास्थ्य |
| 67. | आरईटी | - | विलुप्तप्राय, दुर्लभ और संकटयुक्त |
| 68. | आरआरआई | - | क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान |
| 69. | एससीपी | - | विशेष संगठक योजना |
| 70. | एससीआरआईसी | - | केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान संस्थान, चेन्नई |
| 71. | एससीआरयूबी | - | सिद्ध क्लिनिकल रिसर्च यूनिट, बेंगलुरु |
| 72. | एससीआरयूएनडी | - | सिद्ध क्लिनिकल रिसर्च यूनिट, नई दिल्ली |
| 73. | एससीआरयूपी | - | सिद्ध क्लिनिकल रिसर्च यूनिट, पलायमकोट्टई |
| 74. | एससीआरयूटी | - | सिद्ध क्लिनिकल रिसर्च यूनिट, तिरुपति |
| 75. | एसडीआई | - | सूचना का चयनित प्रसार |
| 76. | एसपीवी | - | विशेष प्रयोजन वाहन |
| 77. | एसआरआरआईपी | - | क्षेत्रीय सिद्ध अनुसंधान संस्थान, पुदुचेरी |
| 78. | एसआरआरआईटी | - | क्षेत्रीय सिद्ध अनुसंधान संस्थान, तिरुवनंतपुरम |
| 79. | टीकेडीएल | - | पारंपरिक ज्ञान अंकीय पुस्तकालय |
| 80. | टीएससी | - | जनजातीय उप योजना |
| 81. | यूजी | - | स्नातक-पूर्व |
| 82. | डब्ल्यूएचओ | - | विश्व स्वास्थ्य संगठन |
| 83. | डब्ल्यूएचओ एसईएआरओ | - | डब्ल्यूएचओ का दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्रीय कार्यालय |

अध्याय 1

अवलोकन

1.1 मंत्रालय की पृष्ठभूमि

विजन

आयुष मंत्रालय आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा-रिग्पा और होम्योपैथी नामक आयुष पद्धतियों के विकास के लिए अधिदेशित है।

मंत्रालय स्वस्थ भारत के निर्माण के लिए आयुष पद्धतियों को जीवन और अभ्यास की पसंदीदा पद्धतियों के रूप में स्थापित करने के दृष्टिकोण के साथ काम करता है। यह विजन देश में स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने वाले संबंधित विशेषज्ञों की विचार प्रक्रियाओं से बना है।

मिशन

मंत्रालय ने आयुष कार्यकलापों के सात व्यापक विषयगत क्षेत्रों के संदर्भ में अपने मिशन की पहचान की है। विषयगत क्षेत्र इस प्रकार हैं:

- (i) प्रभावी मानव संसाधन विकास
- (ii) गुणवत्तायुक्त आयुष सेवाओं का प्रावधान
- (iii) सूचना, शिक्षा और संचार
- (iv) आयुष क्षेत्र में गुणवत्ता अनुसंधान
- (v) औषधीय पादप क्षेत्र का विकास
- (vi) औषधि प्रशासन
- (vii) आयुष क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान कार्यक्रम/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं

1.2 मंत्रालय का संगठनात्मक ढांचा

आयुष मंत्रालय का नेतृत्व माननीय केंद्रीय कैबिनेट मंत्री श्री सर्बानंद सोणोवाल, आयुष मंत्रालय और पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय तथा माननीय राज्य मंत्री डॉ. मुंजपरा महेंद्रभाई कालूभाई, आयुष मंत्रालय और महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा किया जाता है।

वैद्य राजेश कोटेचा जो प्रख्यात आयुर्वेदिक चिकित्सक हैं, आयुष मंत्रालय में भारत सरकार के सचिव हैं। श्री प्रमोद कुमार पाठक, विशेष सचिव और संयुक्त सचिव स्तर के दो (2) अधिकारी मंत्रालय में काम कर रहे हैं।

दो (2) संयुक्त सचिवों के अलावा, तकनीकी जिम्मेदारियों को संभालने के लिए वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड (एसएजी) अधिकारी हैं जैसे आयुर्वेद, होम्योपैथी और यूनानी पद्धतियों के सलाहकार। अधिकारियों में एक उप महानिदेशक, बारह (12) निदेशक/उप सचिव या समकक्ष ग्रेड के अधिकारी और तेईस (23) अवर सचिव या समकक्ष ग्रेड के अधिकारी शामिल हैं जो 31.12.2022 तक आयुष मंत्रालय की आवश्यक जिम्मेदारियों को संभाले हुए हैं। इसके अलावा, औषधीय पौधों को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी) का नेतृत्व मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) द्वारा किया जाता है, जो एक एसएजी ग्रेड अधिकारी हैं। 31.12.2022 की स्थिति के अनुसार आयुष मंत्रालय में कुल स्वीकृत पदों, भरे हुए पदों और रिक्तियों की संख्या (एनएमपीबी के समूह 'क' तकनीकी पदों सहित) **संलग्नक-क** में दी गई है।

1.3. उल्लेखनीय घटनाएं

वैश्विक आयुष निवेश और नवाचार शिखर सम्मेलन, 2022

वैश्विक शिखर सम्मेलन 20 से 22 अप्रैल 2022 तक महात्मा मंदिर, गांधीनगर, गुजरात में आयोजित किया गया था। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के सहयोग से

जामनगर में 'पारंपरिक चिकित्सा हेतु वैश्विक केंद्र' के शुभारंभ के साथ ही गांधीनगर में इस सम्मेलन का आयोजन किया गया था। यह अनूठा वैश्विक केंद्र आधुनिक विज्ञान के साथ प्राचीन पद्धतियों को जोड़ कर आयुष की क्षमता को व्यापक करने के लिए स्थापित किया गया है। मंत्रालय ने दो राष्ट्रीय भागीदारों (भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) और आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, (आईटीआरए) जामनगर, गुजरात) और दो कौशल भागीदारों (इन्वेस्ट इंडिया एंड अन्स्ट एंड यंग) को नियुक्त किया। शिखर सम्मेलन आयुष के उप-क्षेत्रों- आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा रिग्पा और होम्योपैथी के आसपास घूमता है। तीन दिनों में, इस कार्यक्रम में 5 पूर्ण सत्र, 8 गोलमेज, 6 कार्यशालाएं और 3 संगोष्ठियां आयोजित की गई थीं, जिसके लिए दुनिया भर से लगभग 90 वक्ताओं को आमंत्रित किया गया था। शिखर सम्मेलन के दौरान लगभग 100 प्रदर्शकों ने अपने उत्पादों और सेवाओं का प्रदर्शन भी किया। भारत के माननीय प्रधान मंत्री, श्री नरेंद्र मोदी ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई और पारंपरिक चिकित्सा हेतु वैश्विक केंद्र का शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम में गणमान्य व्यक्तियों यथा मॉरीशस के माननीय प्रधानमंत्री, डब्ल्यूएचओ के महानिदेशक, कैबिनेट मंत्रियों और विभिन्न राष्ट्रीय/ अंतर्राष्ट्रीय हितधारकों जैसे स्टार्ट-अप्स, उद्यमियों, निवेशकों, नीति निर्माताओं और विभिन्न उद्योग विशेषज्ञों तथा शैक्षणिक संस्थानों और छात्रों ने भाग लिया। आयुष मंत्रालय 9,000 करोड़ रुपये से अधिक की कुल निवेश प्रतिबद्धता को आकर्षित करने में सक्षम रहा। ये निवेश प्रस्ताव एफएमसीजी, चिकित्सा महत्व यात्रा (एमवीटी) और सेवाओं, फार्मास्यूटिकल्स, प्रौद्योगिकी एवं निदान, और किसान एवं कृषि जैसी प्रमुख श्रेणियों में आए। शिखर सम्मेलन के दौरान, देशों, प्रतिष्ठित अनुसंधान संस्थानों, किसान समूहों और उद्योग के बीच 70 से अधिक एमओयू (समझौता ज्ञापनों) पर हस्ताक्षर किए गए। आयुष मंत्रालय ने भारत भर में 35 से अधिक छावनी क्षेत्रों में आयुष सुविधाएं शुरू करने के लिए रक्षा मंत्रालय के साथ एक समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किए। कोलंबिया, मेक्सिको, क्यूबा, जर्मनी, जमैका, किर्गिस्तान और थाईलैंड जैसे देश आयुष मंत्रालय के साथ सहयोग करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। अमूल, डाबर इंडिया,

कामा आयुर्वेद और अन्य जैसी कंपनियां भी आयुष क्षेत्र और एफएमसीजी उद्योग के बीच तालमेल लाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। विभिन्न देशों और हितधारकों के साथ विभिन्न समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए हैं। वैश्विक आयुष निवेश और नवाचार शिखर सम्मेलन, 2022 भारत सरकार द्वारा भारत के प्राचीन ज्ञान और पारंपरिक ज्ञान की ओर दुनिया का ध्यान आकर्षित करने और एक सतत भविष्य का मार्ग प्रशस्त करने के लिए इसका लाभ उठाने का एक विशिष्ट प्रयास था।

पारंपरिक चिकित्सा हेतु डब्ल्यूएचओ वैश्विक केंद्र (डब्ल्यूएचओ- जीसीटीएम)

आयुष मंत्रालय ने जामनगर, गुजरात में पारंपरिक चिकित्सा हेतु डब्ल्यूएचओ वैश्विक केंद्र (डब्ल्यूएचओ-जीसीटीएम) की स्थापना के लिए 25 मार्च, 2022 को डब्ल्यूएचओ के साथ एक मेजबान देश समझौते (एचसीए) पर हस्ताक्षर किए हैं।



डब्ल्यूएचओ जीसीटीएम का भूमि-पूजन समारोह 19 अप्रैल, 2022 को जामनगर, गुजरात में भारत के माननीय प्रधान मंत्री; डब्ल्यूएचओ के महानिदेशक और मॉरीशस के माननीय प्रधान मंत्री की गरिमामई उपस्थिति में आयोजित किया गया था।



डब्ल्यूएचओ जीसीटीएम का एक अंतरिम कार्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए), जामनगर, गुजरात में भी प्रस्तावित किया गया है, जो तब तक आयुष मंत्रालय के तहत एक राष्ट्रीय महत्व का संस्थान (आईएनआई) है, जब तक कि मुख्य कार्यालय कार्य करना शुरू नहीं कर देता है। अंतरिम कार्यालय का उद्देश्य 31 मार्च, 2024 तक डब्ल्यूएचओ जीसीटीएम के मुख्य कार्यालय की स्थापना संबंधी कार्यकलापों, प्रबंध-व्यवस्थाओं, व्यावसायिक संचालन, प्रशासनिक प्रक्रियाओं आदि की निगरानी करना है। जीसीटीएम का मुख्य कार्यालय गोरधनपुर, जामनगर-द्वारका राजमार्ग, गुजरात में लगभग 35 एकड़ क्षेत्र में स्थापित किया जाना प्रस्तावित है।

डब्ल्यूएचओ-जीसीटीएम वैश्विक कल्याण के केंद्र के रूप में उभरेगा जो औषधियों के विकास और पारंपरिक चिकित्सा से संबंधित अनुसंधान को बढ़ावा देगा। यह दुनिया भर में आयुष पद्धतियों को स्थापित करने और पारंपरिक चिकित्सा से संबंधित वैश्विक स्वास्थ्य मामलों पर नेतृत्व प्रदान करने में मदद करेगा। केंद्र पारंपरिक चिकित्सा की गुणवत्ता, सुरक्षा और प्रभावकारिता, पहुंच और तर्कसंगत उपयोग सुनिश्चित करने और संबंधित तकनीकी क्षेत्रों में मानदंडों, मानकों और दिशानिर्देशों, टूल्स और पद्धतियों को विकसित करने के लिए भी काम करेगा, ताकि आंकड़ों को एकत्र कर उनका विश्लेषण किया जा सके, और प्रभाव का आकलन किया जा सके।

आयुर्वेद दिवस 2022

आयुर्वेद के महत्व को ध्यान में रखते हुए, आयुष मंत्रालय ने 23 अक्टूबर, 2022 को 07वें आयुर्वेद दिवस को मनाने के लिए 12 सितंबर, 2022 से 23 अक्टूबर, 2022 तक "आयुर्वेद @ 2047" मनाने हेतु कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित की।

इस आयोजन का विषय "हर दिन हर घर आयुर्वेद" था, जिसे आयुर्वेद को मुख्यधारा में बढ़ावा देने, राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति और राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों में योगदान के लिए आयुर्वेद की क्षमता का विश्व स्तर पर पता लगाने, आयुर्वेद की क्षमता का उपयोग करके बीमारी और संबंधित रुग्णता और मृत्यु दर के बोझ को कम करने, आयुर्वेद की ताकत और इसके अद्वितीय उपचार सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित करने, जनता में आयुर्वेद के लिए विश्वास बढ़ाने, आज की पीढ़ी में जागरूकता की भावना पैदा करना और समाज में उपचार के आयुर्वेदिक सिद्धांतों को बढ़ावा देना तथा आयुर्वेद के साक्ष्य आधारित वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति होने के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए अपनाया गया था।

उद्देश्यों और विजन को हासिल करने के लिए, 3-ज यानी *जन-संदेश*, *जन-भागीदारी* और *जन-आंदोलन* के तहत विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। उन्हें देश के हर हितधारक तक पहुंचने और संवेदनशील बनाने और उन्हें विजन में जिम्मेदारी से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से तैयार किया गया था, जिससे एक जन-आंदोलन खड़ा हुआ।

आयोजनों के एक भाग के रूप में, आयुष मंत्रालय द्वारा MyGov वेबसाइट के माध्यम से विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता में कुल 15,474 लोगों ने भाग लिया, जबकि पोस्टर-मेकिंग, कॉमिक-मेकिंग, जिंगल/रिंगटोन/गीत रचना जैसी श्रेणियों के लिए क्रमशः 536, 403 और 330 प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। अभियान के बारे में संवेदनशील बनाने और चर्चा पैदा करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग किया गया और उसे सक्रिय बनाया गया।

08वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 21 जून 2022 को 08वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने के लिए मैसूर, कर्नाटक के मैसूर पैलेस ग्राउंड में आयोजित हजारों प्रतिभागियों के सामूहिक योग प्रदर्शन में भाग लिया।

मैसूर में कार्यक्रम को संबोधित करते हुए, माननीय प्रधान मंत्री ने कहा, "योग हमारे समाज, राष्ट्रों, विश्व में शांति लाता है और योग हमारे ब्रह्मांड में शांति लाता है। मैं इस 8वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सभी को बधाई देता हूँ। आज, योग का दुनिया के सभी हिस्सों में अभ्यास किया जा रहा है। योग से न केवल लोगों को शांति मिलती है, बल्कि यह हमारे राष्ट्रों के बीच और दुनिया में भी शांति लाता है।" उन्होंने आगे कहा, "यह पूरा ब्रह्मांड हमारी अपनी काया और आत्मा से शुरू होता है। ब्रह्मांड हमसे शुरू होता है। और, योग हमें हमारे भीतर की हर चीज के बारे में जागरूक करता है और जागरूकता की भावना पैदा करता है।"

माननीय प्रधान मंत्री ने यह भी कहा कि, "योग अब एक वैश्विक उत्सव बन गया है। योग केवल किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं है, बल्कि पूरी मानवता के लिए है। इसलिए इस बार अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का विषय है - मानवता के लिए योग।"



इस वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 2022 के लिए एक अनूठी और अभिनव अवधारणा, 'द गार्जियन रिंग ऑफ योगा' की परिकल्पना की गई थी। जैसा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने उल्लेख किया, गार्जियन रिंग ऑफ योगा 'एक सूर्य, एक पृथ्वी' की अवधारणा को रेखांकित करते हुए सूर्य की गति का अनुष्ठान करता है।



“द गार्डियन रिंग” विदेशों में भारतीय मिशनों सहित 79 देशों और संयुक्त राष्ट्र संगठनों के बीच एक सहयोगात्मक अभ्यास था, जो राष्ट्रीय सीमाओं को पार करने वाली योग की एकीकृत शक्ति को दर्शाता है।

प्राकृतिक चिकित्सा दिवस

दवा रहित चिकित्सा पद्धति के माध्यम से सकारात्मक मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए हर साल 18 नवंबर को भारत में प्राकृतिक चिकित्सा दिवस मनाया जाता है। यह दिवस आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 18 नवंबर, 2018 को घोषित किया गया था।

इस वर्ष, सीसीआरवाईएन, नई दिल्ली और राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान, पुणे ने संयुक्त रूप से 16 से 20 नवंबर 2022 के बीच पुणे महाराष्ट्र में प्राकृतिक चिकित्सा दिवस समारोह का आयोजन किया है। इस वर्ष के प्राकृतिक चिकित्सा दिवस उत्सव का विषय “प्राकृतिक चिकित्सा एक एकीकृत चिकित्सा” था जिसमें कोई भी व्यक्ति बीमारी और इसकी जटिलताओं को रोकने तथा स्वास्थ्य एवं स्वस्थता बनाए रखने के लिए प्राकृतिक चिकित्सा के तहत विभिन्न उपचारों और थेरेपीज का उपयोग कर सकता है।

इस अवसर पर, 05वें प्राकृतिक चिकित्सा दिवस के उपलक्ष्य में एक विशेष कवर वाला लिफाफा जारी किया गया। नई दिल्ली, वर्धा और हैदराबाद से शुरू होकर पुणे में एकत्रित साइकिल रैलियों में भाग लेने वालों को गांधी स्मृति चिन्ह दिया गया। स्टार्ट-अप योगा चैलेंज विजेताओं को प्रमाण पत्र दिए गए। 25 से अधिक कॉलेजों के छात्रों ने संकायों के साथ इस कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम का समापन मल्लखम्भ प्रस्तुति के साथ हुआ।

यूनानी दिवस

उद्घाटन सत्र में सीसीआरयूएम द्वारा प्रकाशित सम्मेलन स्मारिका और आठ पुस्तकों का विमोचन भी हुआ। इसके अलावा, हैदराबाद में केंद्रीय आयुर्वेदीय अनुसंधान परिषद के तहत कार्यरत नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन मेडिकल हेरिटेज द्वारा विकसित दो यूनानी ई-पुस्तकों का विमोचन और सीसीआरयूएम ऐप्स का विमोचन किया गया, आरआरआईयूएम, श्रीनगर को एनएबीएच प्रत्यायन प्रमाणपत्र दिया गया, अनुसंधान और प्रशिक्षण के लिए मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, नई दिल्ली और आयुष निदेशालय, जम्मू-कश्मीर के बीच समझौता ज्ञापन का आदान-प्रदान हुआ, योग प्रशिक्षकों को सम्मानित करने के लिए वाईसीबी प्रमाण पत्र दिए गए और लाइव योग प्रदर्शन किया गया।



यूनानी दिवस 2022 के उद्घाटन सत्र में भाग लेते गणमान्य व्यक्ति



यूनानी दिवस 2022 के अवसर पर जनसभा को संबोधित करते हुए श्री सर्बानंद सोणोवाल, माननीय कैबिनेट मंत्री, आयुष मंत्रालय और पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय।



यूनानी दिवस 2022 के अवसर पर जनसभा को संबोधित करते हुए डॉ. मुंजपरा महेंद्रभाई कालूभाई, माननीय आयुष राज्य मंत्री और महिला एवं बाल विकास मंत्रालय।

सिद्ध दिवस

आयुष मंत्रालय हर साल अगथियार के जन्मदिन की पूर्व संध्या पर सिद्ध दिवस मनाता है, जो मार्गाज़ी महीने के अयिलयम नक्षत्र के दौरान आता है। आयुष मंत्रालय की सहायता से छठे सिद्ध दिवस का आयोजन संयुक्त रूप से केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद और राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान, चेन्नई द्वारा भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी निदेशालय के सहयोग से 09 जनवरी, 2023 को त्रिचुरापल्ली, तमिलनाडु में किया गया है। इसका विषय "स्वस्थ जीवन के लिए सिद्ध आहार और पोषण" था। इस शुभ अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. मुंजपरा महेंद्रभाई, माननीय राज्य मंत्री, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय और आयुष मंत्रालय तथा श्री सु. थिरुनावुक्करासर, माननीय संसद सदस्य (राज्य सभा) उपस्थित थे। इस मुख्य आयोजन के संबंध में सीसीआरएस और एनआईएस के परिधीय संस्थानों में सिद्ध दिवस-पूर्व कई कार्यकलापों का भी आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के प्रतिभागियों में सम्मानित गणमान्य व्यक्ति, सिद्ध चिकित्सक, संकाय सदस्य और विभिन्न सिद्ध मेडिकल कॉलेजों के छात्र शामिल थे। डॉ. एम. इलांगोवन, प्रधान वैज्ञानिक, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ मिलेट्स रिसर्च, हैदराबाद; डॉ. जी. शिवरामन, राज्य योजना आयोग के सदस्य, तमिलनाडु सरकार; डॉ. जी. मधु कारथीश, राष्ट्रीय खाद्य सलाहकार, मॉरीशस सरकार ने 03 विभिन्न पूर्ण सत्रों में सिद्ध आहार और पोषण पर व्याख्यान दिए।



कुतुबिलाकु प्रज्ज्वलित करते हुए डॉ. मुंजपरा महेंद्रभाई, माननीय राज्य मंत्री, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय और आयुष मंत्रालय।



छठे सिद्ध दिवस के दौरान मुख्य अतिथि द्वारा प्रकाशनों का विमोचन

विश्व होम्योपैथी दिवस

विश्व होम्योपैथी दिवस, होम्योपैथी के संस्थापक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनीमैन के जन्म वर्षगांठ पर मनाया जाता है। इस बार यह उनकी 267वीं जयंती के अवसर पर मनाया गया है। इस वैज्ञानिक सम्मेलन का विषय था, 'होम्योपैथी: आरोग्यता के लिए लोगों की पसंद'। विश्व होम्योपैथी दिवस (डब्ल्यूएचडी) 9 और 10 अप्रैल 2022 को भारत रत्न सी. सुब्रमण्यम ऑडिटोरियम, नई दिल्ली में मनाया गया। इस अवसर पर आयुष मंत्रालय के तत्वावधान में तीन शीर्ष निकायों नामतः केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद, राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग और राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान द्वारा नई दिल्ली में दो दिवसीय वैज्ञानिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। 9 अप्रैल 2022 को इस वैज्ञानिक सम्मेलन का उद्घाटन श्री सर्बानंद सोणोवाल, माननीय केंद्रीय मंत्री, आयुष मंत्रालय और पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय तथा डॉ. महेंद्रभाई मुंजपरा, माननीय राज्य मंत्री, आयुष मंत्रालय और महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा किया गया।

1.4 वर्ष 2022 में आयुष मंत्रालय की प्रमुख उपलब्धियां

1.4.1 पारंपरिक चिकित्सा हेतु डब्ल्यूएचओ वैश्विक केंद्र (डब्ल्यूएचओ- जीसीटीएम) की स्थापना:

जामनगर, भारत में डब्ल्यूएचओ मुख्यालय का एक आउटपोस्ट: भारत में पारंपरिक चिकित्सा हेतु डब्ल्यूएचओ वैश्विक केंद्र की स्थापना की घोषणा महानिदेशक-डब्ल्यूएचओ द्वारा आयुर्वेद दिवस, 13 नवंबर 2020 के अवसर पर माननीय प्रधान मंत्री की उपस्थिति में की गई जिसका उद्देश्य "वैश्विक स्वास्थ्य में सुधार लाने और सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज का लक्ष्य हासिल करने हेतु पारंपरिक चिकित्सा" है। अप्रैल 2022 में माननीय प्रधान मंत्री, माननीय प्रधान मंत्री मॉरीशस और डीजी-डब्ल्यूएचओ की उपस्थिति में पारंपरिक चिकित्सा हेतु डब्ल्यूएचओ वैश्विक केंद्र की आधारशिला रखी गई और

डब्ल्यूएचओ-जीसीटीएम के एक अंतरिम कार्यालय को कार्यात्मक बनाया गया। यह किसी विकासशील देश में संयुक्त राष्ट्र का पहला आउटपोस्ट है।

1.4.2 वैश्विक आयुष निवेश और नवाचार शिखर सम्मेलन, 2022

आयुष मंत्रालय द्वारा प्राप्त आशय पत्र (एलओआई) के अनुसार, एफएमसीजी, फार्मा, सेवा क्षेत्र आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों के भारतीय निवेशकों द्वारा 9,013 करोड़ रुपये का सांकेतिक निवेश किया गया है। इसके अलावा, प्रस्तुत एलओआई से 5,35,900 नौकरियों के उत्तरोत्तर रोजगार सृजन का संकेत मिलता है, और एलओआई के माध्यम से इंगित पहल/निवेश से 75,70,100 लोगों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ने का अनुमान है।

1.4.3 स्टार्ट-अप और एमएसएमई के लिए अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र

आयुष क्षेत्र में स्टार्ट-अप और एमएसएमई के लिए एक अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र उभर रहा है, जो वर्तमान में विकसित हो रहे आयुष क्षेत्र में बड़े पैमाने पर नवाचार को बढ़ावा दे रहा है। वर्तमान में एमएसएमई के उद्यम पोर्टल के अनुसार आयुष में लगभग 53023 एमएसएमई (नवंबर 2022 के डेटा) हैं। अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए), जो आयुष मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त निकाय है, ने आयुष क्षेत्र में नए स्टार्ट-अप को सहायता देने के लिए एक इनक्यूबेशन केंद्र यानी एआईआईए-आईसीएआईएनई (नवाचार और उद्यमिता का इनक्यूबेशन केंद्र) की स्थापना की है।

1.4.4 आयुष बाजार में तेजी से वृद्धि

वर्ष 2014 में आयुष विभाग का आयुष मंत्रालय में उन्नयन के बाद से आयुष उद्योग के बाजार आकार में काफी वृद्धि देखी गई है। आयुष विनिर्माण उद्योग 2014-15 में 21,697 करोड़ रुपये (2.85 बिलियन अमरीकी डालर) था और 2020 के आरआईएस के नवीनतम अध्ययन में, आयुष विनिर्माण उद्योग का आकार 1,37,800 करोड़ रुपये

(18.1 बिलियन अमरीकी डालर) होने का अनुमान लगाया गया है जो 7 वर्षों में 6 गुना वृद्धि है। इसी तरह, आरआईएस के प्रारंभिक अध्ययन से आयुष सेवा क्षेत्र में 1,66,797 करोड़ रुपये के राजस्व का पता चलता है।

1.4.5 बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) समिति

डीपीआईआईटी के सचिव की अध्यक्षता में इस वर्ष बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) समिति का गठन किया गया है। इससे आयुष दवाओं के शीघ्र पेटेंट को सुविधाजनक बनाने में मदद मिलेगी।

1.4.6 भारतीय मानक ब्यूरो में आयुष वर्टिकल

भारतीय मानक ब्यूरो ने बीआईएस में आयुष के लिए एक समर्पित वर्टिकल भी बनाया है। बीआईएस ने बहुत कम समय में आयुष से संबंधित 07 भारतीय मानकों को प्रकाशित किया है, और आगे 53 विकास और प्रकाशन की प्रक्रिया में हैं। बीआईएस आयुष के लिए आईएसओ में भी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रहा है और आयुष सूचना विज्ञान पर अंतर्राष्ट्रीय मानक तैयार करने के लिए आईएसओ/टीसी 215 - स्वास्थ्य सूचना विज्ञान के तहत आईएसओ में एक समर्पित कार्य समूह (डब्ल्यूजी 10 - पारंपरिक चिकित्सा) बनाया गया है। इससे 165 से अधिक देशों में आयुर्वेद उत्पादों और सेवाओं को अधिक स्वीकार्य बनाने तथा उनके विशाल निर्यात के दरवाजे खोलने में मदद मिलेगी।

1.4.7 आयुष आधारित मूल सिद्धांतों के माध्यम से उन्नत अनुसंधान एवं विकास

आयुष मंत्रालय के उत्कृष्टता केंद्र के तहत इंस्टीट्यूट ऑफ जीनोमिक्स एंड इंटीग्रेटिव बायोलॉजी (आईजीआईबी) सीएसआईआर में आयुर्वेद प्रकृति को जीनोम सीक्वेंस के साथ जोड़ा गया है, जो एक विशिष्ट निवारक और भविष्यसूचक चिकित्सा हेतु एक ऐतिहासिक अध्ययन है, वे आंतों के माइक्रोबायोटा पर आशाजनक परिणाम भी प्राप्त कर रहे हैं और

मेटाबोलॉमिक्स, प्रोटीओमिक्स आदि के उन्नत जीव-विज्ञान पर काम कर रहे हैं ताकि स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के भविष्य को आकार दिया जा सके।

1.4.8 अनुसंधान एवं विकास पहल और कोविड-19 प्रबंधन

आयुष पद्धतियों में 150 अनुसंधान अध्ययन किए गए और अनुसंधान एवं विकास परिणामों के आधार पर कोविड-19 के प्रबंधन के लिए एक आयुर्वेद और एक सिद्ध चिकित्सा को सफलतापूर्वक पुनर्निर्मित किया गया और पूरे देश में बड़े पैमाने पर जनता को प्रदान किया गया। प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में कुल 63 शोध प्रकाशनों को प्रकाशित किया गया है, 33 प्रीप्रिंट में उपलब्ध हैं और 40 प्रकाशनों के विभिन्न स्तरों में हैं। पबमेड इंटेक्सट जर्नल जेएमआईआरएक्स मेड (इंपैक्ट फैक्टर 4.67) में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, कोविड-19 के दौरान आयुष के प्रति जनता से भारी प्रतिक्रिया मिली है। 2021 में, आयुष मंत्रालय द्वारा कोविड-19 के दौरान आयुष एडवाइजरी और अन्य आयुष उपचारों और पद्धतियों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए एक मोबाइल एप्लिकेशन 'आयुष संजीवनी' आधारित प्रभाव मूल्यांकन अध्ययन किया गया। कुल 1.33 करोड़ डेटा दर्ज किए गए और 723,459 उत्तरदाताओं के डेटा का विश्लेषण किया गया, इससे पता चलता है कि 85.1% उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्होंने आयुष उपायों का प्रयोग किया और 89.8% उत्तरदाता इससे बात से सहमत थे कि उन्हें आयुष एडवाइजरी के अभ्यास से लाभ मिला।

1.4.9 कोविड प्रबंधन हेतु राष्ट्रीय नैदानिक प्रबंधन कार्यक्रम में शामिल आयुष औषधियां।

फ्रंट वर्कर्स को आयुष औषधियां दी गईं जिससे उनमें कोविड की घटनाएं कम करने में मदद मिली: फ्रंटियर्स इन पब्लिक हेल्थ (इंपैक्ट फैक्टर 5.99) में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, दिल्ली पुलिस समूह (17.5%), जिन्हें अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान

द्वारा आयु-रक्षा किट प्रदान की गई थी, में कोविड-19 आईजीजी पॉजिटिविटी का प्रतिशत, नियंत्रण समूह, सामान्य दिल्ली जनसंख्या (39.4%, पी = 0.003) की तुलना में काफी कम था, जो दर्शाता है कि दिल्ली पुलिस समूह में कोविड-19 संक्रमण का जोखिम कम (55.6%) रहा। इसके अलावा, जब महामारी अपने चरम पर थी उस दौरान दिल्ली पुलिस के अधिकारियों के बीच कोविड-19 के मामलों में कमी (5.05%) और मृत्यु दर में कमी (0.44%) देखी गई। लगभग 7 लाख आयुष चिकित्सकों और आयुष अस्पतालों ने कोविड प्रबंधन के लिए सेवाओं की पेशकश की।

1.4.10 स्वास्थ्य देखभाल और जन-स्वास्थ्य: राष्ट्रीय आयुष मिशन

की जा रही पहलों में से एक है, फ्लैगशिप स्कीम अर्थात राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) की केन्द्रीय प्रायोजित योजना का कार्यान्वयन, जिसके तहत बुनियादी ढांचे के विकास और आयुष स्वास्थ्य देखभाल सेवा की पहुंच में सुधार लाने के लिए राज्य/संघ राज्य क्षेत्र सरकारों को सहायता देना है। 2021-22 के दौरान एनएएम के दिशानिर्देशों को संशोधित किया गया है और राष्ट्रीय आयुष मिशन में निम्नलिखित 8 आयुष जन-स्वास्थ्य कार्यक्रम जोड़े गए हैं।

- क. ऑस्टियोआर्थराइटिस और अन्य मस्कुलोस्केलेटल विकारों की रोकथाम और प्रबंधन के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम
- ख. कैंसर, मधुमेह, हृदय रोग और स्ट्रोक की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीसीडीसीएस) के साथ आयुष का एकीकरण
- ग. सुप्रजा: आयुष मातृ एवं नवजात उपचार
- घ. वयोमित्र: आयुष वृद्धावस्था देखभाल सेवाएं
- ड. आयुर्विद्या: स्कूली बच्चों के लिए आयुष के माध्यम से स्वस्थ जीवन शैली
- च. आयुष मोबाइल मेडिकल यूनिट
- छ. कारुण्य: आयुष उपशामक सेवाएं

ज. लसीका फाइलेरिया (लिम्फेडेमा) के रूग्णता प्रबंधन और असक्तता रोकथाम
(एमएमडीपी) हेतु आयुष पर राष्ट्रीय कार्यक्रम

इसके अलावा, आयुष मंत्रालय, राष्ट्रीय आयुष मिशन के माध्यम से आयुष्मान भारत के तहत, 12,500 स्वास्थ्य सुविधाओं (10,000 आयुष औषधालयों और 2500 स्वास्थ्य उप-केंद्रों) को आयुष स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों में उन्नत करने की दिशा में काम कर रहा है।

1.4.11 रक्षा मंत्रालय के तहत आयुर्वेद ओपीडी का संचालन

मंत्रालय ने सशस्त्र बल चिकित्सा सेवा महानिदेशालय (डीजीएफएमएस) और रक्षा संपदा महानिदेशालय (डीजीडीई) के तहत स्वास्थ्य प्रतिष्ठानों के साथ आयुर्वेद को जोड़ने के लिए रक्षा मंत्रालय के साथ 2 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं, जिनके परिणामस्वरूप, 12 एफएमएस (सशस्त्र बल चिकित्सा सेवा) अस्पतालों और 37 छावनी बोर्ड अस्पतालों में आयुर्वेद ओपीडी की स्थापना हुई है। ये सुविधाएं जून, 2022 के पहले सप्ताह से सफलतापूर्वक चालू हो गई हैं। आयुष मंत्रालय दो वर्षों की अवधि के लिए 37 छावनी बोर्ड अस्पतालों/औषधालयों में से प्रत्येक में 01 डॉक्टर और 01 फार्मासिस्ट उपलब्ध करा रहा है।

1.4.12 आईएमपीसीएल का 2021-22 के दौरान प्रदर्शन

इंडियन मेडिसिन फार्मास्युटिकल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईएमपीसीएल) आयुष मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है। यह भारत सरकार और उत्तराखंड सरकार की एक संयुक्त उद्यम कंपनी है। आईएमपीसीएल को भारत सरकार द्वारा मिनी-रत्न श्रेणी II का दर्जा दिया गया है और इसे आईएसओ 9001:2015 प्रमाणन मिला है। आईएमपीसीएल को 18 आयुर्वेदिक उत्पादों के लिए डीसीजी (आई) द्वारा डब्ल्यूएचओ-जीएमपी/सीओपीपी प्रमाणन भी प्रदान किया गया है। इससे निर्यात

कारोबार में संभावनाएं तलाशने का मौका मिला है। कंपनी वर्तमान में विभिन्न रोग स्पेक्ट्रम के लिए 656 शास्त्रीय आयुर्वेदिक, 332 यूनानी और 71 मालिकाना आयुर्वेदिक दवाओं का विनिर्माण कर रही है।

कंपनी का कारोबार 2020-2021 से पहले कभी भी 100 करोड़ रुपये से अधिक नहीं हुआ है। कंपनी का वर्ष 2019-2020 में 97.04 करोड़ रुपये का कारोबार रहा जो वर्ष 2020-2021 में बढ़कर 164.02 करोड़ रुपये हो गया और 2021-22 में बढ़कर 260.84 करोड़ रुपये हो गया। इससे पहले लाभ वर्ष 2020-2021 में 15.69 करोड़ रुपये था जो वर्ष 2021-2022 में बढ़कर 45.41 करोड़ रुपये हो गया। आईएमपीसीएल ने वर्ष 2020-2021 के लिए कर पश्चात अपने शेयरधारकों को लाभ पर 15% के लाभांश की 1.66 करोड़ रुपये (पीएटी) की राशि का अपना पहला लाभांश दिया था। कंपनी ने वर्ष 2021-2022 के लिए कर पश्चात अपने शेयरधारकों को लाभ के 30% के लाभांश की 10.13 करोड़ रुपये की राशि का भुगतान किया।

1.4.13 योग का प्रचार

स्वास्थ्य एवं वैश्विक उपयोग हेतु सामान्य योग प्रोटोकॉल (सीवाईपी) प्रदर्शित करने के लिए आयुष मंत्रालय के सहयोग से डब्ल्यूएचओ ने डब्ल्यूएचओ एम-योगा ऐप लॉन्च किया ताकि 'बी हैल्दी, बी मोबाइल' पहल के तहत योग की सही क्रियाओं का उपयोग किया जा सके।

वाई ब्रे ऐप - सरकारी और कॉर्पोरेट क्षेत्र में कामकाजी पेशेवरों के लिए 01.09.2021 को कार्यस्थल पर पांच मिनट का योग ब्रेक शुरू किया गया जिससे वे तनावरहित हों, अपने आपको तरोताजा महसूस करें और काम पर फिर से ध्यान केंद्रित कर सकें।

1.4.14 आयुष पद्धतियों पर डब्ल्यूएचओ

आयुर्वेद, योग और यूनानी चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षण और उपचार के लिए बेंचमार्क प्रकाशित किया गया है।

1.4.15 अंतर्राष्ट्रीय रोग वर्गीकरण में आयुष

आयुष मंत्रालय ने आयुष मोरबिडली के साथ ही आईसीडी-11 के पारंपरिक चिकित्सा अध्याय के दूसरे मॉड्यूल में मानकीकृत कोड को शामिल करने के लिए को सहायता दी, अल्फा मसौदे पर सदस्य देशों के बीच रिकॉर्ड समय में आम सहमति बनाई गई है और बीटा ड्राफ्ट पर काम प्रगति पर है। इससे वैश्विक स्तर पर टीएम के प्रलेखन, रिकॉर्डिंग, अध्ययन और वाणिज्य को बढ़ावा देने तथा दुनिया के विभिन्न हिस्सों में आयुष को स्थापित करने का अवसर मिलेगा।

1.4.16 अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर विश्व स्तर पर भारी प्रतिक्रिया

इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2022 में कई नई पहल देखी गईं, 'गार्जियन रिंग' कार्यक्रम, जो योग की एकीकृत शक्ति को राष्ट्रीय सीमाओं से परे प्रदर्शित करने के लिए विदेशों में भारतीय मिशनों के साथ-साथ, 79 देशों और संयुक्त राष्ट्र संगठनों के बीच सहयोगात्मक अभ्यास है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2022 के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में लगभग 22.13 करोड़ लोगों की भारी भागीदारी देखी गई। विभिन्न हितधारकों के साथ आयुष मंत्रालय की पहल के माध्यम से यह विश्व में लगभग 125 करोड़ लोगों तक पहुंचा।

1.4.17 आयुष की आईएसओ में मजबूत उपस्थिति

आयुष सूचना विज्ञान पर अंतर्राष्ट्रीय मानक तैयार करने के लिए आईएसओ/टीसी 215-स्वास्थ्य सूचना विज्ञान के तहत आईएसओ में एक समर्पित कार्य समूह (डब्ल्यूजी 10 - पारंपरिक चिकित्सा) बनाया गया है।

1.4.18 प्रौद्योगिकी

आयुष मंत्रालय द्वारा विभिन्न आईटी पहल की गई हैं और भारत के नागरिकों के लिए प्रभावी और बेहतर देखभाल सेवा प्रदान करने के लिए तेजी लाई जा रही है। जब से आयुषमान भारत डिजिटल मिशन की स्थापना हुई है तब से ही आयुष इसमें शामिल रहा है। स्वास्थ्य सूचना प्रणाली, अनुसंधान डेटाबेस/पुस्तकालय, अकादमिक और सूचना शिक्षा एवं संचार (आईईसी) के तहत 22 प्रमुख डिजिटल पहल विकसित की गई हैं।

1.4.19 विभिन्न देशों में औपचारिक आयुष शिक्षा में जागरूकता और रुचि बढ़ी

वर्तमान में शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के लिए, 32 देशों के 277 छात्र आयुष फेलोशिप योजना के तहत विभिन्न संस्थानों में आयुष शिक्षा ले रहे हैं।

1.4.20 डब्ल्यूएचओ/आईटीयू-फोकस ग्रुप ऑन एआई इन हैल्थ में पारंपरिक चिकित्सा हेतु एआई टॉकिंग ग्रुप में भारत का नेतृत्व

डब्ल्यूएचओ/आईटीयू-फोकस ग्रुप ऑन एआई इन हैल्थ में फोकस ग्रुप ऑन आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस फॉर हैल्थ (एफजी-एआई4एच) के तहत पारंपरिक चिकित्सा हेतु एआई के लिए टॉकिंग ग्रुप (टीजी) का गठन किया गया है। आयुष मंत्रालय अन्य पारंपरिक चिकित्सा भागीदारों के साथ मिलकर इस काम का नेतृत्व करेगा।

1.4.21 आयुष में अनुसंधान का प्रभावी ढंग से प्रलेखन

आयुष में विभिन्न हितधारकों द्वारा व्यापक शोध कार्यों का विशाल भंडार एक समर्पित वेबसाइट: आयुष अनुसंधान पोर्टल पर ऑनलाइन बनाया गया है जिसमें 37639 शोध प्रकाशनों को सूचीबद्ध किया गया है। पोर्टल का आयुष मंत्रालय के तहत सीसीआरएएस द्वारा सक्रिय रूप से प्रबंधन किया जाता है और इसे खोज योग्य प्रारूप में बनाया गया है और इसमें सूचीबद्ध पत्रिकाओं में प्रकाशन शामिल हैं। यह जहां साक्ष्य आधारित आयुष पद्धतियों को प्रदर्शित करता है वहीं शोधकर्ताओं और शिक्षाविदों के लिए एक तैयार समाधान भी पेश करता है।

1.4.22 आयुष आधारित मूल सिद्धांतों के माध्यम से उन्नत अनुसंधान एवं विकास

आयुष मंत्रालय के उत्कृष्टता केंद्र के तहत इंस्टीट्यूट ऑफ जीनोमिक्स एंड इंटीग्रेटिव बायोलॉजी (आईजीआईबी) सीएसआईआर में आयुर्वेद प्रकृति को जीनोम सीक्वेंस के साथ जोड़ा गया है, जो एक विशिष्ट निवारक और भविष्यसूचक चिकित्सा हेतु एक ऐतिहासिक अध्ययन है, वे आंतों के माइक्रोबायोटा पर आशाजनक परिणाम भी प्राप्त कर रहे हैं और मेटाबोलॉमिक्स, प्रोटीओमिक्स आदि के उन्नत जीव-विज्ञान पर काम कर रहे हैं ताकि स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के भविष्य को आकार दिया जा सके।

1.4.23 नए शैक्षिक संस्थानों की स्थापना

मंत्रालय ने क्षमता निर्माण बढ़ाने के लिए अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) गोवा; राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान, नरेला, नई दिल्ली; राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश के अनुषंगी केंद्रों की स्थापना की है।

1.4.24 स्वास्थ्य देखभाल, अनुसंधान, शिक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी आदि से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में अंतर-मंत्रालयी और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग।

- i. आयुष मंत्रालय ने आयुष क्षेत्र के विकास के लिए रेल मंत्रालय; रक्षा मंत्रालय; सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय (एमएसएमई); विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी); जैव-प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी); जनजातीय कार्य मंत्रालय; अमेरिकन हर्बल फार्माकोपिया; भारतीय फार्माकोपिया आयोग के साथ समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं।
- ii. मंत्रालय ने बाहरी देशों के साथ पारंपरिक चिकित्सा और होम्योपैथी के क्षेत्र में सहयोग के लिए 24 अलग-अलग देशों के साथ समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं।
- iii. सहयोगी अनुसंधान/अकादमिक सहयोग शुरू करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ 40 समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए हैं।
- iv. विदेशों में आयुष अकादमिक पीठों की स्थापना के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ 15 समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए हैं।
- v. आयुष मंत्रालय ने 34 बाहरी देशों में 38 आयुष सूचना प्रकोष्ठों की स्थापना के लिए सहायता प्रदान की है।
- vi. आयुष मंत्रालय अपने अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप/छात्रवृत्ति कार्यक्रम के तहत भारत में मान्यता प्राप्त आयुष संस्थानों में आयुष पाठ्यक्रम शुरू करने के लिए विदेशी नागरिकों को छात्रवृत्ति प्रदान करता है।
- vii. आयुष मंत्रालय ने आयुष पद्धतियों और सिद्धांतों के माध्यम से बच्चों, गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं में पोषण संबंधी परिणामों में सुधार के लिए "कुपोषण मुक्त भारत के लिए आयुष आहार एडवाइजरी" के रूप में एक समग्र पोषण दिशानिर्देश जारी किया किया है। आयुष मंत्रालय ने अपने राष्ट्रीय संस्थानों/अनुसंधान परिषदों के माध्यम से महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा आयोजित पोषण माह और पोषण पखवाड़े में भाग लिया।
- viii. आयुष मंत्रालय ने आयुष उद्यमों को बढ़ावा देने के लिए सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई) मंत्रालय के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस

संबंध में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) द्वारा डिजिटल विज्ञापन, ई-मार्केटिंग, जीएसटी और जीईएम पर 10 जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए तथा आयुष उत्पादों की पैकेजिंग, विपणन और निर्यात संवर्धन पर 07 राष्ट्रीय संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

1.5 बजट अवलोकन

बजट अनुमान, संशोधित अनुमान और व्यय का विवरण नीचे तालिका में दिया गया है:

| योजनावार बजट अनुमान/संशोधित अनुमान 2022-23 और 31.12.2022 तक व्यय | | | | |
|--|--|--------------------------|------------------------------|---------------------------|
| (रुपए करोड़ में) | | | | |
| क्र.सं. | योजनाएं/कार्यक्रम | बजट अनुमान (बीई) 2022-23 | संशोधित अनुमान (आरई) 2022-23 | व्यय (पीएओ) (31-12-22 तक) |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| क | केंद्र की स्थापना का व्यय | 72.92 | 70.54 | 46.90 |
| 1 | सचिवालय | 44.71 | 44.37 | 29.90 |
| 2 | राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड | 13.82 | 12.65 | 9.36 |
| 3 | भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग (पीसीआईएम एंड एच) | 14.39 | 13.52 | 7.64 |
| ख | सांविधिक/स्वायत्त निकाय | 1870.10 | 1875.05 | 1346.17 |
| 1 | आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए) | 80.40 | 105.21 | 61.18 |
| 2 | भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग | 22.44 | 22.03 | 14.65 |

योजनावार बजट अनुमान/संशोधित अनुमान 2022-23 और 31.12.2022 तक व्यय

(रुपए करोड़ में)

| क्र.सं. | योजनाएं/कार्यक्रम | बजट अनुमान (बीई) 2022-23 | संशोधित अनुमान (आरई) 2022-23 | व्यय (पीएओ) (31-12-22 तक) |
|---------|---|-----------------------------------|---------------------------------------|------------------------------------|
| | (एनसीआईएसएम) | | | |
| 3 | राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग (एनसीएच) | 7.30 | 8.73 | 4.74 |
| 4 | केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद | 358.50 | 358.50 | 283.38 |
| 5 | केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद | 175.80 | 175.05 | 131.48 |
| 6 | केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद | 143.70 | 143.70 | 107.78 |
| 7 | अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए), नई दिल्ली | 227.10 | 231.10 | 175.33 |
| 8 | राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान, कोलकाता | 78.74 | 65.92 | 46.35 |
| 9 | राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर | 192.99 | 184.29 | 157.87 |
| 10 | राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ | 18.82 | 19.82 | 14.11 |
| 11 | राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान, चेन्नई | 53.57 | 59.01 | 40.18 |
| 12 | राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान, बैंगलोर | 96.59 | 99.59 | 72.44 |
| 13 | मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान | 124.00 | 124.50 | 68.00 |
| 14 | राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान, पुणे | 40.63 | 65.63 | 24.27 |
| 15 | पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान, शिलांग | 63.50 | 40.75 | 35.53 |
| 16 | केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद | 85.24 | 87.62 | 42.62 |

योजनावार बजट अनुमान/संशोधित अनुमान 2022-23 और 31.12.2022 तक व्यय

(रुपए करोड़ में)

| क्र.सं. | योजनाएं/कार्यक्रम | बजट अनुमान (बीई) 2022-23 | संशोधित अनुमान (आरई) 2022-23 | व्यय (पीएओ) (31-12-22 तक) |
|----------|---|-----------------------------------|---------------------------------------|------------------------------------|
| 17 | राष्ट्रीय सोवा रिग्पा संस्थान | 22.14 | 20.44 | 15.86 |
| 18 | राष्ट्रीय औषधीय पादप संस्थान | 0.15 | 0.00 | 0.00 |
| 19 | इंस्टीट्यूट फॉर हाई ऑल्टीट्यूड मेडिसिनल प्लांट्स, भदरवाह, जम्मू और कश्मीर | 4.00 | 0.00 | 0.00 |
| 20 | केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद | 46.67 | 46.88 | 35.00 |
| 21 | पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं लोक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, पासीघाट | 27.82 | 16.28 | 15.44 |
| ग | केंद्रीय क्षेत्र योजनाएं | 306.98 | 250.16 | 102.63 |
| 1 | सूचना, शिक्षा और संचार | 43.88 | 55.40 | 30.71 |
| 2 | अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना | 86.10 | 94.60 | 27.84 |
| 3 | चैंपियन सेक्टर योजना | 60.22 | 10.06 | 0.21 |
| 4 | आयुर्वेद-जीव विज्ञान एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान कार्यक्रम | 0.50 | 0.00 | 0.00 |
| 5 | प्रधानमंत्री वृक्ष आयुष योजना | 1.00 | 0.00 | 0.00 |
| 6 | औषधीय पादपों के संरक्षण, विकास और सतत प्रबंधन की केन्द्रीय क्षेत्र योजना | 48.49 | 48.25 | 30.82 |
| 7 | आयुष औषधि गुणवत्ता एवं उत्पादन संवर्धन योजना (एओजीयूएसवाई) | 23.50 | 20.00 | 4.32 |

योजनावार बजट अनुमान/संशोधित अनुमान 2022-23 और 31.12.2022 तक व्यय

(रुपए करोड़ में)

| क्र.सं. | योजनाएं/कार्यक्रम | बजट अनुमान (बीई) 2022-23 | संशोधित अनुमान (आरई) 2022-23 | व्यय (पीएओ) (31-12-22 तक) |
|---------|-----------------------------------|-----------------------------------|---------------------------------------|------------------------------------|
| 8 | आयुस्वास्थ्य योजना | 27.79 | 11.00 | 2.98 |
| 9 | आयुर्जान | 15.50 | 10.85 | 5.75 |
| | कुल: सीएस | 2250.00 | 2195.75 | 1495.70 |
| घ | केंद्रीय प्रायोजित योजनाएं | | | |
| 1 | राष्ट्रीय आयुष मिशन | 800.00 | 650.00 | 193.10 |
| | कुल : सीएसएस | 800.00 | 650.00 | 193.10 |
| | सकल योग: | 3050.00 | 2845.75 | 1688.79 |

अध्याय 2

आयुष पद्धतियां

2.1 आयुष चिकित्सा पद्धतियों का परिचय

आयुष चिकित्सा पद्धतियों में भारतीय चिकित्सा पद्धतियां और होम्योपैथी शामिल हैं। आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा रिग्पा और होम्योपैथी का संक्षिप्त नाम आयुष है। आयुर्वेद का अपना 5000 से अधिक वर्षों की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति के अभ्यास का दस्तावेजी इतिहास है, जबकि होम्योपैथी भारत में लगभग 100 वर्षों से अभ्यास में है। इन पद्धतियों का देश में लोगों की अलग-अलग प्राथमिकताओं और अवसरचरणात्मक सुविधाओं के अनुसार अभ्यास किया जा रहा है। आयुर्वेद केरल, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तराखंड, गोवा और ओडिशा राज्यों में ज्यादा प्रचलित है। यूनानी चिकित्सा पद्धति मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, जम्मू और कश्मीर, बिहार, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली और राजस्थान में प्रचलित है। होम्योपैथी उत्तर प्रदेश, केरल, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब, तमिलनाडु, बिहार, गुजरात और पूर्वोत्तर राज्यों में व्यापक रूप से प्रचलित है। सिद्ध चिकित्सा पद्धति दक्षिणी राज्यों तमिलनाडु, पांडिचेरी और केरल में सबसे लोकप्रिय है। सोवा रिग्पा चिकित्सा पद्धति जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम सहित हिमालयी क्षेत्रों में प्रचलित है। इसके अलावा, उत्तर प्रदेश और कर्नाटक में सोवा रिग्पा के कुछ शैक्षणिक संस्थान भी हैं।

2.2 आयुर्वेद

आयुर्वेद, जीवन का विज्ञान है जो स्वास्थ्य देखभाल की प्राचीन और व्यापक चिकित्सा पद्धतियों में से एक है। अच्छे स्वास्थ्य और लंबे जीवन की तलाश शायद मानव अस्तित्व जितनी पुरानी है। भारतीय दर्शन के अनुसार, मनुष्य के भौतिक, सामाजिक और

आध्यात्मिक उत्थान को आगे बढ़ाने के लिए स्वास्थ्य पहली शर्त है। यह माना जाता है कि ब्रह्मांड के रचियता भगवान ब्रह्मा आयुर्वेद के पहले प्रचारक भी थे। 5000 और 1000 ईसा पूर्व के बीच रचित सबसे पुराने भारतीय साहित्य के रूप में माने जाने वाले चार वेदों में पौधों द्वारा उपचार और प्राकृतिक प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी है। रामायण और महाभारत जैसे भारतीय महाकाव्यों में भी चिकित्सा एवं शल्य चिकित्सा का उल्लेख मिलता है। तथापि, संहिता (संग्रह) की अवधि से यानी लगभग 1000 ईसा पूर्व से आयुर्वेद पूरी तरह से विकसित चिकित्सा पद्धति के रूप में स्थापित हुई थी। इस अवधि के दौरान चरक संहिता और सुश्रुत संहिता जैसे संकलन आठ विशिष्टताओं के साथ व्यवस्थित तरीके से लिखे गए थे। इन ग्रंथों में, आयुर्वेद के मूल सिद्धांतों और चिकित्सीय तकनीकों को बहुत व्यवस्थित तरीके से और स्पष्ट रूप से बताया गया। इन ग्रंथों ने स्वास्थ्य बनाए रखने के महत्व पर जोर दिया और औषध-चिकित्साशास्त्र को भी इसमें शामिल किया। इन संग्रहों में पौधों, पशु उत्पादों और खनिजों के चिकित्सीय गुणों का विस्तार से वर्णन किया गया, जिसके परिणामस्वरूप आयुर्वेद स्वास्थ्य देखभाल की एक व्यापक चिकित्सा पद्धति के रूप में सामने आया है।

आयुर्वेद की दो विचार-धाराएं थीं: *पुनर्वसु आत्रेय*- काय-चिकित्सक विचार-धारा और *दिवोदास धन्वंतरी* - शल्य-चिकित्सक विचार-धारा। *पुनर्वसु आत्रेय* का औषधियों के रूप में और *दिवोदास धन्वंतरी* का शल्य-चिकित्सा के रूप में उल्लेख किया गया है। प्रत्येक विचार-धारा से जुड़े शिष्यों ने अपनी विचार-धारा की परंपराओं के विकास में बहुत योगदान दिया। माना जाता है कि *आत्रेय* के छह शिष्यों ने अपने गुरु की शिक्षाओं के आधार पर अपने स्वयं के संकलन की रचना की है, लेकिन केवल दो अर्थात् *भेल संहिता* अपने मूल रूप में और *चरक* तथा *द्विधबाला* द्वारा संपादित *अग्निवेस* तंत्र ही आज उपलब्ध हैं। आयुर्वेद पर आज उपलब्ध जिसे सबसे प्राचीन और आधिकारिक लेख माना जाता है, *चरक संहिता* उस तर्क और दर्शन की व्याख्या करती है जिस पर यह चिकित्सा पद्धति आधारित है। *धन्वंतरी* के छह शिष्य थे और *सुश्रुत संहिता*, जो मुख्य रूप से शल्य चिकित्सा पर केंद्रित एक ग्रंथ है, को *धन्वंतरी* की शिक्षाओं के आधार पर *सुश्रुत* द्वारा संहिताबद्ध किया गया था।

6-7 शताब्दी ईस्वी के दौरान *वृद्ध वाग्भट* और *वाग्भट* द्वारा लिखित *अष्टांग संग्रह* और *अस्तांग हृदय* ग्रंथों में *चरक संहिता* और *सुश्रुत संहिता* के आवश्यक विवरणों को संकलित और आगे अद्यतन किया गया था। इस प्रकार, मुख्य तीन ग्रंथों यथा, *चरक संहिता*, *सुश्रुत संहिता* और *अष्टांग संग्रह* जिन्हें बृहत्रयी कहा जाता है के आधार पर बाद के विद्वानों ने ग्रंथों की रचना की जिनमें से तीन लघु ग्रंथों यथा, *माधव निदान*, *सरंगधारा संहिता* और *भाव प्रकाश*, को लघुत्रयी कहा जाता है जिनकी अपनी-अपनी विशेषताएं हैं। कुछ अन्य प्रख्यात चिकित्सकों और दूरदृष्टाओं जैसे *कष्यप*, *भेला* और *हारीत* ने भी अपने-अपने संबंधित संग्रह लिखे।

आयुर्वेदिक ग्रंथों के विश्लेषण से पता चलता है कि आयुर्वेद के विभिन्न पहलुओं को समय-समय पर ग्रंथों या संहिताओं के रूप में विकसित और प्रलेखित किया गया था। उदाहरण के लिए, आंतरिक चिकित्सा का एक प्रामाणिक स्रोत चरक संहिता जीवन के दर्शन और विभिन्न रोगों के उपचार की पद्धति पर जोर देती है। सुश्रुत संहिता ने सर्जरी और आंख, कान, गले, नाक, सिर और दंत चिकित्सा संबंधी रोगों के लिए एक पूर्ण व्यवस्थित दृष्टिकोण को शामिल किया। *माधवकारा* द्वारा लिखित *माधव निदान*, रोगों के निदान से संबंधित कृति है। *भाव मिश्र* द्वारा लिखित *भाव प्रकाश* औषधीय पौधों और आहार पर अतिरिक्त जोर देता है। भेषजों और आयुर्वेद पर केंद्रित *सरंगधारा संहिता* में और अधिक योगों और नुस्खों को जोड़कर इसे समृद्ध किया गया। इसके बाद, समय-समय पर कई लेखकों द्वारा आयुर्वेद के ग्रंथों पर टीकाएं लिखी गईं, उनमें नई चीजें जोड़ी गईं, और उनकी विधिवत रूप से रचना की गई। विद्वानों द्वारा ग्रंथों की टीकाओं पर एक नज़र डालने से संकेत मिलता है कि जहां आयुर्वेद का सैद्धांतिक ढांचा वैसा ही रहा, वहीं दवाओं और चिकित्सा की तकनीकों के बारे में ज्ञान का विस्तार हुआ। टीकाकारों द्वारा अपनी टीकाओं में समकालीन ज्ञान के आलोक में पुरानी अवधारणाओं और विवरणों की समीक्षा की गई और उन्हें अद्यतन किया गया और इस प्रकार आयुर्वेद को अनुप्रयुक्त रूप में पुनर्जीवित किया गया। आयुर्वेद का वर्तमान स्वरूप निरंतर वैज्ञानिक इनपुट का परिणाम है जिसने इसके सिद्धांतों, प्रतिपादों और पद्धतियों के विकास को आगे बढ़ाया है।

बौद्ध काल के दौरान गौतम बुद्ध का इलाज करने वाले एक प्रसिद्ध सर्जन जीवक ने तक्षशिला विश्वविद्यालय में आयुर्वेद का अध्ययन किया था। लगभग 200 ईसा पूर्व, दुनिया के विभिन्न हिस्सों से मेडिकल छात्र आयुर्वेद सीखने के लिए प्राचीन तक्षशिला विश्वविद्यालय आते थे। आयुर्वेद की सभी विशेषताओं को विकसित किया गया था, और पूर्ण शल्य चिकित्सा का अभ्यास किया गया था। 200 से 700 ईस्वी तक, नालंदा विश्वविद्यालय ने मुख्य रूप से जापान, चीन आदि से विदेशी मेडिकल छात्रों को भी आकर्षित किया। साक्ष्य बताते हैं कि आयुर्वेद ने दुनिया की कई चिकित्सा पद्धतियों को पोषित किया था। मिस्र के लोगों ने भारत के साथ अपने समुद्री व्यापार के माध्यम से 400 ईसा पूर्व में सिकंदर के आक्रमण से बहुत पहले आयुर्वेद के बारे में सीखा था। यूनानियों और रोमनों को उनके आक्रमण के बाद इसके बारे में पता चला। पहली सहस्राब्दी के शुरुआती भाग में आयुर्वेद बौद्ध धर्म के माध्यम से पूर्व में फैल गया और तिब्बती और चीनी चिकित्सा पद्धतियों और जड़ी-बूटियों को बहुत प्रभावित किया।

लगभग 800 ईस्वी में, नागार्जुन ने पारा और अन्य धातुओं के औषधीय अनुप्रयोगों पर व्यापक अध्ययन किया। इन अध्ययनों ने आयुर्वेद की एक नई शाखा अर्थात् *रस शास्त्र* के उद्भव में योगदान दिया है। पौधों और पशु सामग्रियों का उपयोग करके धातु सामग्री के साथ योगों को शुद्ध करने, विषाक्त रहित करने और संसाधित करने के लिए यथार्थ प्रक्रियाएं विकसित की गईं। इस अवधि के दौरान *रसरत्नसमुच्चय*, *रसरनवा*, *रस हृदय तंत्र* नामक शास्त्रीय ग्रंथ लिखे गए जिनमें खनिज और धात्विक औषधियों के निर्माण और उनके चिकित्सीय उपयोग का विस्तृत वर्णन किया गया। आयुर्वेद ने बाद के समय में पारे के साथ-साथ अन्य धातुओं को औषधीय योगों के महत्वपूर्ण घटकों के रूप में इस्तेमाल किया। आयुर्वेदिक साहित्य में नए उपयोगों के लिए कई विदेशी और स्वदेशी दवाएं पाई जाती हैं। 16वीं शताब्दी के बाद, आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के आधार पर नई बीमारियों के निदान और उपचार शामिल किए गए हैं।

1827 में, भारत में पहला आयुर्वेद पाठ्यक्रम गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज, कलकत्ता में शुरू किया गया था। 20वीं शताब्दी की शुरुआत तक, प्रांतीय शासकों के संरक्षण में भारत में कई आयुर्वेद कॉलेज स्थापित किए गए थे। आयुर्वेद को 1970 से ठोस आधार मिला जब आयुर्वेद के महत्व को फिर से उत्तरोत्तर मान्यता मिली। 20वीं शताब्दी के दौरान बहुत सारे अकादमिक कार्य किए गए और कई किताबें लिखी गईं तथा सेमिनार और संगोष्ठियां आयोजित की गईं।

वर्तमान में आयुर्वेद में भारत में स्नातक-पूर्व, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट की भलीभांति विनियमित शिक्षा है। चिकित्सकों और निर्माताओं का सराहनीय नेटवर्क मौजूद है। निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास से लोगों तक पहुंच बनाने में उल्लेखनीय रूप से सुधार हुआ है।

अष्टांग आयुर्वेद (आयुर्वेद की आठ शाखाएं):- आयुर्वेद को आठ प्रमुख नैदानिक विशिष्टताओं में विभाजित किया गया था।

- **कायाचिकित्सा (आंतरिक चिकित्सा)-** यह शाखा आयुर्वेद की अन्य शाखाओं द्वारा इलाज नहीं किए गए वयस्कों की सामान्य बीमारियों से संबंधित है।
- **सल्य तंत्र (सर्जरी)-** यह शाखा विभिन्न सर्जिकल उपकरणों और युक्तियों का उपयोग करके विभिन्न सर्जिकल ऑपरेशनों से संबंधित है। सर्जिकल रोगों के चिकित्सा उपचार का भी उल्लेख किया गया है।
- **सालक्य (सुप्रा-क्लेविकुलर मूल का रोग)-** यह शाखा दंत चिकित्सा, कान, नाक, गले, मुख विवर, सिर के रोगों और विशेष तकनीकों का उपयोग करके उनके उपचार से संबंधित है।
- **कौमार भृत्य (बाल रोग, प्रसूति एवं स्त्री रोग)-** यह शाखा गर्भावस्था से पहले, उसके दौरान और बाद में बच्चे की देखभाल के साथ-साथ महिला की देखभाल से संबंधित है। इसमें महिलाओं और बच्चों की विभिन्न बीमारियों और उनके प्रबंधन को भी विस्तार से बताया गया है।

- **भूतविद्या (मनोरोग)**- यह मानसिक रोगों और उनके उपचार का अध्ययन है। उपचार विधियों में दवाएं, आहार नियमन, मनो-व्यवहार चिकित्सा और आध्यात्मिक चिकित्सा शामिल हैं।
- **अगद तंत्र (विष विज्ञान)**- यह शाखा सब्जियों, खनिजों और पशु मूल से विषाक्त पदार्थों के उपचार के साथ-साथ उनके एंटीडोट्स के विकास से संबंधित है। संक्रामक रोगों और महामारियों को समझने में वायु, जल, वास और मौसम के प्रदूषण पर विशेष ध्यान दिया गया है।
- **रसायन तंत्र (कायाकल्प और जरा चिकित्सा)** - आयुर्वेद की यह अनोखी शाखा रोगों की रोकथाम और दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन को बढ़ावा देने से संबंधित है।
- **वाजीकरण (प्रजनन क्षमता और स्वस्थ संतान का विज्ञान)** - यह शाखा स्वस्थ एवं आदर्श संतान की उत्पत्ति के लिए यौन शक्ति और दक्षता बढ़ाने के साधनों से संबंधित है।

आयुर्वेद की क्षमताएं:

स्वास्थ्य की व्यापक परिभाषा:- आयुर्वेद स्वास्थ्य को *दोष* (शरीर की नियामक और क्रियात्मक इकाईयां), *धातु* (अवसंरचनात्मक इकाईयां), *मल* (उत्सर्जन इकाईयां) और *अग्नि* (पाचन और चयापचय कारक) के बीच संतुलन की स्थिति के साथ-साथ संवेदी और प्रेरक अंगों तथा मन की स्वस्थ स्थिति एवं आत्मा के साथ उनके सामंजस्यपूर्ण संबंध के रूप में परिभाषित करता है। स्वास्थ्य की परिभाषा के विपरीत, रोगग्रस्त अवस्था को आयुर्वेद में शरीर के आवश्यक घटकों के बीच असंतुलन की स्थिति के रूप में परिभाषित किया गया है। रोग प्रबंधन का उद्देश्य इस संतुलन को वापस लाना है, मुख्य रूप से उपचारात्मक उपचारों के बजाय जीवन शैली प्रबंधन के माध्यम से। आयुर्वेद की ताकत रोग की रोकथाम, स्वास्थ्य को बढ़ावा देना और रोग का इलाज करना, इन तीन समग्र दृष्टिकोणों में निहित है। इसे

शरीर, मन और आत्मा की देख-रेख से प्राप्त किया जाता है जिसमें स्वास्थ्य के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक पहलुओं को ध्यान में रखा जाता है।

लोगों द्वारा स्वीकार्यता:- भारत में लगभग 80-90% आबादी अपनी प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आयुर्वेद और चिकित्सा की अन्य पारंपरिक पद्धतियों का उपयोग करती है। इस पद्धति की सुरक्षा का श्रेय इसके जांचे-परखे प्रयोग को जाता है जिसे वैज्ञानिक साक्ष्य द्वारा प्रमाणित किया गया है। इसके अलावा, अलग-अलग आवश्यकता के आधार पर उपचार की तैयारी के साथ सामग्रियों के तालमेल से आयुर्वेदिक योगों की प्रभावकारिता और सुरक्षा सुनिश्चित होती है। विषाक्तता दूर करने की प्रक्रिया के साथ विषाक्त औषधीय पौधों के उपयोग के लिए विशिष्ट दिशानिर्देश निर्धारित किए गए हैं जो अंतिम उत्पादों की जैव-उपलब्धता और प्रभावकारिता को भी बढ़ाते हैं।

स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और बीमारियों की रोकथाम पर जोर:- व्यक्ति के स्वास्थ्य को वातावरण, शरीर, मन और आत्मा के सक्रिय एकीकरण के रूप में मानते हुए, आयुर्वेद स्वास्थ्य के संरक्षण और संवर्धन तथा रोगों की घटना को रोकने पर बहुत जोर देता है। आयुर्वेद के उपचार के तौर-तरीके, प्राकृतिक संतुलन को फिर से जीवंत करने, पुनर्जीवित करने और बहाल करने की जीवंत शरीर की अंतर्निहित क्षमता पर आधारित हैं। रोगी का इलाज करते समय, आयुर्वेदिक उपचार शरीर में प्राकृतिक उपचार प्रक्रिया को बढ़ाने में मदद करता है।

प्रकृति (मनःकायिक संरचना) के अनुसार, *दिनचर्या* (दैनिक आहार), *रितुचर्या* (मौसमी आहार) और *सद्वृत्त* (नैतिक आचार-व्यवहार) के समुचित अभ्यास से रोग की रोकथाम और स्वास्थ्य को बढ़ावा दिया जाता है। इस तरह, स्वास्थ्य की देखभाल के लिए स्वस्थ जीवन शैली के महत्व पर आयुर्वेद द्वारा जोर दिया गया है। समग्र स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत और सामाजिक व्यवहार से संबंधित क्या करें और क्या न करें का इसमें विस्तार से बताया गया है। *निदान परिवर्जन* में उन कारकों से दूर रहने पर बहुत जोर दिया जाता है जो

बीमारियां पैदा या बढ़ाते हैं, जबकि पंचकर्म जैसी चिकित्सीय प्रक्रियाएं बीमारी को खत्म करने में मदद करती हैं।

खान-पान और जीवनशैली का महत्व:- इस चिकित्सा विज्ञान का अंतिम उद्देश्य स्वास्थ्य की रक्षा है, और इसे दो तरीकों से प्राप्त किया जा सकता है, अर्थात्, बीमारियों की रोकथाम के लिए जीवन शैली संबंधी सलाहों को मानना और जिन बीमारियों से पहले से ही पीड़ित हों उनका उन्मूलन करना। रोगों की रोकथाम के लिए पौष्टिक आहार, पर्यावरण संरक्षण, अनुकूल सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण का होना आवश्यक शर्तें हैं। स्वास्थ्य के रखरखाव के लिए आहार एक आवश्यक कारक है। आयुर्वेद आहार विज्ञान और पोषण के विविध पहलुओं जैसे गुणवत्ता, मात्रा, प्रसंस्करण विधियों, खाद्य पदार्थों के संयोजन के औचित्य, भावनात्मक पहलुओं, उपभोक्ता की प्रकृति, भौगोलिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों आदि पर जोर देता है। उचित आहार और जीवन शैली की सलाह, जो व्यक्ति के अनुकूल हो, शरीर के सामान्य कार्यों को बनाए रखती है और इस प्रकार बीमारियों की रोकथाम में काम आती है।

स्वास्थ्य की समग्र अवधारणा:- आयुर्वेद एक जीवंत प्राणी को शरीर, मन और आत्मा का संयोजन मानता है। स्वास्थ्य प्रबंधन के सभी दृष्टिकोण इन इकाइयों के बीच तालमेल और समस्थापन बनाए रखने से अभिप्रेत हैं।

व्यक्तिगत दृष्टिकोण:- आयुर्वेद का मानना है कि हरेक की अलग-अलग मनःकायिक संरचना और स्वास्थ्य की स्थिति होती है। निवारक, प्रोत्साहक और उपचारात्मक उपायों की सलाह देते समय इन पर विचार किया जाता है।

सार्वभौमिक दृष्टिकोण:- आयुर्वेद के अनुसार, व्यक्ति (सूक्ष्म जगत) ब्रह्मांड (मैक्रोकॉस्म) की एक लघु प्रतिकृति है। ब्रह्मांड के हर पहलू व्यक्ति में प्रदर्शित होता है। पर्यावरण में कोई भी बदलाव इंसान को प्रभावित करता है। इसलिए, सामाजिक और पर्यावरणीय कारकों पर जोर दिया जाता है क्योंकि वे स्वास्थ्य के साथ जुड़े होते हैं।

जन-स्वास्थ्य और स्वस्थ संतानोत्पत्ति पर जोर:- व्यक्ति अपने मन, वचन और कर्म से जो कार्य करता है वे पर्यावरण पर अपना अच्छा या बुरा प्रभाव डालती हैं। आयुर्वेद एक स्वस्थ और खुशहाल वातावरण बनाने के लिए स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन, उदार वाणी और आध्यात्मिक आचरण पर जोर देता है। आयुर्वेद में उल्लिखित सुजननविज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका बलिष्ठ, स्वस्थ और आदर्श संतानोत्पत्ति है।

प्राकृतिक उत्पादों का उपयोग:- आयुर्वेदिक उत्पाद मुख्य रूप से पौधों और अन्य प्राकृतिक संसाधनों से प्राप्त होते हैं। आयुर्वेदिक औषधियों के पुनर्मान्यकरण से उत्साहवर्धक संकेत सामने आ रहे हैं। कुछ पादपों के सक्रिय सिद्धांतों की पहचान से कई एलोपैथिक दवाओं की खोज हुई है। एलोवेरा, करकुम लौंग, विथानिया सोमनिफेरा, बकोपा मोनियेरी आदि जैसे आयुर्वेदिक पौधों के कुछ औषधीय रूप से सिद्ध घटकों का विश्व स्तर पर उपयोग किया जाता है।

नैदानिक क्षमता के क्षेत्र:- आयुर्वेद, ग्रामीण भारत की भौतिक और वित्तीय पहुंच के भीतर स्वास्थ्य सेवा प्रदान करता है। कुछ आयुर्वेदिक औषधीय पौधों और मसालों का भारत में कई तरह की सामान्य बीमारियों के लिए घरेलू उपचार के रूप में व्यापक स्तर पर उपयोग किया जाता है। आयुर्वेद का उपयोग करने वाले वे आम लोग होते हैं जो पुरानी असाध्य बीमारियों से पीड़ित होते हैं। आयुर्वेदिक उपचार, साइनसाइटिस, मधुमेह मेलेटस, उच्च रक्तचाप, मोटापा जैसे पुराने विकारों; मनोदैहिक विकार जैसे अवसाद, अनिद्रा; पाचन संबंधी विकार जैसे इर्रिटेबल बाउल सिंड्रोम (आईबीएस), पेट्टिक अल्सर, प्रदाह आंत्र रोग; श्वसन संबंधी विकार जैसे ब्रोन्कियल अस्थमा और क्रोनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज; मस्कुलो-स्केलेटन संबंधी विकार जैसे गठिया, ऑस्टियोपोरोसिस; न्यूरोलॉजिकल और न्यूरो-डीजेनेरेटिव विकार जैसे लकवाग्रस्त स्थिति, साइटिका, मनोभ्रंश, पार्किंसंस रोग आदि में प्रभावी है।

अद्वितीय चिकित्सीय दृष्टिकोण:- आयुर्वेद स्वस्थता बनाए रखने के साथ-साथ पुरानी बीमारियों के प्रबंधन में कुछ जैव-शोधन और कायाकल्प चिकित्सीय उपायों जैसे कि *पंचकर्म*,

रसायन की सलाह देता है। क्षारसूत्र, जिसमें औषधि-युक्त धागे का उपयोग करके न्यूनतम पैरा-सर्जिकल प्रक्रिया अपनाई जाती है, की सुरक्षा और प्रभावकारिता का प्राचीन चिकित्सा साहित्य में व्यापक रूप से उल्लेख है, और जिसका एनो-रेक्टल विकारों के लिए आशाजनक चिकित्सा के रूप में सफलतापूर्वक अभ्यास किया जा रहा है। आयुर्वेद की ऐसी अनूठी विशेषताओं, जो या तो एकल उपचार के रूप में हैं या सहायक उपचारों के रूप में हैं, ने यह साबित किया है कि वे रोग प्रबंधन और जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के पारंपरिक चिकित्सा दृष्टिकोण से आगे हैं।

आगामी पथ:- आयुर्वेद, पुरानी और दुर्दम्य बीमारियों के प्रबंधन में योगदान कर सकता है और वैश्विक स्तर पर कैंसर, रूमेटोइड आर्थराइटिस और संबद्ध बीमारियों के बोझ को कम करने में मदद कर सकता है।

2.3 योग

"योग" शब्द संस्कृत शब्द "युज्" से आया है जिसका अर्थ है "एकजुट या एकीकृत करना"। योग व्यक्ति की अपनी चेतना और सार्वलौकिक चेतना के मिलन के बारे में है। यह मुख्य रूप से एक जीवन-शैली है, जिसे पहली बार महर्षि पतंजलि ने व्यवस्थित रूप *योगसूत्र* में प्रतिपादित किया था। योग शास्त्र के आठ अंग हैं, अर्थात् संयम (*यम*), अति संयम बरतना (*नियम*), शारीरिक आसन (*आसन*), श्वास नियंत्रण (*प्राणायाम*), इंद्रियों पर संयम (*प्रत्याहार*), चिंतन (*धारणा*), ध्यान (*ध्यान*) और गहन ध्यान (*समाधि*)। योग के अभ्यास में इन चरणों में सामाजिक और व्यक्तिगत व्यवहार को बढ़ाने और शरीर में ऑक्सीजन युक्त रक्त के बेहतर संचरण से शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने की क्षमता है, जो इंद्रियों को नियंत्रित करता है और मन और आत्मा को शांति देता है। योग का अभ्यास कुछ मनोदैहिक रोगों की रोकथाम में भी उपयोगी पाया गया है और व्यक्ति की प्रतिरोधकता और तनावपूर्ण स्थितियों को सहन करने की क्षमता में सुधार करता है। योग स्वास्थ्य की स्थिति में समग्र वृद्धि के लिए एक प्रोत्साहक, निवारक, पुनर्वास और उपचारात्मक उपचार है। स्वास्थ्य में सुधार, बीमारियों की रोकथाम और उनके इलाज के लिए

योग साहित्य में कई आसनों का वर्णन किया गया है। शारीरिक मुद्राओं को सही ढंग से चुनना और सही तरीके से उनका अभ्यास करना आवश्यक है ताकि बीमारी की रोकथाम, स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और चिकित्सीय उपयोग के लाभ उनसे प्राप्त हो सकें।

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 11 दिसंबर, 2014 को 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित किया था। हर साल भारत के प्रधान मंत्री, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उत्सव में राष्ट्र का नेतृत्व करते हैं।

2.4 प्राकृतिक चिकित्सा

प्राकृतिक चिकित्सा, नैसर्गिक उपचार के सिद्धांत के आधार पर कई संस्कृतियों और काल से चले आ रहे उपचार से संबंधित ज्ञान में निहित है। प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धांत और अभ्यास लोगों की जीवन शैली से जुड़े हैं जिसमें प्रकृति के करीब रहने पर जोर दिया जाता है।

प्राकृतिक चिकित्सा एक किफायती गैर-औषधीय उपचार है जिसमें स्वास्थ्य देखभाल और स्वस्थ जीवन के लिए प्राकृतिक सामग्री का उपयोग किया जाता है। यह जीवन शक्ति के सिद्धांतों पर आधारित है, शरीर की स्वयं-उपचार करने की क्षमता को बढ़ाने और स्वस्थ जीवन जीने के सिद्धांतों पर आधारित है। प्राकृतिक चिकित्सा, प्राकृतिक उपचार की एक पद्धति है और एक जीवन शैली भी है जो व्यापक रूप से प्रचलित है, विश्व स्तर पर स्वीकार किया जाता है और बीमारियों से स्वास्थ्य रक्षण और प्रबंधन के लिए मान्यता प्राप्त है। प्राकृतिक चिकित्सा शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक धरातल पर प्रकृति के रचनात्मक सिद्धांतों के साथ सद्भाव से रहने की सलाह देती है। इसमें प्रोत्साहक, निवारक, उपचारात्मक और साथ ही पुनर्स्थापनात्मक की बड़ी क्षमताएं हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा, प्रकृति के पांच तत्वों - पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश की मदद से स्वास्थ्य को पुनः प्राप्त करने के लिए शरीर की अंतर्निहित शक्ति को उत्तेजित करके उपचार को बढ़ावा देती है। यह "प्रकृति की ओर लौटने" और स्वयं, समाज और पर्यावरण के साथ सद्भाव में रहने के सरल तरीके को अपनाने का आह्वान करती है। प्राकृतिक चिकित्सा, 'प्राकृतिक चिकित्सा

विज्ञान, उपवास, आहार, योग और शारीरिक संस्कृति के उपयोग के साथ बेहतर स्वास्थ्य' की सलाह देती है। यह पुरानी, एलर्जी, ऑटोइम्यून, अपक्षयी और तनाव से संबंधित विकारों में प्रभावी बताई गई है। प्राकृतिक चिकित्सा का सिद्धांत और अभ्यास एक समग्र दृष्टिकोण पर आधारित है जिसमें सरल भोजन और रहने की आदतों तथा शुद्धता उपायों को अपनाने, जल-चिकित्सा का उपयोग, कोल्ड पैक, मिट्टी के पैक, स्नान, मालिश, उपवास आदि पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

2.5 यूनानी

यूनानी चिकित्सा पद्धति पहले ग्रीस में आई थी और अरबों द्वारा बुकरात (हिप्पोक्रेट्स) और जलिनोस (गैलेन) की शिक्षाओं के आधार पर एक विस्तृत चिकित्सा विज्ञान के रूप में विकसित की गई थी। उस समय से यूनानी चिकित्सा को ग्रीको-अरब चिकित्सा के रूप में जाना जाता है। हिप्पोक्रेटिक मेडिसिन के तीन मूल सिद्धांत अवलोकन, अनुभव और तर्कसंगत सिद्धांत थे, जो अभी भी चिकित्सा और विज्ञान के क्षेत्र में मान्य हैं। यह पद्धति हिप्पोक्रेटिक सिद्धांत पर आधारित है जिसके तहत चार देहद्रव अर्थात् रक्त, कफ, पीला पित्त व काला पित्त, तथा जीवंत मानव शरीर की अवस्थाओं के चार गुण अर्थात् और गर्म, ठंडा, नम और शुष्क का उल्लेख है। उन्हें पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु के रूप में दर्शाया गया है, ग्रीक विचारों को अरब चिकित्सक द्वारा सात सिद्धांतों (*उमूर-ए-तब्बिया*) के रूप में रखा गया था और इसमें तत्व (*अरकान*), स्वभाव (*मिजाज*), देहद्रव (*अखलात*), अंग (*आज़ा*), रूह (*अरवाह*), शक्तियां (*कुवा*) और कार्य (*अफाल*) शामिल थे। इस पद्धति में यह माना जाता है कि, ये सिद्धांत शरीर के गठन और इसके स्वास्थ्य के साथ-साथ रोगग्रस्त स्थितियों के लिए जिम्मेदार हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने यूनानी चिकित्सा पद्धति (यूएसएम) को मानव आबादी की स्वास्थ्य देखभाल आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक वैकल्पिक पद्धति के रूप में मान्यता दी है। वैकल्पिक चिकित्सा का अभ्यास दुनिया भर में किया जा रहा है। यूनानी सबसे प्रसिद्ध पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में से एक है और चीन, मिस्र, भारत, इराक, फारस और सीरिया की चिकित्सा की प्राचीन पारंपरिक पद्धतियों पर आधारित है। इसे अरब चिकित्सा भी कहा जाता है।

यूनानी अभी भी कई अरब और पूर्वी एशियाई देशों में लोकप्रिय है। वास्तव में, यूनानी चिकित्सा और हर्बल उत्पादों का धीरे-धीरे कई देशों में अधिक उपयोग किया जा रहा है जहां आधुनिक चिकित्सा आसानी से उपलब्ध है। भारत ने इसे एक वैकल्पिक स्वास्थ्य देखभाल पद्धति के रूप में स्वीकार किया है और इसे आधिकारिक दर्जा दिया है। पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियां देश और क्षेत्र के हिसाब से अलग-अलग होती हैं, क्योंकि संस्कृति, इतिहास, व्यक्तिगत दृष्टिकोण और दर्शन जैसे कारकों का इन पर प्रभाव होता है। कई मामलों में, पारंपरिक चिकित्सा का सिद्धांत और अनुप्रयोग पारंपरिक चिकित्सा से काफी अलग है। उपचारों के आधार पर, पारंपरिक चिकित्सा को दवा और गैर-दवा के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। पारंपरिक दवा में हर्बल दवाओं, जानवरों के हिस्सों और खनिजों का उपयोग किया जाता है। गैर-दवा में विभिन्न तकनीकें शामिल हैं, मुख्य रूप से दवा के उपयोग के बिना। उनमें शामिल हैं, उदाहरण के लिए, एक्यूपंकचर और संबंधित तकनीकें, काइरोप्रेक्टिस, अस्थि-चिकित्सा, मैनुअल थेरेपी, क्विगॉंग, योग, और अन्य शारीरिक, मानसिक, रेजिमेंटल, आध्यात्मिक और मन-शरीर उपचार।

यूनानी चिकित्सा, मनुष्य की स्वास्थ्य दशा पर परिवेश और पारिस्थितिकी स्थितियों के प्रभाव को पहचानती है। रोग की स्थिति के इलाज के अलावा, यूनानी चिकित्सा रोग की रोकथाम और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने पर बहुत जोर देती है। यूनानी चिकित्सा, एक पूरी तरह से स्वस्थ व्यक्ति में उसके स्वभाव के लिए उपयुक्त जीवन शैली, आहार और वातावरण निर्धारित करती है, जबकि बीमारी की चपेट में आए हुए लोगों के लिए स्वास्थ्य बनाए रखने और बीमारी रोकने हेतु विशेष आहार, नॉन-ड्रग मैनिपुलेशंस या आहार-नियम और यहां तक कि दवाओं को निर्धारित करती है।

यूनानी चिकित्सा का आधुनिक रूप जो आज हम देखते हैं, विकास की एक लंबी अवधि का परिणाम है जो विभिन्न देशों, क्षेत्रों और समुदायों के बीच ज्ञान के आदान-प्रदान के माध्यम से हुआ है। यह पद्धति अभी भी समकालीन वैज्ञानिक ज्ञान और नवीनतम प्रौद्योगिकियों को शामिल करके अपने आयामों और दायरे को बढ़ा रही है। वैज्ञानिक समुदाय और आम जनता के बीच हमारी पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के आंतरिक मूल्य के बारे में जागरूकता बढ़ रही है, और

परिणामस्वरूप यूनानी चिकित्सा पद्धति ने पारंपरिक चिकित्सा को बढ़ावा देने के लिए मुख्यधारा में प्रवेश किया है।

2.6 सिद्ध

सिद्ध चिकित्सा पद्धति, भारत में प्राचीन व्यापक चिकित्सा पद्धतियों में से एक है। सिद्धों द्वारा अत्यधिक व्यवस्थित प्रौद्योगिकी के साथ बताई गई हीलिंग डाइमेंशन का नाम 'सिद्ध चिकित्सा' है। माना जाता है कि सिद्ध पद्धति का विकास 10000 - 4000 ईसा पूर्व का है। सिद्ध पद्धति, समग्र दृष्टिकोण के साथ निवारक, प्रोत्साहक, उपचारात्मक, कायाकल्प और पुनर्वास स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करती है।

'सिद्ध' शब्द मूल शब्द 'सिद्धी' से लिया गया है, जिसका अर्थ है जीवन कलाओं जैसे दर्शन, योग, ज्ञान, कीमिया, चिकित्सा और इनसे ऊपर दीर्घायु कला में पूर्णता, स्वर्गीय आनंद और संस्कारिता प्राप्त करना। सिद्ध पद्धति में अनिवार्य रूप से दार्शनिक अवधारणाएं शामिल हैं जिनमें चार मुख्य अंग हैं: 1. औषध-रसायन, 2. चिकित्सा अभ्यास, 3. योगिक अभ्यास और 4. ज्ञान। सिद्ध पद्धति का नाम 'सिद्धर' नामक संस्थापकों के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने अपनी योगिक जागरूकता और प्रयोगात्मक निष्कर्षों से प्रकृति की वास्तविकता और मनुष्य के साथ इसके संबंधों का पता लगाया और समझाया। सिद्धर अगस्थियार को सिद्ध चिकित्सा का जनक कहा जाता है।

सिद्ध नैदानिक पद्धति, चिकित्सक द्वारा नैदानिक परीक्षा पर आधारित है और ये नैदानिक टूल्स बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे रोगों के निदान और पूर्वानुमान में सहायता करते हैं। सिद्ध चिकित्सक अपने निदान को तीन देहद्रवों (मुक्कुत्त्रम) और आठ महत्वपूर्ण परीक्षाओं (एन्वागई थेरवु) पर आधारित करते हैं। सिद्ध पद्धति में उपचार का उद्देश्य तीन महत्वपूर्ण जीवन कारकों को संतुलन में रखना और सात शरीर थायूस के रखरखाव में है। विशेष उपचार /बाहरी चिकित्सा तकनीक जैसे कि प्रेशर मैनिपुलेशन थेरेपी (वरम), फिजिकल मैनिपुलेशन थेरेपी (थोककानम), बोन सेटिंग (ओटिव् मुरिव् मारुथुवम), सिद्धर योगम सिद्ध पद्धति की ताकत हैं।

2.7 सोवा-रिग्पा

"सोवा-रिग्पा" जिसे आमतौर पर *आमची* की दवा के रूप में जाना जाता है, हिमालयी क्षेत्रों के कई हिस्सों की पारंपरिक दवा है। बोधि भाषा में सोवा-रिग्पा का अर्थ है उपचार का विज्ञान। यह 2500 वर्षों से पहले भारत में भगवान बुद्ध से उत्पन्न हुआ है और कई एशियाई देशों में सार्वजनिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, दार्जिलिंग के हिमालयी क्षेत्रों और भारत की तिब्बती बस्तियों में सोवा-रिग्पा पारंपरिक चिकित्सा है। सोवा-रिग्पा के महत्व और विशेष रूप से हिमालयी क्षेत्रों में सार्वजनिक स्वास्थ्य में इसकी सक्रिय भूमिका को ध्यान में रखते हुए, भारत सरकार ने सितंबर 2010 में भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद अधिनियम 1970 में संशोधन करके सोवा-रिग्पा चिकित्सा पद्धति को मान्यता दी है।

भारत से उत्पन्न होने के कारण, सोवा-रिग्पा में बड़ी संख्या में चिकित्सा ग्रंथ हैं जिनका भारत से अनुवाद किया गया है और इसके बाद तिब्बती विद्वानों द्वारा लिखित एक विशाल साहित्य है। नेशनल रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर सोवा-रिग्पा, लेह द्वारा किए गए प्रारंभिक अध्ययन के अनुसार; नागार्जुन, वाग्भट, चंद्रानंद, भा-लिपा आदि प्रसिद्ध भारतीय विद्वानों द्वारा लिखित बौद्ध कैन्नन *स्टेन-ग्यूर* में 22 अलग-अलग आयुर्वेदिक कृतियां हैं। ये आयुर्वेद के कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य हैं जो तब भारत में लोकप्रिय थे। इनमें से अधिकांश ग्रंथों का अनुवाद 8वीं - 17वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान भारतीय और तिब्बती विद्वानों दोनों द्वारा किया गया था। माना जाता है कि मौलिक पाठ *ग्युद-बीजी* जैसे नॉन-कैनोनिकल कार्य का स्रोत संस्कृत में भी था और माना जाता है कि भगवान बुद्ध द्वारा लिखित है। नॉन-कैनोनिकल कार्यों की श्रेणी में, विभिन्न भारतीय और तिब्बती विद्वानों द्वारा लिखित औषधीय पाठ की एक लंबी सूची है; इनमें से कई ग्रंथ जीसंग-बीहम संग्रह और टर्मा खंड के रूप में उपलब्ध हैं। यह संख्या दो हजार के पार चली जाती है। इनमें से अधिकांश ग्रंथ मठों, पुस्तकालयों, आमची (सोवा-रिग्पा चिकित्सकों) में पाए जा सकते हैं।

भारतीय चिकित्सा पद्धति महान वंश की है। यह भारतीय चिकित्सा विचारों की परिणति है जो एक लंबे और अद्वितीय सांस्कृतिक इतिहास के साथ मूल्यवान स्वस्थ जीवन शैली को दर्शाती है और इस वैदिक मार्गदर्शन कि 'महान विचार हर तरफ से हमारे पास आएँ का प्रतीक है; इसीलिए, ज्ञान के विभिन्न स्रोतों के संपर्क से आने वाले सर्वोत्तम प्रभावों का इसमें समामेलन देखा जा सकता है।

2.8 होम्योपैथी

हिप्पोक्रेट्स (लगभग 400 ईसा पूर्व) के समय के चिकित्सकों ने देखा है कि कुछ पदार्थ बीमारी से पीड़ित लोगों की तरह ही स्वस्थ लोगों में भी बीमारी के लक्षण पैदा कर सकते हैं। क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनीमैन, एक जर्मन चिकित्सक ने वैज्ञानिक रूप से इस घटना की जांच की और होम्योपैथी के मौलिक सिद्धांतों को संहिताबद्ध किया। होम्योपैथी को 1810 ईस्वी के आसपास यूरोपीय मिशनरियों द्वारा भारत में लाया गया था और 1948 में संविधान सभा और फिर संसद द्वारा पारित एक प्रस्ताव द्वारा इसे आधिकारिक मान्यता प्राप्त की गई थी।

होम्योपैथी के पहले सिद्धांत '*सिमिलिया सिमिलिबस क्योरन्तूर*' में कहा गया है कि एक दवा जो स्वस्थ मनुष्यों में लक्षण पैदा कर सकती है, वही बीमारी से पीड़ित मनुष्यों में लक्षणों को ठीक करने में सक्षम हो सकती है। 'सिंगल मेडिसिन' का दूसरा सिद्धांत कहता है कि उपचार के दौरान किसी विशेष रोगी को एक समय में एक दवा दी जानी चाहिए। 'मिनिमम डोज' के तीसरे सिद्धांत में कहा गया है कि किसी दवा की न्यूनतम खुराक जो बिना किसी प्रतिकूल प्रभाव के उपचारात्मक कार्रवाई को प्रेरित करेगी, दी जानी चाहिए। होम्योपैथी इस सिद्धांत पर आधारित है कि किसी बीमारी का कारण मुख्य रूप से बैक्टीरिया, वायरस आदि जैसे बाहरी एजेंटों की प्रतिक्रिया के अलावा, बीमारी की घटनाओं के लिए किसी व्यक्ति की संवेदनशीलता या प्रवृत्ति पर निर्भर करता है।

होम्योपैथी दवाएं देकर बीमारियों का इलाज करने की एक विधि है जो प्रयोगात्मक रूप से स्वस्थ मनुष्यों पर समान लक्षण पैदा करने की शक्ति साबित हुई है। होम्योपैथी उपचार, जो एक समग्र

उपचार है, एक विशेष माहौल में व्यक्ति की प्रतिक्रिया पर केंद्रित है। होम्योपैथिक दवाएं मुख्य रूप से प्राकृतिक पदार्थों से तैयार की जाती हैं, जैसे कि पौधों के उत्पाद, खनिज और पशु स्रोतों, नोसोड, सरकोड आदि से। होम्योपैथिक दवाओं का कोई विषैला, जहरीला या दुष्प्रभाव नहीं होता है। होम्योपैथिक उपचार किफायती भी है और इसकी बहुत व्यापक सार्वजनिक स्वीकृति भी है।

होम्योपैथी के पास चिकित्सीय ताकत के अपने क्षेत्र हैं, और यह एलर्जी, ऑटोइम्यून विकारों और वायरल संक्रमण के उपचार में विशेष रूप से उपयोगी है। कई सर्जिकल, स्त्री रोग संबंधी और प्रसूति संबंधी और बाल चिकित्सा रोगों और आंख, नाक, कान, दांत, त्वचा, यौन अंगों आदि को प्रभावित करने वाली बीमारियों में होम्योपैथिक उपचार उपयोगी है। व्यवहार संबंधी विकार, न्यूरोलॉजिकल समस्याएं और मेटाबोलिक रोगों का भी होम्योपैथी द्वारा सफलतापूर्वक इलाज किया जा सकता है। उपचारात्मक पहलुओं के अलावा, होम्योपैथिक दवाओं का उपयोग निवारक और प्रोत्साहक स्वास्थ्य देखभाल में भी किया जाता है। हाल के दिनों में, पशु चिकित्सा देखभाल, कृषि, दांत चिकित्सा आदि में होम्योपैथिक दवाओं के उपयोग में रुचि का उदय हुआ है। होम्योपैथिक चिकित्सा शिक्षा स्नातकोत्तर शिक्षण में सात विशिष्टताओं में विकसित हुई है, जो मटेरिया मेडिका, ऑर्गेन ऑफ मेडिसिन, रिपोर्टरी, प्रैक्टिस ऑफ मेडिसिन, पीडियाट्रिक, फार्मैसी और मनोचिकित्सा हैं।

अध्याय 3

केंद्रीय आयुष पद्धतियों का संगठनात्मक ढांचा

3.1 आयुष मंत्रालय के तहत केंद्रीय आयुष संगठनों की स्थापना

आयुष मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में 05 अनुसंधान परिषदें, 02 सांविधिक निकाय, 12 राष्ट्रीय संस्थान, एक अधीनस्थ कार्यालय और एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है। पांच अनुसंधान परिषदें स्वायत्त संगठन हैं जिनके पास चिकित्सा की आयुष पद्धतियों के अपने संबंधित क्षेत्रों में अनुसंधान का अधिदेश है। 02 सांविधिक निकाय अर्थात् भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग (एनसीआईएसएम) और राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग (एनसीएच) आयुष शिक्षा के क्षेत्र में एक विनियामक आयोग के रूप में कार्य कर रहे हैं। 12 राष्ट्रीय संस्थान अत्याधुनिक केंद्रीय स्तर के संगठन हैं जो चिकित्सा की आयुष पद्धतियों में स्नातक-पूर्व और स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा प्रदान करते हैं। भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग (पीसीआईएम एंड एच), आयुष मंत्रालय के तहत एक अधीनस्थ कार्यालय है। यह संगठन फार्माकोपिया और फार्मूलरी के विकास के साथ-साथ भारतीय चिकित्सा पद्धतियों और होम्योपैथी के लिए केंद्रीय औषधि परीक्षण-सह-अपीलीय प्रयोगशाला के रूप में कार्य कर रहा है। इंडियन मेडिसिन्स फार्मास्युटिकल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईएमपीसीएल) आयुष मंत्रालय के तहत एक केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है।

आयुष मंत्रालय के तहत संगठनों की सूची

अनुसंधान परिषदें (5)

1. केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएस)
2. केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरवाईएन)
3. केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरयूएम)
4. केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद (सीसीआरएस)
5. केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (सीसीआरएच)

नियामक आयोग (सांविधिक निकाय) (2)

1. भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग (एनसीआईएसएम)
2. राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग (एनसीएच)

अधीनस्थ कार्यालय (1)

1. भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग (पीसीआईएम एंड एच)

राष्ट्रीय संस्थान (12)

1. राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए), जयपुर (राजस्थान)
2. आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, (आई.टी.आर.ए.), जामनगर (गुजरात)
3. अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए), गौतम पुरी, सरिता विहार नई दिल्ली
4. पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं लोक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (एनईआईएफएमआर) पासीघाट, अरुणाचल प्रदेश
5. पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान (एनईआईएएच), शिलांग, मेघालय
6. राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ (आरएवी), नई दिल्ली
7. मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (एमडीएनआईवाई), नई दिल्ली
8. राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान (एनआईएन), पुणे (महाराष्ट्र)
9. राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान (एनआईयूएम), बेंगलोर (कर्नाटक)
10. राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान (एनआईएस), चेन्नई (तमिलनाडु)
11. राष्ट्रीय सोवा रिग्पा संस्थान (एनआईएसआर), लेह, लद्दाख
12. राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान (एनआईएच), कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम (सीपीएसयू)

1. इंडियन मेडिसिन फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड (आईएमपीसीएल)

3.2 अनुसंधान परिषदों का परिचय

3.2.1 केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस)

केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के तहत एक स्वायत्त निकाय है, जो आयुर्वेदीय विज्ञान में वैज्ञानिक तर्ज पर अनुसंधान करने, उसका समन्वय करने, उसे तैयार करने, विकसित करने और बढ़ावा देने के लिए भारत में एक शीर्ष निकाय है। ये गतिविधियां पूरे भारत में स्थित इसके 30 संस्थानों/केंद्रों के माध्यम से और विभिन्न विश्वविद्यालयों, अस्पतालों और संस्थानों के साथ सहयोगात्मक अध्ययन के माध्यम से की जाती हैं। सीसीआरएएस का एक दृष्टिकोण है "आधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ प्राचीन ज्ञान को एकीकृत करके आयुर्वेदिक सिद्धांतों, दवा उपचारों में वैज्ञानिक साक्ष्य विकसित करना, निदान, निवारक, प्रोत्साहक और उपचार विधियों से संबंधित वैज्ञानिक नवाचारों के माध्यम से आयुर्वेद को लोगों तक पहुंचाना और गुणवत्ता वाले प्राकृतिक संसाधनों की निरंतर उपलब्धता के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान शुरू करना, उन्हें उत्पादों और प्रक्रियाओं में परिणत करना और संबंधित संगठनों के साथ तालमेल बिठाना तथा इन नवाचारों को जन-स्वास्थ्य प्रणालियों से जोड़ना है।"

3.2.2 केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरवाईएन)

केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरवाईएन) योग और प्राकृतिक चिकित्सा में अनुसंधान और विकास के लिए शीर्ष निकाय है, जिसे 1978 में एक स्वायत्त संस्थान के रूप में सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत स्थापित किया गया था। अनुसंधान और विकास के अलावा, परिषद सक्रिय रूप से योग और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों के प्रचार, प्रचार, शिक्षा, प्रशिक्षण और प्रकाशन में लगी हुई है।

3.2.3 केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरयूएम)

केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरयूएम), यूनानी चिकित्सा पद्धति में वैज्ञानिक तर्ज पर अनुसंधान करने, समन्वय करने, उसे तैयार करने, विकसित करने और बढ़ावा देने के लिए एक शीर्ष निकाय है। परिषद की मुख्य गतिविधियों में नैदानिक अनुसंधान, औषधि मानकीकरण

अनुसंधान और गुणवत्ता नियंत्रण, फार्माकोलॉजी अनुसंधान, साहित्यिक अनुसंधान, मौलिक अनुसंधान, औषधीय पौधों का सर्वेक्षण और खेती और अनुसंधान उन्मुख जन-स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रम (आउटरीच गतिविधियां) शामिल हैं। इसके अलावा, बाह्य रोगी विभाग (ओपीडी) और अन्तरंग-रोगी विभागों (आईपीडी) के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाएं और जरावस्था देखभाल के लिए विशेष क्लीनिक चलाए जा रहे हैं। ये गतिविधियां पूरे भारत में स्थित इसके 22 संस्थानों/केंद्रों/इकाइयों के माध्यम से और विभिन्न विश्वविद्यालयों, अस्पतालों और संस्थानों के साथ सहयोगी मोड के माध्यम से भी की जाती हैं।

3.2.4 केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद (सीसीआरएस)

केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद (सीसीआरएस) वैज्ञानिक तर्ज पर सिद्ध में अनुसंधान शुरू करने, तैयार करने, विकसित करने, समन्वय करने और बढ़ावा देने के लिए भारत में एक शीर्ष निकाय है। सितंबर 2010 में केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद (सीसीआरएस) का गठन पूर्ववर्ती केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद (सीसीआरएस) के विभाजन से किया गया था। अब सीसीआरएस वर्तमान में तांबरम सैनितोरियम, चेन्नई - 47 स्थित मुख्यालय कार्यालय में कार्य कर रहा है। सीसीआरएस, एक मान्यता प्राप्त वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान संगठन (एसआईआरओ) निकाय है जो आधुनिक उपकरणों और सुविधाओं के साथ अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे से सुसज्जित है। सीसीआरएस की गतिविधियां इसके 8 परिधीय संस्थानों/इकाइयों के माध्यम से चलाई जाती हैं।

3.2.5 केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (सीसीआरएच)

केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद, जो आयुष मंत्रालय के तहत एक शीर्ष स्वायत्त अनुसंधान संगठन है, अपनी स्थापना के बाद से पूरे भारत में फैले अपने केंद्रों के माध्यम से होम्योपैथी के क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान शुरू करने, उसके समन्वय, विकास और प्रसार-प्रचार के कार्यों में लगी है। परिषद के प्रशासनिक और तकनीकी विंग संगठन के पूरे ढांचे का प्रबंधन करते हैं। प्रशासनिक विंग, संगठनात्मक ढांचे, कोर समितियों की देखरेख करता है जो विभिन्न क्षेत्रों में परिषद की अनुसंधान

गतिविधियों को विनियमित करती हैं। परिषद, 25 संस्थानों/इकाइयों, 2 विस्तार केन्द्रों और 7 ओपीडी के नेटवर्क के माध्यम से अनुसंधान गतिविधियां चला रही है। ये संस्थान और इकाइयां होम्योपैथी के विभिन्न पहलुओं जैसे (i) नैदानिक अनुसंधान, (ii) औषध सिद्ध अनुसंधान, (iii) नैदानिक सत्यापन अनुसंधान, (iv) औषध मानकीकरण और (v) औषधीय पादपों का सर्वेक्षण, संग्रहण और खेती में अनुसंधान में लगी हुई हैं।

3.3 नियामक आयोगों का परिचय

3.3.1 भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग (एनसीआईएसएम) और

3.3.2 राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग (एनसीएच)

पारदर्शिता सुनिश्चित करने और देश भर के एएसयूएसआर एंड एच कॉलेजों की गुणवत्ता और कामकाज में सुधार करने के लिए, भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग अधिनियम, 2020 और राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग अधिनियम, 2020 को अधिसूचित किया गया और उन्हें 21 सितंबर 2020 को भारत के आधिकारिक राजपत्र में प्रकाशित किया गया।

11.06.2021 को भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद अधिनियम, 1970 को निरस्त कर दिया गया और भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद को भंग कर दिया गया। उसी दिन भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग और उनके स्वायत्त बोर्डों का गठन किया गया।

05.07.2021 को होम्योपैथी केंद्रीय परिषद अधिनियम, 1973 को निरस्त कर दिया गया और केंद्रीय होम्योपैथी परिषद को भंग कर दिया गया। उसी दिन राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग (एनसीएच) और उनके स्वायत्त बोर्डों का गठन किया गया।

ये दोनों आयोग एनसीआईएसएम और एनसीएच अधिनियम, 2020 के तहत गठित वैधानिक निकाय हैं। ये अधिनियम एक ऐसी चिकित्सा शिक्षा प्रणाली सुनिश्चित करने के लिए अधिनियमित किए गए थे जो गुणवत्तापूर्ण और सस्ती चिकित्सा शिक्षा तक पहुंच में सुधार करे, देश के सभी हिस्सों में

भारतीय चिकित्सा पद्धतियों और होम्योपैथी के पर्याप्त और उच्च गुणवत्ता वाले चिकित्सा पेशेवरों की उपलब्धता सुनिश्चित करे। ये अधिनियम न्यायसंगत और सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा को बढ़ावा देने में मदद करते हैं जो सामुदायिक स्वास्थ्य परिप्रेक्ष्य को प्रोत्साहित करता है और चिकित्सा पेशेवरों की सेवाओं को सभी नागरिकों के लिए सुलभ और सस्ती बनाता है; जो राष्ट्रीय स्वास्थ्य लक्ष्यों को बढ़ावा देता है; जो चिकित्सा पेशेवरों को अपने काम में नवीनतम चिकित्सा अनुसंधान को अपनाने और अनुसंधान में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित करता है; जिसमें चिकित्सा संस्थानों का उद्देश्य समय-समय पर और पारदर्शी मूल्यांकन है और भारत के लिए भारतीय चिकित्सा पद्धति के एक चिकित्सा रजिस्टर के रखरखाव की सुविधा प्रदान करता है तथा चिकित्सा सेवाओं के सभी पहलुओं में उच्च नैतिक मानकों को लागू करता है; जिसमें बदलती जरूरतों के अनुकूल लचीलापन है और जिसमें इससे जुड़े या आकस्मिक मामलों के लिए एक प्रभावी शिकायत निवारण तंत्र है।

3.4 अधीनस्थ कार्यालय

3.4.1 भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग (पीसीआईएम एंड एच)

भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग (पीसीआईएम एंड एच), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के तहत एक अधीनस्थ कार्यालय है। फार्माकोपिया और फार्मूलरी का विकास और साथ ही भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी पद्धतियों के लिए केंद्रीय औषधि परीक्षण-सह-अपीलीय प्रयोगशाला के रूप में कार्य करना, पीसीआईएम एंड एच की गतिविधि के प्रमुख क्षेत्र हैं। आयोग को प्रारंभ में आयुष मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त निकाय के रूप में 18 अगस्त, 2010 को भारतीय चिकित्सा भेषजसंहिता आयोग (पीसीआईएम) के रूप में स्थापित किया गया था और 31 अगस्त, 2010 को सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत पंजीकृत किया गया था। केंद्रीय मंत्रिमंडल के दिनांक 3 जून, 2020 के निर्णय के अनुसार, पूर्व पीसीआईएम एंड एच, जिसे एक स्वायत्त निकाय के रूप में 2010 में स्थापित किया गया था और सोसाइटी अधिनियम 1860 के तहत पंजीकृत किया गया था, और दो अधीनस्थ केंद्रीय प्रयोगशालाओं नामतः फार्माकोपियल लेबोरेटरी फॉर इंडियन मेडिसिन (पीएलआईएम) और होम्योपैथिक फार्माकोपियल प्रयोगशाला (एचपीएल) (6 जुलाई, 2020 के राजपत्र

द्वारा अधिसूचित) का विलय करके, भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग (पीसीआईएम एंड एच) को आयुष मंत्रालय के तहत एक अधीनस्थ कार्यालय के रूप में स्थापित किया गया है।

3.5 राष्ट्रीय संस्थान

3.5.1 राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए), जयपुर

राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान की स्थापना 07 फरवरी 1976 को एक स्वायत्त निकाय और पंजीकृत सोसायटी के रूप में की गई थी। एनआईए पूर्ण रूप से आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित और नियंत्रित है और यह आयुर्वेदिक शिक्षा, प्रशिक्षण, अनुसंधान और उपचार के क्षेत्र में मंत्रालय के तहत एक प्रमुख संस्थान है। माननीय केंद्रीय आयुष मंत्री की अध्यक्षता वाली सोसाइटी और कुलपति की अध्यक्षता में प्रबंधन बोर्ड शीर्ष निकाय हैं। निदेशक और कुलपति की अध्यक्षता में एक वित्त समिति है। शैक्षिक, अनुसंधान, रोगी देखभाल, प्रशासनिक आदि के लिए कई समितियां भी मौजूद हैं, जैसे वैज्ञानिक सलाहकार समिति, संस्थागत नैतिकता समिति, अनुसंधान समीक्षा बोर्ड आदि। मंत्रालय द्वारा वार्षिक बजट आवंटन 193 करोड़ रुपये (बजट अनुमान 2022-23) से अधिक है। एनआईए डी-नोवो श्रेणी के तहत एक मानित विश्वविद्यालय और एक एनएएसी 'ए' ग्रेड मान्यता प्राप्त संस्थान है। यह संस्थान एसोसिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज और एसोसिएशन ऑफ कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटीज का सदस्य है। इसने इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ यूनिवर्सिटीज में सदस्यता के लिए भी आवेदन किया है।

संस्थान डिप्लोमा (30 सीटें), स्नातक (125 सीटें), स्नातकोत्तर (14 विशिष्टताओं में 130 सीटें) और पोस्ट-डॉक्टरेट (14 विशिष्टताओं में 28 सीटें) पाठ्यक्रम के अलावा, एक वर्षीय पंचकर्म तकनीशियन पाठ्यक्रम (30 सीटें) और विभिन्न विषयों पर एक दर्जन से अधिक अल्पकालिक पाठ्यक्रम प्रदान करता है। इसने नए 06 विभागों (अंतर-विषयक) में 6 नए स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (M.Sc) भी शुरू किए हैं। पाठ्यक्रमों में प्रवेश, अकादमिक और परीक्षा संबंधी सभी मामले अब संस्थान द्वारा स्वयं निपटाए जाते हैं। सभी शिक्षण विभागों में आधुनिक शिक्षण सुविधाएं, वातानुकूलित क्लास रूम,

विभाग, संग्रहालय, प्रयोगशालाएं आदि उपलब्ध हैं। एससी, एसटी, ओबीसी के लिए सीटों के आरक्षण के अलावा, यूजी, पीजी और पीएचडी पाठ्यक्रमों में बाहरी देशों के लिए भी सीटें आरक्षित हैं। वर्तमान में, रूस, निकारागुआ, तंजानिया, ईरान, सूरीनाम, थाईलैंड, मलेशिया, भूटान, श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश और अफगानिस्तान के लगभग 50 विदेशी नागरिक इन कार्यक्रमों में अध्ययन कर रहे हैं। वर्तमान में संस्थान में विभिन्न पाठ्यक्रमों में 1000 से अधिक छात्र और स्कालर्स अध्ययन कर रहे हैं।

संस्थान से संबद्ध 280 बिस्तरों वाला अस्पताल एनएबीएच मान्यता प्राप्त अस्पताल है। अस्पताल ओपीडी सेवाएं, रोगी जांच सेवाएं (पीपीपी मॉडल पर प्रयोगशाला), कॉटेज वार्ड, डीलक्स वार्ड, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की आबादी के लिए विशेष चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करता है (जिसके लिए मुफ्त चिकित्सा शिविर आयोजित करने, दवाएं आदि वितरित करने के लिए पृथक से धनराशि उपलब्ध है)। बेड ऑक्यूपेंसी 80% से अधिक है और ओपीडी में प्रति वर्ष 03 लाख से अधिक लोग आते हैं। वेंटिलेटर, ऑक्सीजन आपूर्ति आदि के साथ एक कोविड सेंटर भी अस्पताल में स्थापित किया गया है। संस्थान की अपनी जीएमपी प्रमाणित फार्मसी है जहां रोगियों को मुफ्त वितरण और अनुसंधान से संबंधित जरूरतों के लिए 300 से अधिक दवाओं का विनिर्माण किया जाता है। ओपीडी और आईपीडी रोगियों को दी जाने वाली लगभग सभी दवाएं फार्मसी में ही विनिर्मित दवाएं होती हैं। संस्थान को एनएबीएल, अस्पताल रसोई के लिए एफएसएसएआई, अस्पताल प्रयोगशाला के लिए आईएसओ आदि जैसे प्रत्यायन प्राप्त हुए हैं। इसने एनआईआरएफ के लिए और पेटेंट के लिए 20 आवेदन भी किए हैं। संस्थान को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स द्वारा सम्मानित किया गया है साथ ही इससे जुड़े दर्जन से अधिक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है। आयुष मंत्रालय ने एनआईए को आयुर्वेद पांडुलिपि विज्ञान के लिए नोडल एजेंसी के रूप में भी घोषित किया है।

संस्थान के पूर्व छात्र देश और विदेश में केंद्र तथा राज्य सरकारों में नीति निर्माताओं, नियामक प्राधिकरणों, कुलपतियों, प्रशासकों जैसे निदेशक, प्रधानाचार्य, डीन आदि के रूप में आयुर्वेद की सेवा

कर रहे हैं। संस्थान के निदेशक और शिक्षक आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के प्रचार और विकास के लिए बाहरी देशों, संगठनों और एजेंसियों को अपनी विशेषज्ञता भी प्रदान करते हैं।

पंचकूला (हरियाणा) में 292 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान का एक उपषंगी केंद्र भी स्थापित किया जा रहा है। यह परिसर 12 एकड़ भूमि में फैला हुआ है जिसमें 58,000 वर्ग मीटर के निर्मित क्षेत्र में अकादमिक, प्रशिक्षण, अस्पताल, फार्मसी, संग्रहालयों, गेस्ट हाउस आदि के लिए 2 से 6 मंजिलों वाले बहुमंजिला भवन हैं। प्रशिक्षण और दवाओं के उपयोग के लिए विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों आदि की खेती के लिए 20 एकड़ भूमि का हर्बल गार्डन विकसित किया जा रहा है।

3.5.2 आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आई.टी.आर.ए.), जामनगर (गुजरात)

आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए), जामनगर आयुर्वेद का एक प्रमुख संस्थान है जिसे राष्ट्रीय महत्व के संस्थान का दर्जा मिला हुआ है और आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूरी तरह से वित्त पोषित संस्थान है। इसे 01 अक्टूबर, 2020 तक गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय जामनगर के प्रबंधन के तहत स्नातकोत्तर आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आई.पी.जी.टी. एंड आरए) के रूप में जाना जाता था। संस्थान को 2023 तक के लिए डब्ल्यूएचओ द्वारा पारंपरिक दवाओं (आयुर्वेद) के लिए सहयोगी केंद्र के रूप में फिर से नामित किया गया है।

संस्थान का उद्देश्य मौलिक विज्ञान की प्रगति को शामिल करके, वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल की आवश्यकता को पूरा करना, पारंपरिक दावों और सिद्धांतों को फिर से मान्य करने के लिए सहयोगी अनुसंधान करना, साक्ष्य आधारित अनुसंधान के माध्यम से फार्माकोपिया को समृद्ध करना, जन-स्वास्थ्य में आयुर्वेद को मुख्यधारा में लाना और राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन को सहायता देना और उसे समृद्ध बनाना है।

संस्थान नियमित आवासीय आधार पर, भारतीय और विदेशी छात्रों के लिए आयुर्वेद और आयुर्वेद फार्मास्यूटिक्स में स्नातकोत्तर डिग्री पाठ्यक्रम, 12 विभिन्न विषयों में पाठ्यक्रम, एम फार्मा (आयु.),

एम.एससी (औषधीय पादप), आयुर्वेद, आयुर्वेदिक फार्मास्यूटिकल साइंसेज और आयुर्वेदिक औषधीय पादप विज्ञान में पीएचडी प्रदान करता है। संस्थान अकादमिक, संस्थागत और सहयोगी अनुसंधान और विकासात्मक गतिविधियों में लगा हुआ है।

आईटीआरए एनएबीएच मान्यता प्राप्त पीजी अस्पताल, विषय और विशेष ओपीडी, जामनगर में सभी तीन रक्षा प्रतिष्ठानों सहित 7 साप्ताहिक अनुषंगी ओपीडी के साथ दो अस्पताल (यूजी और पीजी) चलाता है। आईटीआरए प्रायः स्वास्थ्य शिविरों, स्पेशियलिटी शिविरों का आयोजन करता है। इसमें 300 बिस्तरों की आईपीडी सुविधा है। यह आयुर्वेद के लिए इंटरमीडियरी फार्माकोविजिलेंस सेंटर (आईपीवीसी) चलाता है और "आयु" नामक एक पबमेड अनुक्रमित पत्रिका प्रकाशित करता है। संस्थान, अंतरिम केंद्र के माध्यम से पारंपरिक चिकित्सा हेतु वैश्विक केंद्र(जीसीटीएम) की स्थापना और उसकी कार्य-प्रगति में सहायता प्रदान करता है। संस्थान में पांच सुस्थापित प्रयोगशालाएं (फार्माकोलॉजी, जैव-रसायन विज्ञान, फार्माकोग्नोसी, फार्मास्यूटिकल रसायन विज्ञान और माइक्रोबायोलॉजी) के साथ-साथ सहायक प्रयोगशालाएं और भलीभांति संसाधन युक्त आरएफआईडी संचालित पुस्तकालय है। संस्थान में इन-कैंपस फार्मसी है, जो दोनों अस्पतालों की जरूरतों को पूरा करती है और मुफ्त स्वास्थ्य शिविर है। संस्थान लड़कों, लड़कियों के लिए चार छात्रावासों और अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के लिए एक छात्रावास का प्रबंधन करता है। इसमें 90 स्टाफ क्वार्टर, एक 30 कमरों वाला गेस्ट हाउस और दो वातानुकूलित सभागारों की सुविधा है।

3.5.3 अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए), नई दिल्ली

भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 17 अक्टूबर 2017 को अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) का उद्घाटन करते हुए इसे राष्ट्र को समर्पित किया था। एआईआईए एक समग्र तृतीयक देखभाल आयुर्वेद उपचार केंद्र और अस्पताल है जिसमें निदान के लिए नवीनतम बायोमेट्रिकल उपकरण उपलब्ध हैं। चूंकि मूल रूप से आयुर्वेद के लिए एक शीर्ष संस्थान के रूप में इसकी कल्पना की गई थी, इसलिए इसके उद्देश्य मौलिक सिद्धांतों और मानव संसाधन विकास

कार्यक्रमों के वैज्ञानिक सत्यापन के माध्यम से पारंपरिक आयुर्वेद ज्ञान और आधुनिक उपकरणों तथा प्रौद्योगिकी के बीच तालमेल लाना है।

आयुष मंत्रालय के तहत एआईआईए, आयुर्वेद शिक्षा, अनुसंधान और स्वास्थ्य देखभाल के लिए एक उत्कृष्टता केंद्र के रूप में समर्पित दृष्टिकोण के साथ काम करता है। यह प्राचीन ज्ञान और आधुनिक प्रौद्योगिकी का एक आदर्श मिश्रण है, जो विश्व का ध्यान आकर्षित करता है और आशा है कि आने वाले वर्षों में भारत में चिकित्सा पर्यटन को इससे बढ़ावा मिलेगा। एआईआईए की स्थापना भी विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के 'द ट्रिपल बिलियन' लक्ष्यों के अनुरूप है, जो 2023 तक अरबों लोगों के स्वास्थ्य में सुधार के लिए एक महत्वाकांक्षी पहल है। एआईआईए, लक्ष्यों के सभी तीन पहलुओं - सबके लिए स्वास्थ्य कवरेज, स्वास्थ्य संबंधी आकस्मिकताओं पर ध्यान देने, बेहतर स्वास्थ्य एवं कल्याण बनाए रखने - के लिए अपनी सर्व-समावेशी सेवाएं मामूली शुल्क पर उपलब्ध करा रहा है।

संस्थान में 8 अंतर-विषयक अनुसंधान प्रयोगशालाओं के साथ 25 विशेषता विभाग और 12 क्लीनिक हैं और यह आयुर्वेद के विभिन्न विषयों में स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट पाठ्यक्रम प्रदान करता है। संस्थान में निवारक, प्रोत्साहक, उपशामक और पोस्ट कोविड परिदृश्य में कोविड-19 के लिए व्यापक देखभाल के साथ नैदानिक अनुसंधान की सुविधा के लिए 200 बिस्तरों का रेफरल अस्पताल है।

आयुर्वेद, दवा विकास, मानकीकरण, गुणवत्ता नियंत्रण, सुरक्षा मूल्यांकन और आयुर्वेदिक दवाओं के वैज्ञानिक सत्यापन पर मौलिक अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित करने के साथ, एआईआईए की जड़ें भारत के महान पूर्व प्रधान मंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी से जुड़ी हैं, जिन्होंने आयुर्वेद के उत्कृष्टता केंद्र के उद्भव की कल्पना की थी, जो न केवल आयुर्वेद उत्पादों के अनुसंधान एवं विकास तथा मानकीकरण की आवश्यकताओं को पूरा करता है, बल्कि तृतीयक स्वास्थ्य देखभाल और आयुर्वेद के विभिन्न विषयों में अंतःविषयक प्रशिक्षण और अनुसंधान प्रदान करने के उद्देश्य को भी पूरा करता है। उपचार, रोकथाम और स्वास्थ्य संवर्धन में आयुर्वेद की क्षमता के बारे में सार्वजनिक जागरूकता पैदा करना एआईआईए के मुख्य लक्ष्यों में से एक है।

3.5.4 पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं लोक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (एनईआईएफएमआर) पासीघाट, अरुणाचल प्रदेश

पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं लोक चिकित्सा संस्थान (एनईआईएफएमआर), पासीघाट (पूर्ववर्ती पूर्वोत्तर लोक चिकित्सा संस्थान) आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के तहत एक स्वायत्त राष्ट्रीय संस्थान है। संस्थान की स्थापना 2008 में पूर्वोत्तर क्षेत्र पर विशेष ध्यान देने के साथ राष्ट्र के लाभ के लिए पारंपरिक स्वास्थ्य देखभाल प्रथाओं को मजबूत और विकसित करने के लक्ष्य के साथ की गई थी। अगस्त 2021 में, भारत सरकार ने संस्थान के अधिदेश का विस्तार किया और आयुर्वेद शैक्षणिक पाठ्यक्रमों को शामिल किया। संस्थान, स्थानीय स्वास्थ्य परंपराओं, उपचार ज्ञान, पारंपरिक ज्ञान के आधार पर औषधि-उपचार वाले उत्पादों का विकास, आईपीआर व्यवस्था के जरिए पारंपरिक ज्ञान की सुरक्षा, पारंपरिक प्रथाओं, जैव विविधता आदि के संरक्षण और सतत उपयोग के लिए सहायता देने का इरादा रखता है। संस्थान, आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति के तहत स्नातक पाठ्यक्रम और गुणवत्ता रोगी देखभाल सेवा भी प्रदान करता है। संस्थान को सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत अरुणाचल प्रदेश सरकार में सोसायटी के रूप में पंजीकृत किया गया है।

एनईआईएफएमआर 40 एकड़ में फैला हुआ है और अरुणाचल प्रदेश के पूर्वी सियांग जिले के पासीघाट में स्थित है। प्रशासनिक भवनों, गेस्ट हाउस और विषयगत औषधीय उद्यान के निर्माण के लिए चरण-1 में 16 एकड़ क्षेत्र का उपयोग किया गया है। संस्थान में वर्ष 2015 में एक तीन मंजिला भवन शुरू किया गया है। भवन के भूतल में निदेशक, प्रशासनिक अनुभाग, ओपीडी, फार्मसी, दवा निर्माण इकाई, सम्मेलन हॉल, व्याख्यान कक्ष, कैंटीन आदि का कार्यालय है। पहली मंजिल पर, एक 50 बिस्तर वाला आईपीडी अस्पताल है जिसमें चिकित्सा कक्ष और चिकित्सा कर्मचारियों के लिए विश्राम कक्ष शामिल हैं। कोविड महामारी के दौरान, इस संस्थान ने अरुणाचल प्रदेश के पूर्वी सियांग जिले में एकमात्र समर्पित कोविड अस्पताल के रूप में कार्य किया। सबसे ऊपरी मंजिल पर प्रयोगशाला की जरूरी बुनियादी सुविधाओं के साथ एक अनुसंधान इकाई और एक पुस्तकालय है। संस्थान में जीवन विज्ञान, लोक चिकित्सा, फार्माकोग्नोसी, फाइटोकेमिस्ट्री, हर्बेरियम संग्रहालय आदि के लिए प्रयोगशालाएं हैं।

3.5.5 पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान (एनईआईएच), शिलांग, मेघालय

पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान (एनईआईएच), शिलांग आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के तहत एक स्वायत्त संस्थान है। संस्थान का उद्घाटन 22 दिसंबर 2016 को किया गया था।

संस्थान की स्थापना आयुर्वेदिक और होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धतियों के तहत स्नातक-पूर्व, स्नातकोत्तर, डॉक्टरेट और पोस्ट-डॉक्टरेट शिक्षण प्रदान करने, अनुसंधान सुविधाएं और गुणवत्तापूर्ण रोगी देखभाल सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए की गई है। इसे 100 बिस्तरों वाले आयुर्वेद अस्पताल और 50 बिस्तरों वाले होम्योपैथी अस्पताल की क्षमता के साथ मंजूरी दी गई थी।

परियोजना के पहले चरण के तहत अस्पतालों और कॉलेज भवनों (आयुर्वेद कॉलेज, होम्योपैथी कॉलेज, आयुर्वेद अस्पताल, होम्योपैथी अस्पताल, लाइब्रेरी ब्लॉक) का निर्माण कार्य 20 एकड़ भूमि के भूखंड पर पूरा हो गया है जो शिलांग के मावडियांगदियांग में पूर्वोत्तर इंदिरा गांधी क्षेत्रीय स्वास्थ्य एवं चिकित्सा विज्ञान संस्थान (एनईआईजीआरआईएचएमएस) से सटा हुआ है।

संस्थान में 2016 से मावडियांगदियांग, शिलांग में आयुर्वेद कॉलेज और होम्योपैथी कॉलेज है और यह नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी (एनईएचयू), शिलांग से संबद्ध है। संस्थान ने शैक्षणिक सत्र 2016-17 से शुरू होने वाले प्रत्येक बैच में 50 सीटों के साथ बीएएमएस और बीएचएमएस पाठ्यक्रमों के 5 बैचों और शैक्षणिक सत्र 2019-20 से दोनों पाठ्यक्रमों में प्रत्येक में 63 छात्रों को पहले ही प्रवेश दे दिया है। बीएएमएस और बीएचएमएस पाठ्यक्रम चलाने के अलावा, संस्थान 20 छात्रों की प्रवेश क्षमता के साथ एक वर्षीय पंचकर्म तकनीशियन प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम भी प्रदान करता है।

संस्थान वर्तमान में 60 बिस्तरों वाले आयुर्वेद अस्पताल और 20 बिस्तरों वाले होम्योपैथी अस्पताल के साथ चल रहा है और आयुर्वेदिक और होम्योपैथिक आईपीडी और ओपीडी चला रहा है। आयुर्वेद अस्पताल में ओपीडी सेवाओं में पंचकर्म, कायाचिकित्सा, शल्य तंत्र, स्वस्थवृत्त और योग, प्रसूति तंत्र और स्त्री रोग, दंत चिकित्सा, कैजुअल्टी, माइनर ओटी शामिल हैं जबकि होम्योपैथी अस्पताल में

ओपीडी सेवाओं में मेडिसिन, ओब्स एंड गायनी, बाल रोग, सर्जरी, कैजुअल्टी, माइनर ओटी आदि शामिल हैं।

3.5.6 राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ (आरएवी), नई दिल्ली

राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ (आरएवी) आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के तहत एक स्वायत्त संगठन है। विद्यापीठ की स्थापना प्रख्यात आयुर्वेदिक विद्वानों और चिकित्सकों द्वारा प्राप्त आयुर्वेदिक ज्ञान को शिक्षा और ज्ञान हस्तांतरण की भारतीय पारंपरिक गुरु-शिष्य पद्धति के माध्यम से युवा पीढ़ी के लिए संरक्षित और व्यवस्थित करने के मुख्य उद्देश्य से की गई थी।

विद्यापीठ चिकित्सकों और शोधकर्ताओं के लाभ के लिए आयुर्वेद में नवीनतम विकास और अनुसंधान पर चर्चा करने के लिए राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित करता है और छात्रों तथा शिक्षकों के बीच आयुर्वेद के तर्क योग्य विषयों पर चर्चा के लिए इंटरैक्टिव कार्यशालाएं भी आयोजित करता है। इसके अलावा, आरएवी आयुर्वेदिक शिक्षकों के लिए संहिता आधारित नैदानिक निदान पर और पीजी छात्रों के लिए अनुसंधान पद्धति, पांडुलिपि लेखन और कैरियर के अवसरों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करता है।

"आयुर्वेद प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ गुणवत्ता वृद्धि पहल", आयुष मंत्रालय की ओर से राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ द्वारा उन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में गुणवत्ता वृद्धि लाने के लिए एक अभिनव कदम है, जो आईएमसीसी अधिनियम, 1970/ एनसीआईएसएम अधिनियम 2020 या देश और विदेश के किसी अन्य नियामक निकाय/ प्रावधानों के तहत शामिल नहीं हैं। इसका उद्देश्य आयुर्वेद पाठ्यक्रमों को मान्यता देकर उनका मानकीकरण करना है। यह ऐसे आयुर्वेद पेशेवरों को भी प्रमाणित करता है जो आईएमसीसी अधिनियम 1970/एनसीआईएसएम अधिनियम 2020 या चिकित्सक, परामर्शदाता आदि जैसे किसी नियामक निकाय के तहत शामिल नहीं किए गए हैं। आरएवी आयुष पद्धतियों में सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई) की केंद्रीय क्षेत्र योजना को लागू करने में आयुष मंत्रालय के लिए एक नोडल एजेंसी के रूप में भी काम करता है।

3.5.7 मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (एमडीएनआईवाई), नई दिल्ली

मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (एमडीएनआईवाई) आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के तहत एक स्वायत्त संगठन है। एमडीएनआईवाई 01.04.1998 को पूर्ववर्ती केंद्रीय योग अनुसंधान संस्थान (सीआरआईवाई), जिसे वर्ष 1976 में स्थापित किया गया था, के उन्नयन के बाद अस्तित्व में आया। संस्थान का उद्देश्य सभी के समग्र स्वास्थ्य और कल्याण के लिए प्राचीन योग परंपराओं पर आधारित योग दर्शन और अभ्यासों की गहरी समझ को बढ़ावा देना है।

संस्थान का उद्देश्य योग के उत्कृष्टता केंद्र के रूप में कार्य करना है; योग के दर्शन, विज्ञान और कला को विकसित करना, बढ़ावा देना और प्रचारित करना है; और उपरोक्त दो उद्देश्यों को पूरा करने के लिए योग शिक्षा, प्रशिक्षण, चिकित्सा एवं अनुसंधान के लिए सुविधाएं प्रदान करना और उसे बढ़ावा देना है।

संस्थान शैक्षणिक सत्र 2019-2020 से गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से संबद्धता के साथ एम.एससी (योग) पाठ्यक्रम प्रदान करता है। यह दो साल की अवधि का एक नियमित, गैर-आवासीय और पूर्णकालिक पाठ्यक्रम है जिसमें 30 की प्रवेश क्षमता के साथ चार सेमेस्टर शामिल हैं। संस्थान 30 की कुल प्रवेश क्षमता के साथ आईपी विश्वविद्यालय से संबद्ध बीएससी (योग) चला रहा है। एमडीएनआईवाई ने शैक्षणिक सत्र 2019-20 से गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से संबद्ध मेडिकोज और पैरा मेडिकोस (पीजीडीवाईटीएमपी) के लिए योग थेरेपी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा भी शुरू किया है, जिसमें एक बैच में 20 छात्रों की कुल प्रवेश क्षमता है। एक वर्ष की अवधि के स्नातकों के लिए योग विज्ञान में डिप्लोमा (डीवाईएससी) 97 छात्रों की प्रवेश क्षमता के साथ आयोजित किया जा रहा है। यह संस्थान वेलनेस इंस्ट्रक्टर कोर्स (सीएसवाईडब्ल्यूआई) के लिए योग में 6 महीने की अवधि का सर्टिफिकेट कोर्स भी प्रदान करता है। एमडीएनआईवाई प्रोटोकॉल प्रशिक्षक (सीसीवाईपीआई), तीन महीने (200 घंटे), नियमित, पूर्णकालिक, गैर-आवासीय पाठ्यक्रम के लिए योग में सर्टिफिकेट कोर्स प्रदान करता है।

3.5.8 राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान (एनआईएन), पुणे (महाराष्ट्र)

राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान (एनआईएन) मातोश्री रमाबाई अम्बेडकर रोड (ताड़ीवाला रोड), पुणे - 411001 में स्थित "बापू भवन" नामक ऐतिहासिक स्थान पर स्थित है। इसे स्वर्गीय डॉ. दिनशाँ के. मेहता द्वारा "नेचर क्योर क्लिनिक एंड सैनिटोरियम" के रूप में चलाया गया था। इस दौरान महात्मा गांधी अलग-अलग मौकों पर 156 दिनों तक यहां रहे थे। "ऑल इंडिया नेचर क्योर फाउंडेशन ट्रस्ट " इस केंद्र में स्थापित किया गया था और महात्मा गांधी इसके आजीवन अध्यक्ष बने तथा यहां रहते हुए कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों का संचालन किया। एनआईएन 27 सितंबर, 1984 को नई दिल्ली में सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत पंजीकृत है और यह 22.12.1986 को अस्तित्व में आया। इसका उद्देश्य प्राकृतिक चिकित्सा और योग का प्रचार तथा संवर्धन करना, प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग के माध्यम से सभी प्रकार के रोगों के लिए उपचार सुविधाएं प्रदान करना, अनुसंधान एवं प्रशिक्षण आयोजित करना और महात्मा गांधी का एक जीवंत स्मारक स्थापित करना है। इन उद्देश्यों के अलावा, सामान्य रूप से, ऑल इंडिया नेचर क्योर फाउंडेशन ट्रस्ट के गठन के समय महात्मा गांधी द्वारा निर्धारित उद्देश्यों को भी पूरा करना है जिनके तहत एक नेचर क्योर यूनिवर्सिटी की स्थापना की जानी है, जिसके लिए पहला कदम उक्त नेचर क्योर क्लिनिक और सैनिटोरियम को राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान के केंद्रीय और शीर्ष संस्थान के रूप में विकसित करना होगा क्योंकि उक्त ट्रस्ट के गठन के समय इसमें एक नेचर क्योर यूनिवर्सिटी स्थापित करना महात्मा गांधी के मुख्य उद्देश्यों में से एक था। संस्थान के पास प्राकृतिक चिकित्सा और योग को सभी के लिए सुलभ बनाने के लिए एक मिशन है। यह प्राकृतिक चिकित्सा और योग के क्षेत्र में शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करके गुणवत्तायुक्त सेवा प्रदान करता है।

संस्थान ने अपनी बहुआयामी इन-हाउस गतिविधियों का विस्तार किया है जैसे प्राकृतिक चिकित्सा ओपीडी क्लिनिक/डे-केयर आईपीडी सुविधा, जहां प्रतिदिन लगभग 150 से 180 रोगियों का इलाज किया जाता है/इलाज के लिए लोग आते हैं; आठ नियमित योग कक्षाएं चलाई जाती हैं; चिकित्सीय योग (एक-एक रोगी के लिए) सत्र होते हैं, हैल्थ शाप लगाई जाती हैं जहां रसायन-रहित जैविक स्वास्थ्य उत्पाद उपलब्ध कराए जाते हैं, उपचार उपकरण और मराठी, हिंदी और अंग्रेजी में प्राकृतिक

चिकित्सा और योग पर किताबें बेची जाती हैं; पुस्तकालय है जहां लोगों के लिए रीडिंग रूम की सुविधा है और लोग पढ़ने के लिए पुस्तकों को घर भी ले जा सकते हैं; प्राकृतिक चिकित्सा आहार केंद्र है जहां आम जनता को स्वस्थ भोजन परोसा जाता है। इसके अलावा, एनआईएन महिला-समूहों, निजी एवं सरकारी संगठनों के अन्य लोगों के लिए तथा स्कूलों, कॉलेजों आदि के लिए खाद्य प्रदर्शनी, प्राकृतिक चिकित्सा और योग कार्यशालाएं, सेमिनार, व्याख्यान, योग प्रदर्शन आदि भी आयोजित करता है।

3.5.9 राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान (एनआईयूएम), बेंगलूर (कर्नाटक)

राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान की स्थापना 1984 में आयुष विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संगठन के रूप में की गई थी। संस्थान को यूनानी चिकित्सा में स्नातकोत्तर शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुसंधान और रोगी देखभाल के लिए एक मॉडल संस्थान के रूप में विकसित किया जा रहा है।

यूनानी चिकित्सा के आगे विकास में भारत के निरंतर योगदान को विश्व स्तर पर मान्यता दी गई है। भारत सरकार ने स्वास्थ्य सेवा वितरण प्रणाली में इसका सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए इस चिकित्सा पद्धति के बहुमुखी विकास को बहुत महत्व दिया। फलस्वरूप, यूनानी चिकित्सा पद्धति में शिक्षा, अनुसंधान और स्वास्थ्य सेवा देश में काफी विकसित हुई है।

एनआईयूएम ने अपने अस्पताल को भारत के पहले एनएबीएच मान्यता प्राप्त यूनानी अस्पताल के साथ-साथ एनएबीएल मान्यता प्राप्त नैदानिक प्रयोगशालाओं का दर्जा दिलाकर इतिहास रच दिया है। अब एनआईयूएम अस्पताल और इससे जुड़ी सभी प्रयोगशालाएं एनएबीएच प्रमाणित हैं। यूनानी चिकित्सा के क्षेत्र में गुणवत्ता अनुसंधान करने के लिए विभिन्न अन्य प्रयोगशालाएं भी प्रचालनरत हैं, नामतः सेंट्रल इंस्ट्रूमेंटेशन फैसिलिटी (सीआईएफएल), औषध विज्ञान प्रयोगशाला, गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला, औषध मानकीकरण प्रयोगशाला और फार्माकोग्नोसी प्रयोगशाला। दवा जांच, और विषाक्तता अध्ययन के लिए पशु घर स्थापित किया गया है। संस्थान ने 4 एकड़ में हर्बल गार्डन भी

स्थापित किया है जिसमें 210 से अधिक प्रजातियां और औषधीय जड़ी बूटियों, हर्ब्स, पादपों और क्लाइंबर्स के 2000 से अधिक पौधे शामिल हैं।

संस्थान दस विषयों में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रदान करता है जैसे मोआलजात (चिकित्सा), इलमुल अदविया (औषधि), ताहफ्फुजी वा समाजी तिब (निवारक और सामाजिक चिकित्सा), इलमुल कबालत वा अमराजे निसवां (प्रसूति और स्त्री रोग), इलमुल सैदला (यूनानी फार्मसी), कुलियात उमूर तबिया (यूनानी चिकित्सा के मूल सिद्धांत), इलाज बित तदबीर (रेजिमेंटल थेरेपी), इलमुल जराहत (सर्जरी), महियातुल अमराज (पैथोलॉजी), और अमराजे जिल्द-व-तजीनियत (त्वचा एवं प्रसाधनविज्ञान)। संस्थान, मोआलजात और इलमुल अदविया में भी पीएचडी पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

3.5.10 राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान (एनआईएस), चेन्नई (तमिलनाडु)

चेन्नई में स्थित राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान (एनआईएस), अपने मिशन के रूप में सिद्ध चिकित्सा पद्धति में अनुसंधान और उच्च शिक्षा का उत्कृष्टता केंद्र है। भारत के पूर्व माननीय प्रधान मंत्री द्वारा 03.09.2005 को इसका उद्घाटन किया गया था। एनआईएस का उद्देश्य विशिष्ट संकाय सदस्यों की एक टीम को साथ लेकर और एक गुणवत्ता संसाधन आधार का निर्माण करके, सिद्ध में सर्वोत्तम संभव स्नातकोत्तर शिक्षा प्रदान करना है। तांबरम सैनितोरियम में एक विशाल परिसर में स्थित, एनआईएस परियोजना, केंद्र और राज्य सरकार के सहयोग का एक आदर्श उदाहरण है। यह संस्थान, दि तमिलनाडु डॉ. एमजीआर मेडिकल यूनिवर्सिटी, चेन्नई से संबद्ध है और पाठ्यक्रम तथा पाठ्यचर्या भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग, नई दिल्ली के अनुसार हैं। संस्थान, उत्कृष्टता का एक केंद्र और सिद्ध चिकित्सा पद्धति के लिए एक अद्वितीय रेफरल संस्थान है। संस्थान, सिद्ध चिकित्सा पद्धति के संवर्धन और विकास को बढ़ावा देने; सिद्ध पद्धति के माध्यम से चिकित्सा राहत प्रदान करने; सिद्ध चिकित्सा पद्धति में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने; अनुसंधान और प्रसार करने और उत्कृष्टता के केंद्र के रूप में कार्य करने के उद्देश्यों के साथ काम कर रहा है।

3.5.11 राष्ट्रीय सोवा रिग्पा संस्थान (एनआईएसआर), लेह, लद्दाख

राष्ट्रीय सोवा-रिग्पा संस्थान को पहली बार 1976 में अमची अनुसंधान इकाई के रूप में स्थापित किया गया था और 2004 में इसका सोवा-रिग्पा अनुसंधान केंद्र के रूप में उन्नयन किया गया था, और 2009 में केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के तहत सोवा-रिग्पा राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थान के रूप में उन्नयन किया गया था। सोवा-रिग्पा के संरक्षण, संवर्धन और विकास के लिए अक्टूबर 2020 में इसका आयुष मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संस्थान और एक मॉडल संस्थान के रूप में उन्नयन किया गया है ताकि शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुसंधान, रोगी देखभाल के उच्च मानकों को विकसित किया जा सके और सोवा-रिग्पा चिकित्सा पद्धति के ज्ञान को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जोड़ा जा सके। राष्ट्रीय सोवा-रिग्पा संस्थान, केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख में इसके लेह शहर स्थित पंजीकृत कार्यालय में 1860 के सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम XXI के तहत पंजीकृत है।

सोवा-रिग्पा में बी.एस.आर.एम.एस यूजी पाठ्यक्रम का पहला बैच राष्ट्रीय सोवा-रिग्पा संस्थान, लेह में शुरू किया गया था जिसमें भारत के विभिन्न क्षेत्रों यथा हिमाचल प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश और केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख के दस छात्रों का नामांकन हुआ था।

इस संस्थान ने अल्पावधि में ही मेडिको-एथनो बॉटनिकल सर्वे, औषधीय पौधों की खेती, जनजातीय उप योजना गतिविधियों (जनजातीय स्वास्थ्य देखभाल अनुसंधान कार्यक्रम लेह और सोवा-रिग्पा जनजातीय स्वास्थ्य देखभाल क्लिनिक जांस्कर घाटी कारगिल), बाह्य रोगी विभाग (ओपीडी) के माध्यम से स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं, प्रलेखन कार्यक्रम, शोध-पत्र, लास-एसएनए (पंचकर्म) थेरेपी सेवा, यूजी कोर्स सोवा-रिग्पा और फार्माकोविजिलेंस कार्यक्रम जैसी प्रमुख गतिविधियों को सक्रिय रूप से आगे बढ़ा रहा है।

3.5.12 राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान (एनआईएच), कोलकाता (पश्चिमी बंगाल)

राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान की स्थापना 10 दिसंबर 1975 को कोलकाता में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संस्थान के रूप में की गई थी, जो वर्तमान में आयुष

मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन है। संस्थान 2003-04 के सत्र तक कलकत्ता विश्वविद्यालय से संबद्ध था और 2004-05 से पश्चिम बंगाल स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, कोलकाता से संबद्ध हो गया। इस संस्थान का उद्देश्य होम्योपैथिक चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान में उत्कृष्टता को बढ़ावा देना, उच्चतम पेशेवर मानकों के अनुसार होम्योपैथी के स्नातक-पूर्व, स्नातकोत्तर छात्रों और शोध छात्रों को शिक्षित और प्रशिक्षित करना है।

हाल ही में, नरेला, दिल्ली में राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान के एक उपसंगी परिसर का उद्घाटन किया गया और भारत के माननीय प्रधान मंत्री द्वारा 11.12.2022 को राष्ट्र को समर्पित किया गया। नरेला, दिल्ली में इस अनुसंगी संस्थान की स्थापना, क्षेत्र की आबादी की आवश्यकता को पूरा करने और राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों के साथ सहयोगात्मक अनुसंधान करने की दृष्टि से की गई है। संस्थान को एक सुपर स्पेशियलिटी रेफरल अस्पताल और गुणवत्ता शिक्षा और अनुसंधान के उत्कृष्टता केंद्र के रूप में स्थापित करने और उच्च गुणवत्तायुक्त अनुसंधान एवं उपचार के बीच अंतर को भरने के लिए केवल स्नातकोत्तर और पीएचडी स्तर का शिक्षण प्रदान करने का प्रस्ताव है। संस्थान, राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग और भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त होम्योपैथी में दो पूर्णकालिक नियमित पाठ्यक्रम संचालित कर रहा है। एक है होम्योपैथी में 5½ वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम अर्थात्, बैचलर ऑफ होम्योपैथिक मेडिसिन एंड सर्जरी (बी.एच.एम.एस.) जो 1987 से चल रहा है, और दूसरा है 3 वर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम अर्थात् डॉक्टर ऑफ मेडिसिन इन होम्योपैथी [एमडी (होम)], जो 1998 से चल रहा है, और ये कलकत्ता विश्वविद्यालय की संबद्धता और वर्तमान में पश्चिम बंगाल स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, कोलकाता के तहत चलाए जा रहे हैं। पीजी पाठ्यक्रम छह (6) विषयों में दिए जाते हैं, अर्थात् ऑर्गेनन ऑफ मेडिसिन, मटेरिया मेडिका, केस टेकिंग एंड रिपोर्टाइजेशन, होम्योपैथिक फार्मैसी, प्रैक्टिस ऑफ मेडिसिन एंड पीडियाट्रिक्स। वर्तमान में एनआईएच, कोलकाता में एक सौ छब्बीस (126) यूजी सीटों और सैंतालीस (47) पीजी सीटों की प्रवेश क्षमता उपलब्ध है।

पुस्तकालय अनुभाग में दुर्लभ होम्योपैथी ग्रंथों सहित चौबीस हजार (24,000) से अधिक दस्तावेज (लघु एवं बृहद) हैं। यह इन-हाउस पाठकों के लिए विभिन्न सेवाएं प्रदान करता है जैसे प्रलेखन, संदर्भ, रेफरल, सीएस, फ्लैश, एसडीआई, दस्तावेज वितरण, इंटरनेट आदि।

इस संस्थान के मुख्य परिसर में 100 बिस्तरों वाला अस्पताल है जिसमें निकट भविष्य में कुल 250 बिस्तरों का विस्तार करने का प्रावधान है। अस्पताल सेवाओं में पश्चिम बंगाल के साल्ट लेक में बाह्य रोगी विभाग (ओपीडी) और बैरकपुर, खड़गपुर, टॉलीगंज, बारासात, गोपीबल्लभपुर, काशीरी, सुटिया, बालुरघाट, मालदा में नौ (09) परिधीय ओपीडी (पीओपीडी) और साल्ट लेक में अन्तरंग-रोगी विभाग (आईपीडी) शामिल हैं, जो जांच और अन्य सेवाओं के लिए मामूली शुल्क लेकर सेवाएं प्रदान करते हैं। एनआईएच अस्पताल को एनएबीएच की मान्यता दी गई है।

3.6 केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम

3.6.1 इंडियन मेडिसिन फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड (आईएमपीसीएल)

इंडियन मेडिसिन्स फार्मास्युटिकल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईएमपीसीएल) भारत सरकार का एक केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है। इसे 1978 में आयुष मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में शामिल किया गया था। वर्तमान में इसमें भारत सरकार के 98.11 प्रतिशत शेयर हैं और कुमाऊं मंडल विकास निगम लिमिटेड के माध्यम से उत्तराखंड सरकार के 1.89 प्रतिशत शेयर हैं। कंपनी को भारत सरकार के प्रदर्शन के आधार पर मिनी-रत्न का दर्जा दिया गया है।

कंपनी का पंजीकृत कार्यालय और संयंत्र मोहान (वाया-रामनगर), अल्मोड़ा, उत्तराखंड -244715 में और कॉर्पोरेट कार्यालय बी-261, ओखला, फेज-1, नई दिल्ली -11020 में है। वर्ष आईएमपीसीएल ने 2018 से हरिद्वार के इमलीखेड़ा स्थित एक और विनिर्माण संयंत्र का अधिग्रहण किया है, जिसे पट्टे के आधार पर लिया गया है।

कंपनी की स्थापना, देश भर में केंद्र सरकार/राज्य सरकार के अस्पतालों और केंद्र सरकार की अनुसंधान इकाइयों के लिए प्रामाणिक और प्रभावोत्पादक आयुर्वेदिक और यूनानी दवाओं के विनिर्माण

और विपणन के उद्देश्यों के साथ की गई थी। कंपनी की खुले बाजार/व्यापार बाजार में भी समुचित उपस्थिति है। विनिर्माण सुविधाओं के अलावा, कंपनी के पास कच्चे माल के साथ-साथ तैयार उत्पादों के परीक्षण के लिए अपनी आयुष ड्रग टेस्टिंग लैब है।

कोविड के निरंतर प्रभाव के बावजूद, कंपनी ने वित्तीय वर्ष 2020-21 और 2021-22 की समाप्ति में विकास और लाभ में वृद्धि बनाए रखी है। आईएमपीसीएल ने पिछले वर्षों की तुलना में परिचालन से राजस्व में क्रमशः 11.76% और 62.87% की वृद्धि दर्ज की है। आईएमपीसीएल ने वर्ष 2021-22 के लिए अब तक का सबसे अधिक कारोबार और उच्चतम लाभ दर्ज किया है। इसका कारोबार 260.84 करोड़ रुपये और कर पूर्व लाभ (पीबीटी) 45.40 करोड़ रुपये है।

आईएमपीसीएल ने वर्ष 2020-2021 के लिए अपने शेयरधारकों को कर पश्चात लाभ पर 15% के अपने पहले लाभांश का भुगतान किया, जो 1.66 करोड़ रुपये था। वर्ष 2021-2022 के लिए कंपनी ने सीपीएसयू की पूंजी पुनर्गठन के दिशानिर्देशों के आधार पर, कर पश्चात लाभ पर 30% के लाभांश का भुगतान किया है, जो 10.13 करोड़ रुपये है। यह राशि भारत सरकार और कुमाऊं मंडल विकास निगम लिमिटेड को उनके शेयरधारिता के अनुपात के अनुसार भुगतान की गई।

जहां तक विकास कार्यनीति का संबंध है, आईएमपीसीएल को अपने प्रचालनों में पहली बार 18 आयुर्वेदिक उत्पादों के लिए डीसीजी (आई) द्वारा डब्ल्यूएचओ-जीएमपी/सीओपीपी प्रमाणन प्रदान किया गया है, जिससे कंपनी को निर्यात कारोबार की संभावनाओं को पता लगाने का अवसर मिला है। आईएमपीसीएल की आयुर्वेदिक पशु चिकित्सा दवाओं के क्षेत्र में व्यवसाय बढ़ाने की योजनाएं भी हैं और जल्द ही व्यवसाय को रिकॉर्ड करने की संभावना है। इसके अलावा, आईएमपीसीएल, संगठनात्मक लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रतिबद्धता और उत्साह के साथ आयुष वर्टिकल के ऐसे दूसरे क्षेत्र की भी तलाश में है, जो आईएमपीसीएल के विभिन्न उत्पादों में शामिल नहीं है।

अध्याय 4

आयुष शिक्षा क्षेत्र

4.1 सिंहावलोकन

पारदर्शिता सुनिश्चित करने और देश भर में आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी, सोवा-रिग्पा और होम्योपैथी (एएसयूएसआर एंड एच) कॉलेजों की गुणवत्ता और कामकाज में सुधार करने के लिए, भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग अधिनियम, 2020 और राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग अधिनियम, 2020 भारत के आधिकारिक राजपत्र में 21 सितंबर 2020 को अधिसूचित और प्रकाशित किए गए थे।

इन अधिनियमों को एक चिकित्सा शिक्षा प्रणाली सुनिश्चित करने के लिए अधिनियमित किया गया था जो गुणवत्ता और सस्ती चिकित्सा शिक्षा तक पहुंच में सुधार करता है, देश के सभी हिस्सों में भारतीय चिकित्सा पद्धति और होम्योपैथी के पर्याप्त और उच्च गुणवत्ता वाले चिकित्सा पेशेवरों की उपलब्धता सुनिश्चित करता है। ये अधिनियम समान और सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा को बढ़ावा देने में मदद करते हैं जो सामुदायिक स्वास्थ्य के दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है और ऐसे चिकित्सा पेशेवरों की सेवाओं को सभी नागरिकों के लिए सुलभ और सस्ती बनाता है; जो राष्ट्रीय स्वास्थ्य लक्ष्यों को बढ़ावा देता है; जो ऐसे चिकित्सा पेशेवरों को अपने काम में नवीनतम चिकित्सा अनुसंधान अपनाने और अनुसंधान में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करता हो; जिसके पास चिकित्सा संस्थानों का एक वस्तुपरक आवधिक और पारदर्शी मूल्यांकन है और भारत के लिए भारतीय चिकित्सा पद्धति के एक चिकित्सा रजिस्टर के रखरखाव की सुविधा प्रदान करता है और चिकित्सा सेवाओं के सभी पहलुओं में उच्च नैतिक मानकों को लागू करता है; जो बदलती जरूरतों के अनुकूल होने के लिए लचीला है और एक प्रभावी शिकायत निवारण तंत्र है और इससे जुड़े या प्रासंगिक मामलों के लिए है।

11.06.2021 को, भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद अधिनियम, 1970 को निरस्त कर दिया गया और भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद अधिनियम, 1970 की धारा 3 की उप-धारा (1) के तहत गठित केंद्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद को भंग कर दिया गया। उसी दिन, एनसीआईएसएम और उनके स्वायत्त बोर्डों का गठन किया गया।

इसी तरह, 05.07.2021 को होम्योपैथी केंद्रीय परिषद अधिनियम, 1973 को निरस्त कर दिया गया और होम्योपैथी केंद्रीय परिषद अधिनियम, 1973 की धारा 3 की उप-धारा (1) के तहत गठित केंद्रीय होम्योपैथी परिषद को भंग कर दिया गया। उसी दिन, एनसीएच और उनके स्वायत्त बोर्डों का गठन किया गया।

ये आयोग, एनसीआईएसएम और एनसीएचसी अधिनियम, 2020 के तहत गठित वैधानिक निकाय हैं।

इन अधिनियमों को एक चिकित्सा शिक्षा प्रणाली सुनिश्चित करने के लिए अधिनियमित किया गया था जो गुणवत्ता और सस्ती चिकित्सा शिक्षा तक पहुंच में सुधार करता है, देश के सभी हिस्सों में भारतीय चिकित्सा पद्धति और होम्योपैथी के पर्याप्त और उच्च गुणवत्ता वाले चिकित्सा पेशेवरों की उपलब्धता सुनिश्चित करता है। ये अधिनियम समान और सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा को बढ़ावा देने में मदद करते हैं जो सामुदायिक स्वास्थ्य के दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है और ऐसे चिकित्सा पेशेवरों की सेवाओं को सभी नागरिकों के लिए सुलभ और सस्ती बनाता है; जो राष्ट्रीय स्वास्थ्य लक्ष्यों को बढ़ावा देता है; जो ऐसे चिकित्सा पेशेवरों को अपने काम में नवीनतम चिकित्सा अनुसंधान अपनाने और अनुसंधान में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करता हो; जिसके पास चिकित्सा संस्थानों का एक उद्देश्य आवधिक और पारदर्शी मूल्यांकन है और भारत के लिए भारतीय चिकित्सा पद्धति के एक चिकित्सा रजिस्टर के रखरखाव की सुविधा प्रदान करता है और चिकित्सा सेवाओं के सभी पहलुओं में उच्च नैतिक मानकों को लागू करता है; यह बदलती जरूरतों के अनुकूल होने के लिए लचीला है और एक प्रभावी शिकायत निवारण तंत्र है और इससे जुड़े या प्रासंगिक मामलों के लिए है।

4.2 राष्ट्रीय योग्यता सह प्रवेश परीक्षा (नीट-यूजी)

आयुष मंत्रालय ने एएसयूएसआरएंडएच पाठ्यक्रमों में यूजी पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए पात्रता मानदंड के रूप में नीट कराने का निर्णय लिया है। एएसयूएसआरएंडएच स्नातक पाठ्यक्रमों और स्नातकोत्तर महाविद्यालयों में प्रवेश के लिए आयुष मंत्रालय में एक आयुष प्रवेश केंद्रीय परामर्श प्रकोष्ठ भी काम कर रहा है। शैक्षणिक वर्ष 2021-22 के लिए, आयोगों (एनसीआईएसएम और एनसीएच) के अनुरोध पर विचार करते हुए, मंत्रालय ने वर्ष 2021-22 के लिए एएसयू और एच-यूजी पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए सभी श्रेणियों में नीट (यूजी)-2021 के न्यूनतम प्रतिशत मानदंड को 5% घटा दिया था।

तदनुसार, एनईईटी (यूजी)-2021 के संशोधित योग्यता मानदंडों के आधार पर श्रेणी-वार अतिरिक्त योग्य अभ्यर्थियों की सूची नीचे दी गई है:

| श्रेणी | पूर्व पात्रता मानदंड नीट (यूजी) 2021 | | | संशोधित पात्रता मानदंड नीट (यूजी) 2021 (अतिरिक्त योग्य अभ्यर्थी) | | |
|-------------------------------------|---|------------|-----------------------|---|------------|-----------------------|
| | पात्रता मानदंड | अंक श्रेणी | अभ्यर्थियों की संख्या | पात्रता मानदंड | अंक श्रेणी | अभ्यर्थियों की संख्या |
| अनारक्षित | 50वां पर्सेन्टाइल | 720-138 | 770864 | 45वां पर्सेन्टाइल | 720-122 | 75388 |
| अ.पि.वर्ग | 40वां पर्सेन्टाइल | 137-108 | 66978 | 35वां पर्सेन्टाइल | 121-096 | 66672 |
| अनु. जाति | 40वां पर्सेन्टाइल | 137-108 | 22384 | 35वां पर्सेन्टाइल | 121-096 | 23314 |
| अनु. जनजाति | 40वां पर्सेन्टाइल | 137-108 | 9312 | 35वां पर्सेन्टाइल | 121-096 | 10081 |
| अना./ ईडब्ल्यूएस एवं दिव्यांग | 45वां पर्सेन्टाइल | 137-122 | 313 | 40वां पर्सेन्टाइल | 121-108 | 363 |
| ओबीसी एवं पीएच | 40वां पर्सेन्टाइल | 121-108 | 157 | 35वां पर्सेन्टाइल | 107-096 | 146 |
| एससी एवं पीएच | 40वां पर्सेन्टाइल | 121-108 | 59 | 35वां पर्सेन्टाइल | 106-096 | 40 |
| एसटी एवं पीएच | 40वां पर्सेन्टाइल | 121-108 | 14 | 35वां पर्सेन्टाइल | 107-097 | 12 |
| | | | 870074 | | | 176016 |

एनसीआईएसएम/एनसीएच ने आयुष मंत्रालय के परामर्श से, शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के लिए एएसयू एवं एच-यूजी पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए नीट (यूजी)-2022 आयोजित करने के लिए राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) को नामित किया था। एनटीए ने 17 जुलाई 2022 को नीट (यूजी)-2022 का आयोजन किया, और परिणाम 7 सितंबर 2022 को घोषित किए गए। कुल 993069 अभ्यर्थियों को निर्धारण शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के लिए केंद्रीकृत आयुष काउंसलिंग में भाग लेने के लिए पात्र घोषित किया गया। एनईईटी (यूजी)-2022 उत्तीर्ण अभ्यर्थियों की श्रेणीवार सूची इस प्रकार है:

| श्रेणी | पात्रता मानदंड | नीट (यूजी) 2022 | |
|--------------------------|-------------------|-----------------|-----------------------|
| | | अंक श्रेणी | अभ्यर्थियों की संख्या |
| यूआर/ईडब्ल्यूएस | 50वां पर्सेन्टाइल | 715-117 | 881402 |
| ओबीसी | 40वां पर्सेन्टाइल | 116-93 | 74458 |
| एससी | 40वां पर्सेन्टाइल | 116-93 | 26087 |
| एसटी | 40वां पर्सेन्टाइल | 116-93 | 10565 |
| यूआर/ईडब्ल्यूएस एवं पीएच | 45वां पर्सेन्टाइल | 116-105 | 328 |
| ओबीसी एवं पीएच | 40वां पर्सेन्टाइल | 104-93 | 160 |
| एससी एवं पीएच | 40वां पर्सेन्टाइल | 104-93 | 56 |
| एसटी एवं पीएच | 40वां पर्सेन्टाइल | 104-93 | 13 |

4.3 आयुष प्रवेश केंद्रीय परामर्श समिति (एएससीसी)

मंत्रालय ने सरकार के अधीन एएसयू और एच पाठ्यक्रमों की अखिल भारतीय कोटा यूजी और पीजी सीटों के आवंटन के लिए सरकारी कॉलेज/सरकार सहायता प्राप्त शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के लिए निजी संस्थानों के तहत एएसयू और एच पाठ्यक्रमों की अखिल भारतीय कोटा यूजी और पीजी सीटों के आवंटन के लिए काउंसलिंग आयोजित करने के लिए सहायता प्राप्त कॉलेज / केंद्रीय विश्वविद्यालय / राष्ट्रीय संस्थान / मानित विश्वविद्यालय और राज्य / संघ राज्य क्षेत्र-परामर्श प्राधिकरण ने काउंसलिंग आयोजित करने के लिए आयुष प्रवेश केंद्रीय परामर्श समिति को नामित किया है। सरकारी/सरकारी सहायता प्राप्त/केंद्रीय विश्वविद्यालयों/राष्ट्रीय संस्थानों/मानित विश्वविद्यालयों की

न्यूनतम 15% अखिल भारतीय कोटा यूजी और पीजी सीटों पर प्रवेश के लिए एएसीसीसी, आयुष मंत्रालय द्वारा काउंसिलिंग का आयोजन किया जाता है।

इसके अलावा, एएसीसीसी, आयुष मंत्रालय ने एनसीआईएसएम/एनसीएच के परामर्श से, शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के लिए एएसयूएवंच पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए काउंसिलिंग प्रक्रिया के सुचारु रूप से संचालन के लिए राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों के परामर्श अधिकारियों को निम्नलिखित दिशानिर्देश/अनुसूचियां जारी कीं।

- क) एएसीसीसी-यूजी काउंसिलिंग के लिए व्यापक दिशानिर्देश
- ख) एएसीसीसी-पीजी काउंसिलिंग के लिए व्यापक दिशानिर्देश
- ग) राज्य/संघ राज्य क्षेत्र-यूजी काउंसिलिंग के लिए व्यापक दिशानिर्देश
- घ) राज्य/संघ राज्य क्षेत्र-पीजी काउंसिलिंग के लिए व्यापक दिशानिर्देश
- ङ) एएसीसीसी-यूजी काउंसिलिंग अनुसूची
- च) एएसीसीसी-पीजी काउंसिलिंग अनुसूची
- छ) राज्य/संघ राज्य क्षेत्र-यूजी काउंसिलिंग के लिए काउंसिलिंग अनुसूची
- ज) राज्य/संघ राज्य क्षेत्र-पीजी काउंसिलिंग के लिए काउंसिलिंग अनुसूची
- झ) संस्थान स्तर पर स्ट्रे वैकेंसी राउंड आयोजित करने के लिए मानित विश्वविद्यालयों को व्यापक दिशा-निर्देश।

4.3.1 वार्षिक वर्ष 2021-22 के लिए एआईक्यू-यूजी/पीजी केंद्रीकृत काउंसिलिंग

कोविड-19 महामारी के कारण, शैक्षिक वर्ष 2021-22 के लिए एएसीसीसी-यूजी एवं पीजी काउंसिलिंग जनवरी 2022 में शुरू की गई थी। स्वीकृत एएसीसीसी-यूजी/पीजी काउंसिलिंग योजना-2021 के अनुसार, एएसीसीसी, आयुष मंत्रालय ने सरकारी कॉलेज/ सरकारी सहायता प्राप्त कॉलेज/केंद्रीय विश्वविद्यालय/राष्ट्रीय संस्थान के तहत एएसयू और एच पाठ्यक्रमों की अखिल भारतीय कोटा यूजी और पीजी सीटों में प्रवेश के लिए काउंसिलिंग के लिए चार राउंड (पहला, दूसरा, तीसरा/ मोप-अप, और स्ट्रे वैकेंसी राउंड) आयोजित किए थे। मानित विश्वविद्यालयों की एआईक्यू-यूजी/पीजी सीटों में प्रवेश के लिए, एएसीसीसी, आयुष मंत्रालय ने काउंसिलिंग के तीन राउंड (पहला, दूसरा और तीसरा/मोप-अप) आयोजित किए थे और तीसरे राउंड के बाद खाली रहने वाली सीटों को संबंधित मानित

विश्वविद्यालयों में वापिस कर दिए गए थे और संस्थान स्तर पर स्ट्रे वैकेंसी राउंड आयोजित किए गए थे। इसके अलावा, स्ट्रे वैकेंसी राउंड के बाद, सरकार के तहत स्नातक की खाली सीटों को एएसीसीसी, आयुष मंत्रालय द्वारा आयोजित ऑनलाइन स्पेशल स्ट्रे वैकेंसी राउंड के माध्यम से सहायता प्राप्त कॉलेजों / केंद्रीय विश्वविद्यालयों/राष्ट्रीय संस्थानों को भरा गया था।

4.3.2 वर्ष 2021-22 के लिए एएसीसीसी-यूजी काउंसिलिंग एएसीसीसी-यूजी

एएसीसीसी, आयुष मंत्रालय ने शैक्षणिक वर्ष 2021-22 के लिए 29 जनवरी 2022 से 14 मई 2022 तक एएसीसीसी-यूजी काउंसिलिंग आयोजित की थी। शैक्षणिक वर्ष 2021-22 के लिए भाग लेने वाले संस्थानों और एआईक्यू सीटों का विवरण नीचे दिया गया है:

| एएसीसीसी-यूजी काउंसिलिंग-2021 में एएसयू एंव एच यूजी संस्थानों के प्रतिभागियों की संख्या | | | | | | |
|---|--|----------|--------|-------|------------|-----|
| क्र.सं. | संस्थानों के प्रकार | पद्धति | | | | |
| | | आयुर्वेद | यूनानी | सिद्ध | होम्योपैथी | कुल |
| 1 | सरकारी | 57 | 9 | 2 | 35 | 103 |
| 2 | सरकारी सहायता प्राप्त | 20 | 4 | 0 | 6 | 30 |
| 3 | मानित विश्वविद्यालय | 8 | 1 | 0 | 6 | 15 |
| 4 | राष्ट्रीय संस्थान/केंद्रीय विश्वविद्यालय | 4 | 1 | 0 | 2 | 6 |
| कुल | | 89 | 15 | 2 | 49 | 155 |

| एएसीसीसी-यूजी काउंसिलिंग-2021 के लिए उपलब्ध एआईक्यू सीटें | | | | | | |
|---|---------------------|-----------------|---------|---------|------------|---------------|
| क्र.सं. | संस्थानों के प्रकार | पद्धतिवार सीटें | | | | |
| | | आयुर्वेद | यूनानी | सिद्ध | होम्योपैथी | कुल |
| | | एआईक्यू | एआईक्यू | एआईक्यू | एआईक्यू | एआईक्यू सीटें |
| 1 | सरकारी | 664 | 104 | 24 | 405 | 1197 |
| 2 | सरकारी सहायता | 213 | 27 | 0 | 84 | 315 |

| | | | | | | |
|---|--|-------------|------------|-----------|-------------|-------------|
| | प्राप्त | | | | | |
| 3 | मानित विश्वविद्यालय | 636 | 0 | 0 | 530 | 1166 |
| 4 | राष्ट्रीय संस्थान/केंद्रीय विश्वविद्यालय | 449 | 24 | 0 | 117 | 475 |
| 5 | दिल्ली विश्वविद्यालय | 64 | 64 | 0 | 103 | 231 |
| | कुल | 2026 | 219 | 24 | 1239 | 3508 |

4.3.3 शैक्षणिक वर्ष 2021-22 के लिए एएसीसीसी-पीजी काउंसिलिंग

एएसीसीसी, आयुष आयुष ने निर्धारण वर्ष 2021-22 के लिए 17 जनवरी 2022 से 25 मार्च 2022 तक एएसीसीसी-पीजी काउंसिलिंग आयोजित की गई थी। आकलन वर्ष 2021-22 के लिए भाग लेने वाले संस्थानों और एआईक्यू सीटों का विवरण नीचे दिया गया है:

| क्र.सं. | संस्थानों का प्रकार | एएसीसीसी-पीजी काउंसिलिंग-2021 में एएसयू एंव एच यूजी संस्थानों के प्रतिभागियों की संख्या | | | | |
|---------|--|---|--------|-------|------------|-----|
| | | आयुर्वेद | यूनानी | सिद्ध | होम्योपैथी | कुल |
| 1 | सरकारी | 36 | 6 | 2 | 17 | 61 |
| 2 | सरकारी सहायता प्राप्त | 2 | 0 | 0 | 0 | 2 |
| 3 | मानित विश्वविद्यालय | 7 | 1 | 0 | 3 | 11 |
| 4 | राष्ट्रीय संस्थान/केंद्रीय विश्वविद्यालय | 4 | 4 | 1 | 2 | 10 |

| | | | | | |
|-----|----|----|---|----|----|
| कुल | 49 | 11 | 3 | 22 | 84 |
|-----|----|----|---|----|----|

| क्र.सं. | संस्थानों का प्रकार | एएसीसीसी-यूजी काउंसिलिंग-2021 के लिए उपलब्ध एआईक्यू सीटें | | | | |
|------------|--|---|------------|-----------|------------|---------------|
| | | आयुर्वेद | यूनानी | सिद्ध | होम्योपैथी | कुल |
| | | एआईक्यू | एआईक्यू | एआईक्यू | एआईक्यू | एआईक्यू सीटें |
| 1 | सरकारी | 218 | 22 | 14 | 56 | 310 |
| 2 | सरकारी सहायता प्राप्त | 06 | 0 | 0 | 0 | 6 |
| 3 | मानित विश्वविद्यालय | 347 | 0 | 0 | 66 | 413 |
| 4 | राष्ट्रीय संस्थान/केंद्रीय विश्वविद्यालय | 192 | 99 | 29 | 50 | 370 |
| 5 | बीएचयू आंतरिक | 25 | 0 | 0 | 0 | 25 |
| 6 | मानित विश्वविद्यालय | 48 | 6 | 0 | 4 | 58 |
| कुल | | 836 | 127 | 43 | 176 | 1182 |

4.3.4 शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के लिए एआईक्यू-यूजी/पीजी केंद्रीकृत काउंसिलिंग

अनुमोदित एएसीसीसी-यूजी/पीजी काउंसिलिंग योजना-2022 के अनुसार, एएसीसीसी, आयुष मंत्रालय सरकारी कॉलेज/सरकारी सहायता प्राप्त कॉलेज/केंद्रीय विश्वविद्यालय/राष्ट्रीय संस्थानों के अधीन एएसयू और एच पाठ्यक्रम की अखिल भारतीय कोटा यूजी और पीजी सीटों में प्रवेश के लिए काउंसिलिंग के चार राउंड (प्रथम, द्वितीय, तृतीय/मॉप-अप और स्ट्रै वेकेंसी राउंड) आयोजित करता है। मानित

विश्वविद्यालयों की एआईक्यू-यूजी/पीजी सीटों में प्रवेश के लिए, एएसीसीसी, आयुष मंत्रालय ने काउंसिलिंग के तीन राउंड (पहला, दूसरा और तीसरा/मोप-अप) आयोजित किए थे और तीसरे राउंड के बाद खाली रहने वाली सीटों को संबंधित मानित विश्वविद्यालयों में वापिस कर दिए जाते हैं और संस्थान स्तर पर स्ट्रे वेंकेंसी राउंड आयोजित किए जाते हैं।

4.3.5 शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के लिए आयुष-यूजी काउंसिलिंग

एएसीसीसी, आयुष मंत्रालय शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के लिए 10 नवंबर 2022 से 28 जनवरी 2023 तक एएसीसीसी-यूजी काउंसिलिंग आयोजित कर रहा है। शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के लिए भाग लेने वाले संस्थानों और एआईक्यू सीटों का विवरण नीचे दिया गया है:

| एएसीसीसी-यूजी काउंसिलिंग-2022 में एएसयू एंव एच यूजी संस्थानों के प्रतिभागियों की संख्या | | | | | | |
|---|--|-----------------------------|--------|-------|------------|-----|
| क्र.सं. | संस्थानों का प्रकार | दिनांक 20/12/2022 तक आंकड़े | | | | |
| | | आयुर्वेद | यूनानी | सिद्ध | होम्योपैथी | कुल |
| 1 | सरकारी | 54 | 4 | 2 | 37 | 97 |
| 2 | सरकारी सहायता प्राप्त | 18 | 3 | 0 | 6 | 27 |
| 3 | मानित विश्वविद्यालय | 9 | 1 | 0 | 7 | 17 |
| 4 | राष्ट्रीय संस्थान/केंद्रीय विश्वविद्यालय | 5 | 1 | 1 | 2 | 9 |
| कुल | | 86 | 9 | 3 | 52 | 150 |

| एएसीसीसी-यूजी काउंसिलिंग-2022 के लिए उपलब्ध एआईक्यू सीटें | | | | | | |
|---|-----------------------|-----------------------------|---------|---------|------------|---------------|
| क्र.सं. | संस्थानों का प्रकार | दिनांक 20/12/2022 तक आंकड़े | | | | |
| | | आयुर्वेद | यूनानी | सिद्ध | होम्योपैथी | कुल |
| | | एआईक्यू | एआईक्यू | एआईक्यू | एआईक्यू | एआईक्यू सीटें |
| 1 | सरकारी | 627 | 44 | 24 | 412 | 1107 |
| 2 | सरकारी सहायता प्राप्त | 191 | 27 | 0 | 84 | 302 |

| | | | | | | |
|------------|--|-------------|------------|-----------|-------------|-------------|
| 3 | मानित विश्वविद्यालय | 820 | 50 | 0 | 700 | 1570 |
| 4 | राष्ट्रीय संस्थान/केंद्रीय विश्वविद्यालय | 384 | 24 | 30 | 117 | 555 |
| कुल | | 2022 | 145 | 54 | 1313 | 3534 |

4.3.6 शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के लिए आयुष-पीजी काउंसिलिंग

एएसीसीसी शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के लिए 5 जनवरी 2022 से 28 मार्च 2023 तक एएसीसीसी-पीजी काउंसिलिंग आयोजित कर रहा है। शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के लिए भाग लेने वाले संस्थानों और एआईक्यू सीटों का विवरण नीचे दिया गया है:

| एएसीसीसी-पीजी काउंसिलिंग-2022 में एएसयू एंव एच यूजी संस्थानों के प्रतिभागियों की संख्या | | | | | | |
|---|--|-----------------------------|-----------|----------|------------|-----------|
| क्र.सं. | संस्थानों का प्रकार | दिनांक 20/12/2022 तक आंकड़े | | | | |
| | | आयुर्वेद | यूनानी | सिद्ध | होम्योपैथी | कुल |
| 1 | सरकारी | 31 | 3 | 2 | 18 | 54 |
| 2 | सरकारी सहायता प्राप्त | 6 | 2 | 0 | 2 | 10 |
| 3 | मानित विश्वविद्यालय | 7 | 1 | 0 | 3 | 11 |
| 4 | राष्ट्रीय संस्थान/केंद्रीय विश्वविद्यालय | 4 | 4 | 1 | 2 | 11 |
| कुल | | 48 | 10 | 3 | 25 | 86 |

| एएसीसीसी-पीजी काउंसिलिंग-2022 के लिए उपलब्ध एआईक्यू सीटें | | | | | | |
|---|---------------------|-----------------------------|---------|---------|------------|---------------|
| क्र.सं. | संस्थानों का प्रकार | दिनांक 20/12/2022 तक आंकड़े | | | | |
| | | आयुर्वेद | यूनानी | सिद्ध | होम्योपैथी | कुल |
| | | एआईक्यू | एआईक्यू | एआईक्यू | एआईक्यू | एआईक्यू सीटें |
| 1 | सरकारी | 191 | 14 | 14 | 58 | 277 |

| | | | | | | |
|------------|--|------------|-----------|-----------|------------|-------------|
| 2 | सरकारी सहायता प्राप्त | 06 | 17 | 0 | 4 | 27 |
| 3 | मानित विश्वविद्यालय | 378 | 9 | 0 | 69 | 456 |
| 4 | राष्ट्रीय संस्थान/केंद्रीय विश्वविद्यालय | 183 | 35 | 09 | 69 | 296 |
| 5 | बीएचयू आंतरिक | 25 | 0 | 0 | 0 | 25 |
| कुल | | 783 | 75 | 23 | 200 | 1081 |

4.4 अखिल भारतीय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा (एआईएपीजीईटी)

एनसीआईएसएम/एनसीएच ने आयुष मंत्रालय के परामर्श से शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के लिए एएसयू एंड एच स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए एआईएपीजीईटी-2022 आयोजित करने के लिए राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) को नामित किया गया। एनटीए ने 15 अक्टूबर, 2022 को एआईएपीजीईटी-2022 का आयोजन किया था, और परिणाम 9 नवंबर, 2022 को घोषित किया गया था। एआईएपीजीईटी -2022 परीक्षा में उपस्थित होने वाले उम्मीदवारों की श्रेणी-वार सूची इस प्रकार है:

| विषय | सामान्य | सामा.- ईडब्ल्यूएस | ओबीसी- एनसीएल | एससी | एसटी | पीडब्ल्यूडी | कुल |
|------------|---------|----------------------|------------------|------|------|-------------|-------|
| आयुर्वेद | 7096 | 1756 | 9169 | 2488 | 899 | 133 | 21521 |
| होम्योपैथी | 2755 | 466 | 2998 | 1075 | 344 | 61 | 7699 |
| सिद्ध | 50 | 3 | 415 | 113 | 1 | 5 | 587 |
| यूनानी | 639 | 279 | 886 | 36 | 13 | 13 | 1866 |
| कुल | 10540 | 2504 | 13468 | 3712 | 1257 | 192 | 31673 |

4.5 देश भर में राज्य/संघ राज्य क्षेत्र-वार आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध, सोवा-रिग्पा और होम्योपैथी कॉलेज/संस्थान

| क्र.सं. | राज्य | आयुर्वेद | यूनानी | सिद्ध | सोवा-रिग्पा | होम्योपैथी |
|---------|----------------|----------|--------|-------|-------------|------------|
| 1. | आंध्र प्रदेश | 3 | 1 | - | - | 7 |
| 2. | अरुणाचल प्रदेश | - | - | - | - | 1 |
| 3. | असम | 1 | - | - | - | 3 |
| 4. | बिहार | 8 | 5 | - | - | 15 |
| 5. | छत्तीसगढ़ | 6 | 1 | - | - | 3 |
| 6. | गोवा | 2 | - | - | - | 1 |
| 7. | गुजरात | 39 | - | - | - | 52 |
| 8. | हरियाणा | 13 | - | - | - | 1 |
| 9. | हिमाचल प्रदेश | 4 | - | - | 1 | 1 |
| 10. | दिल्ली | 3 | 2 | - | - | 2 |
| 11. | जम्मू-कश्मीर | 2 | 4 | - | - | - |
| 12. | झारखंड | 1 | - | - | - | 7 |
| 13. | कर्नाटक | 90 | 6 | - | 1 | 19 |
| 14. | केरल | 18 | 1 | 1 | - | 6 |
| 15. | मध्य प्रदेश | 33 | 4 | - | - | 27 |
| 16. | महाराष्ट्र | 96 | 7 | - | - | 67 |
| 17. | ओडिशा | 6 | - | - | - | 7 |
| 18. | पंजाब | 17 | 1 | - | - | 4 |
| 19. | राजस्थान | 12 | 3 | - | - | 13 |
| 20. | तमिलनाडु | 8 | 1 | 12 | - | 14 |
| 21. | तेलंगाना | 2 | 2 | - | - | 6 |
| 22. | उत्तर प्रदेश | 86 | 16 | - | 1 | 12 |
| 23. | उत्तराखंड | 19 | 1 | - | - | 2 |
| 24. | पश्चिमी बंगाल | 4 | 1 | - | 1 | 12 |
| 25. | चंडीगढ़ | 1 | - | - | - | 1 |

| | | | | | | |
|----------------|----------|------------|-----------|-----------|----------|------------|
| 26. | मेघालय | 1 | - | - | - | 1 |
| 27. | पुडुचेरी | 1 | - | - | - | - |
| 28. | सिक्किम | - | - | - | 1 | - |
| 29. | लद्दाख | - | - | - | 2 | - |
| | | 476 | 56 | 13 | 7 | 284 |
| कुल योग | | 836 | | | | |

अध्याय 5

आयुष मंत्रालय के अधीन संगठनों से जन स्वास्थ्य सेवाएं

आयुष मंत्रालय में कुल पांच अनुसंधान परिषदें और 12 राष्ट्रीय संस्थान हैं, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करते हैं। आयुष मंत्रालय राज्य/संघ राज्य क्षेत्र सरकारों के माध्यम से राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) की केंद्रीय प्रायोजित योजना भी कार्यान्वित कर रहा है और उनके द्वारा प्रस्तुत राज्य वार्षिक कार्य योजनाओं (एसएएपी) के अनुरूप एनएएम दिशानिर्देशों के प्रावधान के अनुसार विभिन्न गतिविधियों के तहत उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान करके देश में आयुष उपचार सुविधा प्रदान करने के उनके प्रयासों के लिए सहायता कर रहा है।

5.1 आयुष मंत्रालय के तहत संगठनों से ओपीडी रोगी आंकड़े

(1 जनवरी 2022 से 31 दिसंबर 2022 तक)

| क्र.सं. | संगठन का नाम | ओपीडी रोगियों की संख्या | आईपीडी रोगियों की संख्या |
|---------|--|-------------------------|--------------------------|
| 1. | राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर | 2,96,698 | 50,221 |
| 2. | आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, जामनगर | 2,85,196 | 4,055 |
| 3. | अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, नई दिल्ली | 2,53,154 | 3,234 |
| 4. | पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं लोक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, पासीघाट | 4,164 | शून्य |
| 5. | पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान, शिलांग | 41,200 | 399 |
| 6. | मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, दिल्ली | 25,355 | शून्य |
| 7. | राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान, पुणे | 42,694 | शून्य |
| 8. | राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान, बेंगलोर | 1,32,471 | 40,036 |
| 9. | राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान, चेन्नई | 5,12,069 | 24,474 |

| | | | |
|----------------|--|------------------|-----------------|
| 10. | राष्ट्रीय सोवा-रिग्पा संस्थान, लेह, लद्दाख | 13,450 | शून्य |
| 11. | राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान, कोलकाता | 3,29,960 | 659 |
| 12. | केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद | 5,16,719 | 4,159 |
| 13. | केंद्रीय योग व प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद | 12,833 | शून्य |
| 14. | केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद | 3,41,787 | 6,671 |
| 15. | केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद | 1,35,834 | 88 |
| 16. | केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद | 6,37,694 | 14,376 |
| कुल योग | | 35,81,278 | 1,48,372 |

5.2 अनुसंधान उन्मुख जन स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रम और आउटरीच गतिविधियां

5.2.1 जनजातीय स्वास्थ्य देखभाल अनुसंधान कार्यक्रम-वार रोगियों/लाभार्थियों के आंकड़े

| क्र.सं. | संगठन का नाम | सर्वेक्षण किए गए लाभार्थियों की संख्या | चिकित्सा सहायता प्राप्त करने वाले रोगियों की संख्या |
|----------------|--|---|---|
| 1. | केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद | 80,960 | 53,501 |
| 2. | केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद | 61,253 | 15,925 |
| कुल योग | | 1,42,213 | 69,426 |

जनजातीय स्वास्थ्य देखभाल अनुसंधान कार्यक्रम के अधीन, सीसीआरएस ने 66 स्थानीय स्वास्थ्य परंपराओं/लोक दावों को भी प्रलेखित किया है।

5.2.2 अनुसूचित जाति उप-योजना आंकड़ों के तहत मोबाइल स्वास्थ्य सेवा कार्यक्रम

| क्र.सं. | संगठन का नाम | सर्वेक्षण किए गए लाभार्थियों की संख्या | चिकित्सा सहायता प्राप्त करने वाले रोगियों की संख्या |
|---------|---|---|---|
| 1. | केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद | 1,36,682 | 1,16,105 |
| 2. | केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद | 6,82,733 | 59,943 |
| कुल योग | | 8,19,415 | 1,76,048 |

5.2.3 अनुसूचित जाति उप-योजना आंकड़ों के तहत प्रजनन और बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम

| क्र.सं. | संगठन का नाम | सर्वेक्षण किए गए लाभार्थियों की संख्या | चिकित्सा सहायता प्राप्त करने वाले रोगियों की संख्या |
|---------|---|---|---|
| 1. | केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद | 91,088 | 83,563 |
| 2. | केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद | 6,600 | 6,600 |
| कुल योग | | 97,688 | 90,163 |

5.3 1 जनवरी, 2022 से 31 दिसंबर, 2022 तक स्वास्थ्य शिविरों की संख्या

| क्र.सं. | संगठन का नाम | स्वास्थ्य शिविर की संख्या |
|---------|--|------------------------------|
| 1. | राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर | 75 |
| 2. | आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, जामनगर | 120 |
| 3. | अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, नई दिल्ली | 247 |

| | | |
|----------------|---|-------------|
| 4. | पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं लोक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, पासीघाट | 3 |
| 5. | पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान, शिलाँग | 30 |
| 6. | मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, दिल्ली | शून्य |
| 7. | राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान, पुणे | 36 |
| 8. | राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान, बेंगलोर | 35 |
| 9. | राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान, चेन्नई | 20 |
| 10. | राष्ट्रीय सोवा-रिग्पा संस्थान, लेह, लद्दाख | 128 |
| 11. | राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान, कोलकाता | 13 |
| 12. | केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद | 297 |
| 13. | केंद्रीय योग व प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद | 82 |
| 14. | केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद | 562 |
| 15. | केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद | 143 |
| 16. | केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद | 2504 |
| कुल योग | | 4295 |

अध्याय 6

आयुष क्षेत्र में अनुसंधान

6.1 अवलोकन

सरकार के कार्य आवंटन नियमों के अनुसार, आयुष मंत्रालय स्वास्थ्य परिचर्या की आयुष चिकित्सा पद्धतियों में सहायता सहित अनुसंधान एवं विकास के समन्वय और प्रचार के लिए अधिदेशित है। मंत्रालय के अधीन पांच स्वायत्त संगठन हैं जो संबंधित चिकित्सा पद्धतियों में साक्ष्य आधारित अनुसंधान का समान उद्देश्य रखते हैं। ये पांच अनुसंधान परिषदे हैं:

1. केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस)
2. केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरवाईएन)
3. केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरयूएम)
4. केन्द्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद (सीसीआरएस)
5. केन्द्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (सीसीआरएच)

इन स्वायत्त संगठनों के अलावा, आयुष मंत्रालय आयुर्ज्ञान योजना (केन्द्रीय क्षेत्र योजनाएं) भी चलाता है, जिसमें अनुसंधान और नवाचार योजना के एक घटक के रूप में शामिल हैं। आयुष चिकित्सा पद्धतियों में अनुसंधान के दायरे को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयुष क्षेत्र की अनुसंधान आवश्यकताओं के लिए चिकित्सा संस्थानों, वैज्ञानिक अनुसंधान एवं विकास संस्थानों, विश्वविद्यालयों और संगठनों की क्षमताओं का लाभ उठाने के लिए आयुर्ज्ञान योजना के इस अनुसंधान और नवाचार घटक (पूर्व में बहिर्वर्ती अनुसंधान योजना) को आरंभ किया गया था। आयुर्ज्ञान योजना के अनुसंधान और नवाचार घटक को राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम की सहायता से रोग के बोझ के आधार पर प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में अनुसंधान एवं विकास को प्रोत्साहित करने के लिए तैयार किया गया है। मौलिक अवधारणाएं, बुनियादी सिद्धांत, आयुष पद्धतियों के सिद्धांत, आयुष औषधों का मानकीकरण/विधिमान्यकरण और नई औषध का विकास सहायता के प्राथमिकता वाले क्षेत्र हैं। अनुसंधान योजना के परिणामों ने आयुष चिकित्सा पद्धतियों की प्रभावशीलता को सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया है और नई तकनीक विकसित

करने में सफल रहे हैं तथा जनस्वास्थ्य वितरण के हित में आयुष की क्षमता का उपयोग किए जाने की संभावना है।

6.2 राष्ट्रीय आयुष अनुसंधान संघ

आयुष मंत्रालय ने आयुष चिकित्सा पद्धतियों में उच्च स्तर, वैश्विक मानक गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान की एक संस्थागत प्रणाली विकसित करने के लिए नीति आयोग के परामर्श से राष्ट्रीय आयुष अनुसंधान संघ की भी परिकल्पना की है, जिसमें आयुष मंत्रालय, डीएसआईआर, डीबीटी और डीएसटी शामिल हैं। यह संघ बुनियादी विज्ञान और आयुष के वैज्ञानिकों के साथ बहुविषयक दृष्टिकोण के साथ कार्य करेगा ताकि आयुष अनुसंधान को अपनाया जा सके, एकसाथ बैठकर स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों की कल्पना कर सकें और सभी के लिए स्वास्थ्य के लक्ष्य को पूरा करने के लिए विकास और अनुसंधान पहलों की योजना बना सकें और उन्हें क्रियान्वित कर सकें।

इस संघ का प्रयोजन नीतिगत पहलों में प्रभावशाली क्रियान्वयन और जन स्वास्थ्य में अनुसंधान एवं विकास परिणामों को सामने लाने के लिए अनुसंधान से नीति सहयोग मॉडल तैयार करना है। यह पहल 75वें स्वतंत्रता दिवस पर माननीय प्रधानमंत्री के हाल के संबोधन को प्रतिध्वनित करती है, जहां माननीय प्रधानमंत्री ने 'जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान और जय अनुसंधान' का नारा दिया है। मंत्रिमंडल सचिव ने सैद्धांतिक रूप से मंजूरी दे दी है और आयुष मंत्रालय (अध्यक्ष के रूप में), विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी), वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर), वाणिज्य विभाग (डीओसी), पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफसीसीआई) और उद्योग तथा आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) के सचिवों का एक संघ बनाया गया है। निधियन तंत्र और आगे की रूपरेखा तैयार करने के लिए एक उप-समिति भी बनाई गई है।

6.3 पांच अनुसंधान परिषदों द्वारा वर्ष 2022 में किए गए अनुसंधान कार्यकलापों का ब्यौरा

6.3.1 औषधीय पादप अनुसंधान

| | | |
|----|--|---|
| 1. | केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद | 4 आईएमआर परियोजनाएं पूरी की गई हैं। 43 आईएमआर परियोजनाएं और 2 सहयोगात्मक परियोजनाएं प्रगति पर हैं। इसके अतिरिक्त, एनएमपीबी द्वारा स्वीकृत 3 परियोजनाएं भी चल रही हैं। विभिन्न आईएमआर परियोजनाओं के लिए कच्ची दवाओं की आवश्यकता को पूरा करने के लिए कुल 36 मेडिको-एथनो वानस्पतिक सर्वेक्षण दौरे आयोजित किए गए और विभिन्न लघु दौरे किए गए। कुल 815 हर्बेरियम शीट और 2315 किग्रा (लगभग) कच्ची दवा एकत्र की गई। |
| 2. | केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद | 05 आईएमआर परियोजनाएं पूरी की जा चुकी हैं। 02 आईएमआर परियोजनाएं पूरी की गई हैं, वर्ष 2022 में 01 ईएमआर परियोजना चल रही है। 2022 में 'औषधीय पादपों का एकत्रण' के लिए 07 सर्वेक्षण आरंभ किए गए, जिनमें से 03 पूरे कर लिए गए हैं। 'हर्बेरियम नमूनों का प्रलेखीकरण और अंकीकरण' के लिए 02 परियोजनाएं चल रही हैं। 'औषधीय पौधों की कृषि' पर 04 परियोजनाएं और 'औषध नमूनों का रखरखाव' पर 05 परियोजनाएं चल रही हैं। |
| 3. | केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद | वर्ष 2022 में औषधीय पादप अनुसंधान से संबंधित 04 परियोजनाएं पूरी की गईं। |
| 4. | केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद | भेषजसतर्कता कार्यकलाप = एचपीआई संशोधन, 21 (पी+सी) औषधीय पादपों का संग्रहण = 42 औषधीय पादपों की कृषि = 104 |

6.3.2 औषध मानकीकरण अनुसंधान और भेषजविज्ञान अनुसंधान

| | | |
|----|--------------------------------------|---|
| 1. | केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान | 13 आईएमआर और एक सहयोगात्मक परियोजना पूरी की जा चुकी है। 28 अंतर्वर्ती अनुसंधान (आईएमआर) परियोजनाएं और 2 |
|----|--------------------------------------|---|

| | | |
|----|---|--|
| | परिषद | सहयोगात्मक परियोजनाएं प्रगति पर हैं। भेषजविज्ञान अनुसंधान के लिए 2 आईएमआर परियोजनाएं और 2 सहयोगात्मक अनुसंधान अध्ययन प्रगति पर हैं। |
| 2. | केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद | 2022 में औषध मानकीकरण के लिए 35 अंतर्वर्ती अनुसंधान परियोजनाएं आरंभ की गईं जिनमें से 20 पूरी की जा चुकी हैं। 124 मोनोग्राफों का संशोधन किया गया और पीसीआईएम एंड एच को रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। एसओपी का विकास और 25 यूनानी सम्मिश्रित औषधयोगों के भेषजसंहितागत मानकों का चुनाव किया गया जिसमें से 15 औषधयोगों का कार्य पूरा कर लिया गया है। राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा फार्मूलरी का संशोधन कार्य पूरा हो गया है। 15 औषधों के लिए औषध नमूना विश्लेषण किया गया। |
| 3. | केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद | वर्ष 2022 में औषध मानकीकरण अनुसंधान से संबंधित 07 परियोजनाएं पूरी की गईं। |
| 4. | केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद | क) एचपीआई खंड XI के लिए 51 औषध मोनोग्राफों का पुनरीक्षण पूरा किया गया। ख) एचपीआई के 21 औषधों का संशोधन पूरा किया गया। ग) वार्षिक कार्य 2020-21 (बैकलॉग औषध) के 15 औषधों का कार्य किया गया और "होम्योपैथिक औषधों का मानकीकरण" (खंड- I का संशोधित पाठ) पुस्तक के 08 औषधों का कार्य पूरा किया गया। 08 औषधों का कीमो प्रोफाइलिंग अध्ययन पूरा किया गया। घ) एक्यूट ओरल और सब-एक्यूट ओरल टॉक्सिसिटी अध्ययनों में होम्योपैथी औषधियों के सुरक्षा मूल्यांकन परियोजना के अंतर्गत तीन औषधों आर्सेनिक एल्बम, फेरम फॉस और |

| | | |
|--|--|--|
| | | <p>फास्फोरस पर एक्यूट और सब-एक्यूट टॉक्सिसिटी अध्ययन पूरा किया गया।</p> <p>ड) तीन औषधों आर्सेनिक एल्बम, फेरम फॉस और फास्फोरस पर प्रायोगिक पशु अध्ययन पर होम्योपैथी औषधियों के इम्यूनोमॉड्यूलेटरी प्रभाव के मूल्यांकन की परियोजना पूरी की गई।</p> <p>च) वयस्क ज़ेब्राफिश (डैनियोरियो) में होम्योपैथी औषधियों के एंटीइन्फ्लेमेटिव और एंटी-इंफ्लेमेटरी प्रभाव के मूल्यांकन की परियोजना के अंतर्गत कैलेंडुला ऑफिसिनैलिस (Ø और 6सी) पर अध्ययन पूरा किया गया।</p> <p>छ) ज़ेब्राफिश भ्रूण विकास पर होम्योपैथिक मदर टिंचर्स और उनकी क्षमताओं की सुरक्षा के मूल्यांकन की एक अन्य परियोजना में तीन औषधों हयोसायमस नाइगा, जानोसिया अशोका, सरसापैरिला पर अध्ययन पूरा हुआ।</p> <p>ज) ज़ेब्रा-फिश मॉडल पर होम्योपैथी औषधों के भेषजविज्ञान प्रभाव के मूल्यांकन की परियोजना के तहत चार औषधों आर्टेमिसिया वल्गेरिस, सिकुटा विरोसा, क्यूप्रम मेटालिकम, बेलाडोना पर अध्ययन पूरे किए गए।</p> |
|--|--|--|

6.3.3 पूर्व-नैदानिक अध्ययन

| | | |
|----|--|--|
| 1. | केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद | 7 आईएमआर परियोजनाएं पूरी की जा चुकी हैं। 33 आईएमआर परियोजनाएं और 9 सहयोगात्मक अनुसंधान अध्ययन प्रगति पर हैं। |
| 2. | केंद्रीय यूनानी चिकित्सा | एनआरआईयूएमएसडी हैदराबाद और आरआरआईयूएम श्रीनगर में छः यूनानी औषधयोगों (मजून पियाज, त्रियाके अफायी, मजून |

| | | |
|----|------------------------------------|--|
| | अनुसंधान परिषद | उस्बा, खमीरे गाओजाबान सादा, कुरसे मुल्लायिन और कैप्सूल मुबारक) पर एक्यूट और बार-बार खुराक (28-दिन) पर ओरल विषाक्तता अध्ययन पूरा किया गया। इस समय, एनआरआईयूएमएसडी हैदराबाद और आरआरआईयूएम श्रीनगर में शरबत एजाज, शरबत उन्नाब, शरबत तूत सियाह, इन्निफल शाहत्रा, सूफूफ दामा हल्दी वाला, और कुर्स असफर पर एक्यूट और सब-एक्यूट (28-दिन तक बार-बार खुराक) विषाक्तता चल रही है। |
| 3. | केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद | वर्ष 2022 में पूर्व-नैदानिक अध्ययनों से संबंधित 14 परियोजनाएं पूरी की गईं। |
| 4. | केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद | प्रतिवेदन अवधि के दौरान 22 पूर्व-नैदानिक अध्ययन किए गए, जिनमें से 13 अध्ययन अन्य संस्थानों के सहयोग से किए गए और 09 अध्ययन अंतर्गृह अध्ययन थे। |

6.3.4 नैदानिक अनुसंधान

| | | |
|----|--|---|
| 1. | केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद | क) अंतःवर्ती नैदानिक अनुसंधान (आईएमआर) : अंतःवर्ती नैदानिक अनुसंधान के अंतर्गत 10 रोगों/अवस्थाओं जैसे लौहन्यूनताजन्य रक्ताल्पता, एब्नोर्मल यूटीरीन ब्लीडिंग, यूरोलिथियासिस, डैड्रफ, ल्यूकोरिया, सोरायसिस, आमाजीर्ण, ग्रहणी और बाहरी घाव पर 13 अंतः वर्ती नैदानिक अनुसंधान परियोजनाएं पूर्ण कर ली गई हैं तथा 17 रोगों/अवस्थाओं जैसे यूरोलिथियासिस, कॉग्निटिव डेफिसिट, ड्राई एज़ से संबंधित मेक्यूलर डिजेनेरेशन सिंड्रोम, आईटी पेशेवरों के बीच व्यावसायिक तनाव, लौहन्यूनताजन्य रक्ताल्पता, नर्सों में व्यावसायिक तनाव, पूर्व-उच्चरक्तचाप, |
|----|--|---|

| | | |
|--|--|---|
| | | <p>फिस्टुला इन एनो, शराब निर्भरता, वातरक्त, मोटापा, एक्जिमा, ल्यूकोरिया, नॉन अल्कोहलिक फैटी लीवर रोग (एनएफएलडी), सबक्लिनिकल हाइपोथायरायडिज्म पर 17 आईएमआर परियोजनाएं चल रही हैं। “पूरे भारत में सीसीआरएस के बहिरंग विभाग में चयनित रसौषधियों के उपयोग में संभावित सुरक्षात्मक मामलों तथा औषध पत्र के प्रलेखीकरण हेतु एक संभावित ओपन लेबल अवलोकनार्थ अध्ययन” पूरा कर लिया गया है और कैंसर के लिए आयुर्वेद चिकित्सा और स्पष्ट रूप से स्वस्थ व्यक्तियों के बीच आयुर्वेद आधारित जीवन शैली एडवोकेसी और अभ्यासों का प्रभाव पर 2 परियोजनाएं भी चल रही हैं।</p> <p>ख) सहयोगात्मक नैदानिक अनुसंधान: सहयोगात्मक नैदानिक अनुसंधान के अंतर्गत, प्रतिष्ठित संस्थानों के सहयोग से सात परियोजनाएं यथा प्री-डायबिटिक व्यक्तियों के लिए आयुष-डी, टाइप-II डायबिटीज़ मेलिटस हेतु आयुष-डी तथा क्रोनिक लिम्फोएडोना रोगियों में आयुष एसएल, आयुर्वेद नैदानिक पद्धतियों का पुष्टिकरण और विश्वसनीयता जांच, प्रसव पूर्व देखभाल हेतु प्रजनन और बाल स्वास्थ्य; क्लिनिकल रिकवरी और पोस्ट ऑपरेटिव कार्डियोथोरेसिक सर्जरी पर आयुष सीसीटी और राजयोग मेडिटेशन, अपर्याप्त स्तनपान में आयुष-एसएस ग्रेन्यूअल्स परियोजनाएं पूरी की गईं और 12 परियोजनाएं अर्थात् कैंसर रोगियों के लिए कार्कटोल-एस, ब्रांकियल अस्थमा में आयुष ए, एबनॉर्मल यूटरीन ब्लीडिंग के लिए आयुष-एलएनडी; एटीटी पर क्षयरोग के रोगियों में सहायक उपचार के रूप में हेपेट्रो</p> |
|--|--|---|

| | | |
|----|--|---|
| | | <p>प्रोटेक्टिव के लिए पीटीके; एडीएचडी में आयुर्वेदिक चिकित्सा; उच्चरक्तचाप के लिए सर्पगंधा मिश्रण और स्वस्थ वयस्कों में विरेचन द्वारा प्रेरित गट बैक्टीरियल मॉड्यूलेशन, रेडिकुलापैथी के साथ लम्बर डिस हर्नियेशन में मर्म थेरेपी, माइग्रेन के प्रबंधन में आयुष एम-3, गैर-अल्कोहलिक फैटी लीवर रोग के लिए आयुष-जीएमएच, स्वस्थ व्यक्तियों के बीच नाक बाधा कार्य पर प्राइमरी नी ऑस्टियोआर्थराइटिस और इंद्रा नेजल तेल टपकाना (प्रतिमर्शनस्य) के प्रभाव पर परियोजनाएं चल रही हैं।</p> <p>ग) ज्ञान, मनोवृत्ति और अभ्यास संबंधी एक अध्ययन पूरा हो चुका है। इसके अतिरिक्त, व्यवस्थित समीक्षा पर 10 अध्ययन पूरे किए जा चुके हैं।</p> <p>घ) कोविड-19 अध्ययन: सीसीआरएस ने कोविड-19 पर 3 शोध अध्ययन किए हैं जिनमें रोगनिरोधी अध्ययन, इंटरवेंशनल अध्ययन (कोविड-19 और पोस्ट कोविड पर), अवलोकन अध्ययन, सर्वेक्षण अध्ययन और इंद्रा-म्यूरल अनुसंधान के माध्यम से व्यवस्थित समीक्षा और इसके परिधीय संस्थानों के माध्यम से सहयोगी अनुसंधान मोड शामिल हैं। इनमें से 2 परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं और 1 चल रही है।</p> |
| 2. | <p>केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद</p> | <p>20 नए भेषजसंहितागत औषधयोगों की सुरक्षा और प्रभावकारिता पर सत्यापन अध्ययन शुरू किए गए जबकि 50 औषधों पर अध्ययन जारी रहे। समन-ए-मुफरित (मोटापा) में जवारिश-ए-बिसबासा, सुआल-ए-याबिस (सूखी खांसी) में खमीरा बनफशा और सूरत-ए-इंजाल (शीघ्रपतन) में माजून-ए-पियाज़ सहित तीन औषधों</p> |

| | | |
|----|------------------------------------|---|
| | | पर प्रतिवेदन अवधि के दौरान अध्ययन पूरे किए गए। |
| 3. | केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद | 2022 में नैदानिक अनुसंधान से संबंधित 14 परियोजनाएं पूरी की गईं। |
| 4. | केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद | रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, पिछले वर्ष के 10 नैदानिक अनुसंधान अध्ययनों को जारी रखा गया जिनमें से 04 अध्ययन पूरे किए गए। 04 नए अनुसंधान अध्ययन आरंभ किए गए। प्रतिवेदन वर्ष के दौरान चल रहे अध्ययनों की जांच/नामांकन/अनुवर्ती कार्रवाई जारी रही। |

6.3.5 साहित्यिक अनुसंधान

| | | |
|----|--|---|
| 1. | केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद | 06 आईएमआर परियोजनाएं और 01 सहयोगात्मक परियोजना पूरी की गई है, 16 आईएमआर और 2 सहयोगात्मक परियोजनाएं प्रतिवेदन अवधि के दौरान प्रगति पर हैं। |
| 2. | केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद | साहित्यिक अनुसंधान में तीन नई परियोजनाएँ आरंभ की गई हैं, नामतः किताब अल-अबनिया और हकीक अल-अदविया (फ़ारसी) का उर्दू अनुवाद, यूनानी चिकित्सा का चिकित्सा नैदानिक परिभाषा की व्यवस्थित नामावली में एकीकरण (एसएनओएमईडीसीटी) और रोगों के अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (आईसीडी-11) में शामिल किए जाने के लिए पारंपरिक चिकित्सा अध्याय के मॉड्यूल 2 का विकास। अल-मसैल फील तिब लिल मुतल्लमिन (अरबी) का उर्दू अनुवाद, यूनानी चिकित्सा में मानसिक स्वास्थ्य और मानसिक रोगों पर मोनोग्राफ, हुम्मियत (बुखार) के लिए मानक यूनानी उपचार दिशानिर्देश और अल-मुगनी फाई तदबीर अल अमराज वा मारिफा अल-इलल वा अल-अमराज (अरबी) का उर्दू अनुवाद प्रतिवेदन अवधि |

| | | |
|----|------------------------------------|--|
| | | के दौरान पूरा किया गया है। |
| 3. | केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद | वर्ष 2022 में साहित्यिक अनुसंधान से संबंधित 02 परियोजनाएं पूरी की गईं। |
| 4. | केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद | सीसीआरएच मुख्यालय में 30 जून 2022 को आयोजित एसएबी की 73वीं बैठक में प्रमुख अनुसंधान क्षेत्रों में से एक के रूप में साहित्यिक अनुसंधान को पुनः आरंभ करने की अवधारणा प्रस्तावित की गई थी। जिसमें बोर्ड ने प्राप्त प्रस्तावों की जांच और उनकी समीक्षा के लिए विशेषज्ञ समिति गठित करने की सिफारिश की थी। साहित्यिक अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत 15 इकाइयों/संस्थानों से कुल 39 प्रस्ताव प्राप्त हुए थे। परियोजना के अंतर्गत प्राप्त प्रस्तावों की समीक्षा के लिए सीसीआरएच मुख्यालय में 09 और 10 नवम्बर, 2022 को विशेषज्ञ समिति की बैठक आयोजित की गई थी। विशेषज्ञ समिति की सिफारिशें आगामी एसएबी में आगे के आवश्यक निर्देशों के लिए रखी जाएंगी। |

इलाज-बित-तदबीर (रेजिमेनल थेरेपी) की प्रभावकारिता का मान्यकरण नामतः ; हिजमा बिला शर्त (ड्राई कपिंग), हिजमा बिल शर्त (वेट कपिंग), हिजमा बिल नार (फायर कपिंग), हिजमा मुजलीका (मूविंग कपिंग), हम्माम अल-बुखार (स्टीम बाथ), डल्क मुतादिल (मोडरेट मसाज), नुटूल (फोमेंटेशन), इंकबाब (वेपोराइजेशन) और वेनेसेक्शन (फसाद) विभिन्न रोगों जैसे निकरीस (गाउट), वाज-अल-मफसिल (रुमेटाइड अर्थराइटिस), तहज्जुर-ए मफसिल (ऑस्टियोआर्थराइटिस), तहज्जुर-ए-फुकरत-ई-उनुकिया (सरवाइकल स्पोंडिलोसिस), सिमन मुफरित (मोटापा), शकीका (माइग्रेन), अमराजी-ए मफसिल (मस्कुलोस्केलेटल विकार), बरस (विटिलिगो), दा अल सदफ (सोरायसिस), इल्लिहाब तजावीफ अल-अनफ (साइनोसाइटिस) परिषद के विभिन्न केन्द्रों में जारी रहे। प्रतिवेदन अवधि के दौरान कुल 9882 रोगियों को ये उपचार दिए गए।

6.3.6 योग विज्ञान के क्षेत्र में सीसीआरवाईएन द्वारा किए गए अनुसंधान कार्यकलाप

परिषद निम्नलिखित प्रमुख चिकित्सा के साथ-साथ योग व प्राकृतिक चिकित्सा संस्थानों के साथ सहयोगात्मक अनुसंधान आरंभ करने के लिए सहयोगी अनुसंधान केंद्रों की स्थापना करने की योजना चला रही है : -

6.3.6.1 निमहंस, बैंगलोर के साथ आरंभ की गई अनुसंधान परियोजनाएं:

पूर्ण की गई परियोजनाएं:

1. माइग्रेन से पीड़ित रोगियों के लिए एकीकृत योग मॉड्यूल का विकास और सत्यापन।
2. मल्टीपल स्केलेरोसिस से पीड़ित रोगियों के लिए एकीकृत चिकित्सा मॉड्यूल का विकास और व्यवहार्यता।
3. भारत में मनोचिकित्सकों, न्यूरोलोजिस्ट और न्यूरोसर्जन के बीच योग के संदर्भ में ज्ञान, दृष्टिकोण, अभ्यास (केएपी) और बाधाएं- एक सर्वेक्षण।
4. तनाव के साइको-न्यूरो-एंडोक्रिनोलॉजिकल मार्कर और सिज़ोफ्रेनिया रोगियों की फर्स्ट डिग्री में (एफडीआरएस) योग-आधारित उपचार की प्रतिक्रिया।
5. अवसाद के रोगियों में मिरर न्यूरोन गतिविधि पर योग का प्रभाव: एक ट्रांसक्रैनियल मैग्नेटिक स्टिम्युलेशन स्टडी जिसे "मध्यम से गंभीर अवसादग्रस्त रोगियों में गाबा न्यूरोट्रांसमीटर कमी को ठीक करने में योग की भूमिका" शीर्षक के साथ मूल प्रस्तावित अध्ययन के लिए संशोधित किया गया, एक सिंगल ब्लाइंड और रैंडोमाइज्ड नियंत्रित अध्ययन।

6.3.6.2 संस्कृति फाउंडेशन, मैसूर, कर्नाटक के साथ आरंभ की गई अनुसंधान परियोजनाएं

निम्नानुसार हैं:

पूरी की गई परियोजनाएं

1. शंकराचार्य की योग तरावली पर वेब-सक्षम और सीडी-आधारित मल्टीमीडिया-स्व-शिक्षण कार्यक्रम- विषय-वार और विभिन्न स्तरों पर विषय-वार अन्य खोजें।
2. आवश्यक परिशिष्टों आदि के साथ पंतजलि के योगसूत्रों के दूसरे दो पदों का समाचोलनात्मक संस्करण।
3. 'योग इन पुराण- वॉल्यूम II' पर मूल संस्कृत ग्रंथों के साथ अंग्रेजी में मोनोग्राफ प्रस्तुत करना।
4. घेरण्ड संहिता (हठ-योग के तीन सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथों में से एक) पर विषय-वार वेब-सक्षम और सीडी-आधारित मल्टीमीडिया-स्व-शिक्षण कार्यक्रम और विभिन्न स्तरों पर अन्य खोज।
5. स्वात्माराम की हठ-प्रदीपिका का महत्वपूर्ण संस्करण - आवश्यक परिशिष्टों आदि के साथ 10 अलग-अलग ताड़ के पत्तों और कागज की पांडुलिपियों से वेरिफाई रीडिंग आदि को चिह्नित करके।
6. मूल संस्कृत ग्रंथों के साथ अंग्रेजी में उप-पुराणों में 'योग के सिद्धांतिक और व्यावहारिक पहलुओं की समीक्षा' पर मोनोग्राफ लाना।

6.3.6.3 सीसीआरवाईएन द्वारा किया जा रहा अंतर्वर्ती अनुसंधान (आईएमआर)

निम्नलिखित अनुसंधान प्रारंभ किए गए और इस समय चल रहे हैं:

| क्रं.स. | अनुसंधान परियोजना का शीर्षक |
|---------|--|
| 1 | वैसकुलर डीमेनसिया के रोगियों में संज्ञानात्मक कार्य, दैनिक जीवन के कार्यों, स्व-सूचित अवसाद और एचआरवी पर योग के प्रभावों का मूल्यांकन करने के लिए। |
| 2 | लगातार और पुराने सिरदर्द के रोगियों में दर्द और जीवन की गुणवत्ता पर योग के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए। |
| 3 | घुटने के अस्थिसंधिशोथ के प्रबंधन में दर्द को कम करने, चलने के समय और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए योग उपचार के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए - टू आर्म रेंडेमाइज्ड प्रोस्पेक्टिव नियंत्रण अध्ययन। |

| | |
|---|--|
| 4 | हाइपरटेंसिव और नॉर्मोटेंसिव रोगियों में विभिन्न विश्राम तकनीकों का पालन करते हुए रक्तचाप और एचआरवी पर विश्राम प्रतिक्रिया का मूल्यांकन करना। |
| 5 | तृतीयक मल्टीस्पेशलिटी अस्पतालों में आने वाले भारतीय रोगियों में सीएएम की व्यापकता और धारणा: एक बहु संस्थागत क्रॉस सेक्शनल सर्वेक्षण |

इन अनुसंधान परियोजनाओं के अलावा, एम्स, पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ और कैवल्यधाम, लोनावाला के सहयोग से 27 अनुसंधान परियोजनाएं भी सीसीआरवाईएन में चल रही हैं।

6.3.7 राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय रूप से प्रतिष्ठित इंडेक्सड जर्नल्स में अनुसंधान प्रकाशनों की कुल संख्या

वर्ष 2022 में प्रतिष्ठित राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय इंडेक्सड जर्नल्स में अनुसंधान प्रकाशन (यूजीसी-केयर, पबमेड, वेब ऑफ साइन्स, साइन्स साइटेशन इंडेक्स, स्कोपस)

| क्र.सं. | संगठन का नाम | प्रकाशित लेखों की संख्या |
|---------|---|--------------------------|
| 1. | राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर | 330 |
| 2. | आयुर्वेद शिक्षण और अनुसंधान संस्थान, जामनगर | 29 |
| 3. | अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, नई दिल्ली | 28 |
| 4. | पूर्वोत्तर आयुर्वेद और लोक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, पासीघाट | 05 |
| 5. | पूर्वोत्तर आयुर्वेद और होम्योपैथी अनुसंधान संस्थान, शिलांग | शून्य |
| 6. | मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, नई दिल्ली | शून्य |
| 7. | राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान, पुणे | शून्य |
| 8. | राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान, बेंगलुरु | 16 |
| 9. | राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान, चेन्नई | 48 |
| 10. | राष्ट्रीय सोवा-रिग्पा संस्थान, लेह, लद्दाख | 01 |

| | | |
|----------------|---|------------|
| 11. | राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान, कोलकाता | 11 |
| 12. | केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद् | 133 |
| 13. | केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद् | 06 |
| 14. | केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् | 75 |
| 15. | केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद् | 108 |
| 16. | केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद् | 62 |
| कुल योग | | 852 |

6.3.8 वर्ष 2022 में प्रकाशित पुस्तकें, पुस्तकों में अध्याय, मोनोग्राफ, मैनुअल, पिरियोडिकल आदि

| क्र.सं. | संगठन का नाम | प्रकाशित पुस्तकों/मैनुअल की संख्या |
|---------|---|------------------------------------|
| 1. | राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर | 22 |
| 2. | आयुर्वेद शिक्षण और अनुसंधान संस्थान, जामनगर | 05 |
| 3. | अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, नई दिल्ली | 32 |
| 4. | पूर्वोत्तर आयुर्वेद और लोक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, पासीघाट | 05 |
| 5. | पूर्वोत्तर आयुर्वेद और होम्योपैथी अनुसंधान संस्थान, शिलांग | शून्य |
| 6. | मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, नई दिल्ली | शून्य |
| 7. | राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान, पुणे | शून्य |
| 8. | राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान, बेंगलुरु | 05 |
| 9. | राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान, चेन्नई | 02 |
| 10. | राष्ट्रीय सोवा-रिग्पा संस्थान, लेह, लद्दाख | शून्य |

| | | |
|----------------|---|------------|
| 11. | राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान, कोलकाता | शून्य |
| 12. | केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद | 09 |
| 13. | केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद् | 02 |
| 14. | केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद | 36 |
| 15. | केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद | 53 |
| 16. | केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद | 04 |
| कुल योग | | 175 |

अध्याय 7

राष्ट्रीय आयुष मिशन

7.1 प्रस्तावना

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 14.07.2021 को 01.04.2021 से 31.03.2026 तक 4607.30 करोड़ रु. (केंद्रीय अंशदान के रूप में 3000 करोड़ रु. और राज्य अंशदान के रूप में 1607.30 करोड़ रु.) के वित्तीय परिव्यय के साथ राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) को केंद्रीय प्रायोजित स्कीम के रूप में जारी रखने के लिए मंजूरी दे दी है। यह कहा जा सकता है कि वर्ष 2022-23 में एनएएम ने आयुष अस्पतालों और औषधालयों की संख्या में वृद्धि के माध्यम से आयुष सेवाओं के लिए बेहतर पहुंच प्रदान की, आयुष चिकित्सा पद्धतियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए जमीनी स्तर पर व्यापक प्राथमिक स्वास्थ्य परिचर्या प्रदान करके मौजूदा आयुष औषधालयों और उप-स्वास्थ्य केंद्रों के उन्नयन द्वारा आयुष स्वास्थ्य और वेलनेस केंद्रों का संचालन किया, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी), सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी) और जिला अस्पतालों (डीएच) में आयुष सुविधाओं के सह-स्थापना के माध्यम से आयुष को मुख्यधारा में लाए, आयुष औषधों एवं प्रशिक्षित जनशक्ति और आयुष जन स्वास्थ्य कार्यक्रमों की उपलब्धता सुनिश्चित की। एनएएम का उद्देश्य मौजूदा आयुष शैक्षिक संस्थानों के उन्नयन और उन राज्यों में नए आयुष कॉलेजों की स्थापना करके जहां सरकारी क्षेत्र में आयुष शिक्षण संस्थानों की उपलब्धता अपर्याप्त है, के माध्यम से आयुष शिक्षा की गुणवत्ता में भी सुधार करना है।

वर्ष 2022-23 के दौरान, एनएएम के विभिन्न कार्यक्रमों के लिए मिशन निदेशालय द्वारा 35 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों की राज्य वार्षिक कार्य योजनाओं (एसएएपी) को मंजूरी दी गई है। व्यय विभाग, वित्त मंत्रालय की दिनांक 23.03.2022 के जारी दिशानिर्देश के अनुसरण में 16 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को 206.68 करोड़ रुपए की अनुदान सहायता जारी की गई है।

7.2 जनस्वास्थ्य कार्यक्रम

पिछले अनुभवों के आधार पर और आयुष सेवाओं की कवरेज को व्यापक बनाने के लिए आवश्यकता मूल्यांकन सह आवश्यकता प्रतिक्रिया कार्यनीतियों को व्यवस्थित करने के लिए आयुष मंत्रालय ने इस वर्ष एनएएम में 8 समर्पित आयुष जनस्वास्थ्य कार्यक्रमों को शामिल किया है। यह कार्यक्रम सभी प्रमुख असुरक्षित समूहों के स्वास्थ्य संबंधी मामलों को शामिल करने के लिए बनाए गए हैं जिससे समाज के सभी वर्गों के लिए आयुष सेवाओं की निरंतरता बनी रहेगी। इन कार्यक्रमों की सुपुदगी का परिणाम अंततः देश के हर कोने तक पहुंचेगा। इन आठ कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है:

I. मस्कुलोस्केलेटल विकारों की रोकथाम और प्रबंधन के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम:

ऑस्टियोआर्थराइटिस और अन्य मस्कुलोस्केलेटल विकारों की रोकथाम और प्रबंधन के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम जिसमें जागरूकता, जांच और आयुष उपचारों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

II. राष्ट्रीय कैंसर, मधुमेह, हृदय रोग और आघात रोकथाम एवं नियंत्रण कार्यक्रम (एनपीसीडीसीएस) के साथ आयुष का एकीकरण: -

यह कार्यक्रम जिला एनसीडी केंद्रों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में आयुष इकाइयों की स्थापना करके तथा छह राज्यों अर्थात् आंध्र प्रदेश, बिहार, गुजरात, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बंगाल, जहां यह कार्यक्रम पहले से ही प्रायोगिक मोड में लागू किया गया था, में पहुंच संबंधी कार्यकलापों के लिए पीएचसी के सहयोग से स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के समन्वय में लागू किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, मध्यावधि के पूरा होने पर इसे पूरे देश में विस्तारित करने की संभावना का पता लगाया जाएगा जिससे एनपीसीडीसीएस के साथ आयुष का एकीकरण संभव होगा।

III. सुप्रजा (आयुष मातृ एवं नवजात उपचार):-

आयुष शिक्षण अस्पतालों के माध्यम से आयुष आधारित मातृ एवं नवजात उपचार को मजबूत करने के लिए।

IV. वायु मित्र (आयुष जराचिकित्सा स्वास्थ्य परिचर्या सेवाएं):-

आयुष जराचिकित्सा स्वास्थ्य परिचर्या सेवाएं वरिष्ठ नागरिकों के लिए स्वस्थ उत्पादक जीवन जीने का एक कार्यक्रम है।

V. आयुर्विद्या:-

आयुर्विद्या कार्यक्रम आयुष चिकित्सा पद्धतियों के माध्यम से 75000 स्कूलों में स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देने का कार्यक्रम है।

VI. आयुष मोबाइल मेडिकल यूनिट :-

आयुष चिकित्सा पद्धतियों के माध्यम से कम सेवा वाले और दूर-दराज के क्षेत्रों में स्वास्थ्य परिचर्या के लिए मोबाइल मेडिकल यूनिट प्रस्तावित हैं।

VII. करुण्यः (आयुष प्रशामक सेवाएं):-

आयुष प्रशामक सेवाओं का उद्देश्य प्रशामक परिचर्या के तहत रोगियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है।

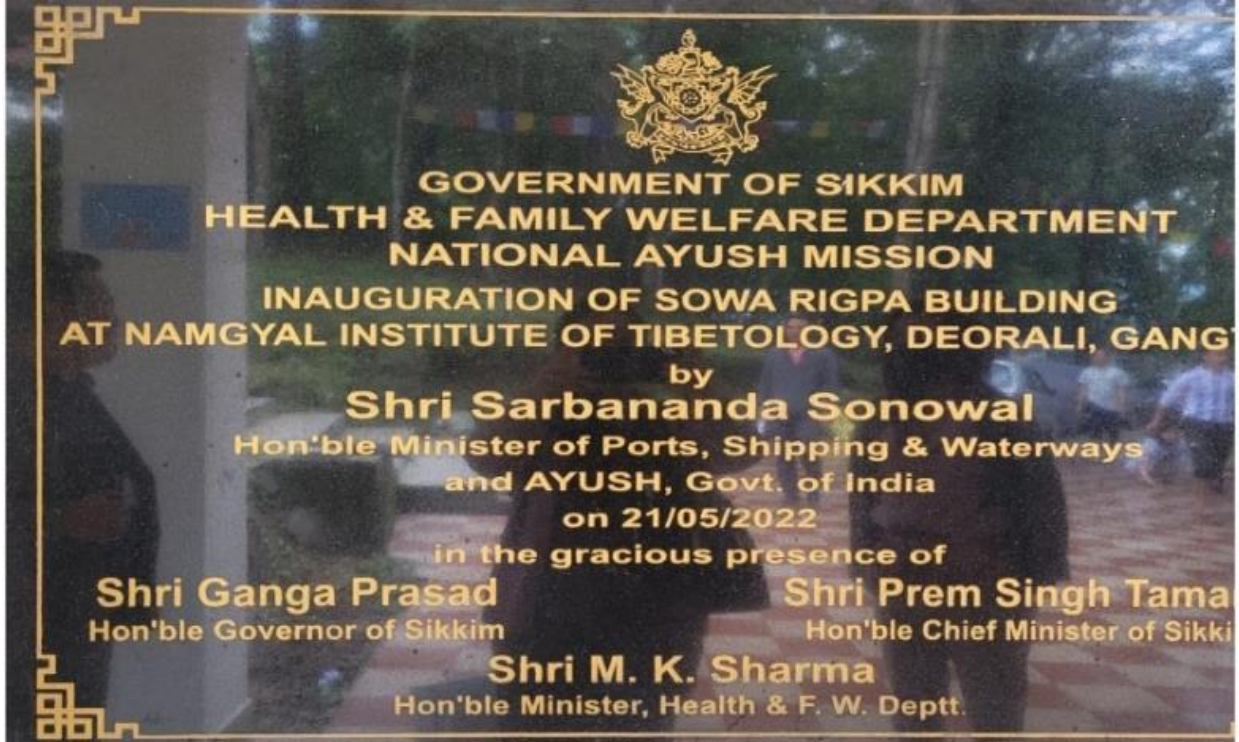
VIII. लिम्फैटिक फिलारियासिस (लिम्फोएडिमा) के रुग्णता प्रबंधन और विकलांगता रोकथाम (एमएमडीपी) के लिए आयुष पर राष्ट्रीय कार्यक्रम: -

आयुष उपचारों के माध्यम से लिम्फैटिक फिलारियासिस (लिम्फोएडेमा) की रुग्णता प्रबंधन और विकलांगता रोकथाम (एमएमडीपी)।

7.3 विभिन्न क्षमता वाले अस्पतालों की स्थापना

अब तक आयुष मंत्रालय 50/30/10 बिस्तर वाले एकीकृत आयुष अस्पतालों की स्थापना आयुष अस्पतालों और औषधालयों के उन्नयन, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी), सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी) और जिला अस्पतालों (डीएच) में आयुष सुविधाओं की सह-स्थापना राज्य सरकार के स्नातकपूर्व और स्नातकोत्तर शैक्षिक संस्थानों के उन्नयन और नए आयुष कॉलेज की स्थापना के माध्यम से आयुष को मुख्यधारा में लाकर योजना के तहत सहायता अनुदान प्रदान करके संबंधित

राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में आयुष के अस्तित्व को बढ़ाने के लिए राज्य/संघ राज्य क्षेत्र सरकारों को प्रोत्साहित कर पाया है।



देवराली, गंगटोक, सिक्किम में 21.05.2022 को नामग्याल इंस्टीट्यूट ऑफ तिबेटोलॉजी में सोवा-रिग्पा भवन का उद्घाटन समारोह।



राजा छेदमा, नागालैंड में 04.03.2022 को 50 बिस्तरों वाले एकीकृत आयुष अस्पताल का उद्घाटन



सुरेंद्रनगर, गुजरात में 16.10.2022 को राजकीय आयुर्वेद कॉलेज और अस्पताल का भूमि पूजन समारोह।



सुरेंद्रनगर, गुजरात में 16.10.2022 को राजकीय आयुर्वेद कॉलेज और अस्पताल का भूमि पूजन समारोह।



माजूली, असम में 50 बिस्तर वाला एकीकृत आयुष अस्पताल।



पुणे, महाराष्ट्र में 50 बिस्तर वाला एकीकृत आयुष अस्पताल।



डोडाबल्लापुर, कर्नाटक का उन्नयकृत राजकीय आयुर्वेद अस्पताल।



सोहियॉंग पूर्वी खासी हिल्स जिला, मेघालय में सह-स्थापित आयुष सुविधा।

7.4 विस्तारित विकल्प

राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति (एनएचपी) 2017 ने एकीकृत स्वास्थ्य परिचर्या की बुहलवादी प्रणाली के भीतर आयुष चिकित्सा प्रद्वतियों की क्षमता को मुख्यधारा में लाने की वकालत की है। भारत सरकार ने एक ही स्थान पर विभिन्न चिकित्सा पद्वतियों को उपलब्ध कराने के लिए रोगियों के विकल्पों का विस्तार करते हुए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी), सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी) और जिला अस्पतालों (डीएच) में आयुष सुविधाओं की सह-स्थापना की कार्यनीति अपनाई है। आयुष चिकित्सकों/पराचिकित्सकों की नियुक्ति तथा प्रशिक्षण स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा समर्थित है, जबकि आयुष अवसरंचना, उपकरण/फर्नीचर तथा औषधियों के लिए सहायता राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) की केंद्रीय प्रायोजित योजना के अंतर्गत आयुष मंत्रालय द्वारा दी जाती है।

7.5 एचडब्ल्यूसी के लक्ष्य के करीब

भारत सरकार ने आयुष मंत्रालय को 2023-24 तक 12,500 स्वास्थ्य एवं वेलनेस केंद्रों (एचडब्ल्यूसी) का संचालन करने के लिए अधिकृत किया था। मंत्रालय ने 12,300 एचडब्ल्यूसी को वर्ष 2022-23 तक मंजूरी दे दी है। केंद्रीय प्रायोजित योजनाओं (सीएसएस) के अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए निधियों को जारी करने की प्रक्रिया तथा निधियों की उपयोगिता की निगरानी के संबंध में दिनांक 23.03.2022 के व्यय विभाग, वित्त मंत्रालय द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का अनुसरण करते हुए अभी तक 9108 इकाइयों के लिए सहायता अनुदान जारी किया जा चुका है। वास्तवित प्रारूप में राज्य/संघ राज्य क्षेत्र सरकारों द्वारा सूचित आंकड़ों के अनुसार, 5409 आयुष एचडब्ल्यूसी सभी छह मानदंडों के आधार पर प्रगतिशील रूप से कार्यात्मक हैं। इसके अतिरिक्त, एबी-एचडब्ल्यूसी राष्ट्रीय

स्वास्थ्य पोर्टल पर राज्य/ संघ राज्य क्षेत्र सरकारों द्वारा सूचित आंकड़ों के अनुसार, 6782 तीन मानदंडों के आधार पर कार्यात्मक हैं। वर्षवार लक्ष्य, राज्यों/ संघ राज्य क्षेत्रों को दी गई मंजूरी और आयुष एचडब्ल्यूसी की कार्यात्मक स्थिति निम्नानुसार है:

| वर्ष | 2019-20 | 2020-21 | 2021-22 | 2022-23 |
|--|---------|---------|---------|---------|
| लक्ष्य | 1738 | 2700 | 3100 | 3700 |
| राज्य/संघ राज्य क्षेत्र को दी गई मंजूरी | 1632 | 2816 | 3105 | 4747 |
| कार्यात्मक, जैसा कि वास्तविक प्रारूप में राज्य/संघ राज्य क्षेत्र द्वारा सूचित किया गया | 1476 | 2311 | 1582 | 40 |



मेलाघर, त्रिपुरा में आयुष एचडब्ल्यूसी



चायबासा, झारखंड में आयुष एचडब्ल्यूसी

7.6 एनएएम की समीक्षा

विभिन्न राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के साथ वर्चुअल और हाइब्रिड मोड में समीक्षा बैठकों के अलावा, महाराष्ट्र, गोवा, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक के लिए एनएएम के अंतर्गत आयुष कार्यक्रम/कार्यकलापों की समीक्षा करने के लिए बेंगलुरु में 30 नवम्बर, 2022 को एक क्षेत्रीय स्तर की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया।



बेंगलुरु में 30 नवम्बर, 2022 को आयोजित क्षेत्रीय स्तर की समीक्षा बैठक

7.7 क्षेत्रों का दौरा

एनएएम के अंतर्गत आयुष कार्यक्रम/कार्यकलापों की समीक्षा करने के लिए 28-29 नवम्बर, 2022 को कर्नाटक राज्य में क्षेत्र का दौरा किया गया। इसके अतिरिक्त, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, केरल, झारखंड, मेघालय, राजस्थान और आंध्र प्रदेश के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र में क्षेत्रों का दौरा किया।



राजकीय आयुर्वेद हाई-टेक पंचकर्म अस्पताल, मैसूर, कर्नाटक



एएचडब्ल्यूसी, साहदूल, मध्यप्रदेश



एएचडब्ल्यूसी, बनर्घाटा, बेंगलुरु



एएचडब्ल्यूसी, ब्याथा, बेंगलुरु



राजकीय आयुर्वेद कॉलेज, मैसूर, कर्नाटक



एएचडब्ल्यूसी, लुहरदग्गा, झारखंड

अध्याय 8

सूचना शिक्षा और संचार

8.1 परिचय

स्वास्थ्य परिचर्या की पारंपरिक और समग्र पद्धतियों के प्रति सम्पूर्ण विश्व की पुनः रुचि बढ़ रही है। आयुष मंत्रालय, जिसे भारतीय चिकित्सा पद्धतियों और होम्योपैथी को विकसित करने, बढ़ावा देने और प्रचार करने के लिए अधिदेशित किया गया है, ने आयुष मेलों के आयोजन सहित बाह्य और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का उपयोग और आयुष पद्धतियों पर सम्मेलनों और कार्यशालाओं के समर्थन द्वारा आयुष चिकित्सा पद्धतियों की क्षमताओं को लोकप्रिय बनाने का निर्णय लिया है। इस उद्देश्य के लिए मंत्रालय, आयुष में सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी) के लिए केंद्रीय क्षेत्र योजना को क्रियान्वित कर रहा है।

8.2 उद्देश्य

आईईसी योजना निम्नलिखित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए है:

- i. सभी के लिए स्वास्थ्य के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए दृश्य-श्रव्य शैक्षणिक सामग्री के निर्माण सहित विभिन्न चैनलों के माध्यम से समुदाय के सदस्यों के बीच आयुष चिकित्सा पद्धतियों का प्रभावकारिता, उनकी लागत प्रभाविकता और उनके घर तक सामान्य रोगों की रोकथाम और उपचार के लिए प्रयुक्त जड़ी-बूटियों की उपलब्धता के बारे में जागरूकता पैदा करना।
- ii. राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर आयुष पद्धतियों में अनुसंधान और विकास कार्य के सिद्ध परिणामों का प्रसार;
- iii. एक मंच प्रदान करना जहां आयुष पद्धतियों के हितधारकों के बीच समकक्षीय और क्रमिक बातचीत क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तरों के सम्मेलनों, सेमिनारों और मेलों के माध्यम से की जा सकती है और हितधारकों को उनमें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है।

- iv. प्रदर्शनी/मेले में भागीदारी तथा आयुष चिकित्सा पद्धतियों पर संगोष्ठियों, सम्मेलनों, विचार गोष्ठियों और कार्यशाला के आयोजन द्वारा आयुष का प्रचार और संवर्धन।

8.3 वर्ष 2022 के दौरान आयोजित आईईसी कार्यक्रमलाप

8.3.1 आयोजित आरोग्य मेले

- i. इंडियन चेंबर ऑफ कॉमर्स, कोलकाता द्वारा 24-26 मार्च, 2022 के दौरान, हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड में एक राज्य स्तर का आरोग्य मेला।
- ii. अखिल भारतीय आयुर्वेद कांग्रेस द्वारा 27-31 मई, 2022 के दौरान उज्जैन, मध्य प्रदेश में आयोजित एक राष्ट्रीय स्तर का आरोग्य।
- iii. तरुण्य शिक्षा सेवा ट्रस्ट द्वारा 27-31 जुलाई 2022 के दौरान बेंगलोर, कर्नाटक में आयोजित एक राष्ट्रीय स्तर का आरोग्य मेला।
- iv. राज्य स्वास्थ्य सोसाइटी, मिजोरम द्वारा 18-21 अक्टूबर, 2022 के दौरान द्वारपुर, मिजोरम में आयोजित एक राज्य स्तर का आरोग्य मेला।

8.4 आरोग्य मेलों/आयुर्वेद पर में भागीदारी के लिए उद्योगों को दी गई वित्तीय सहायता

निम्नलिखित को वित्तीय सहायता दी गई:

| क्र.सं. | समारोह का नाम | संगठन का नाम | तिथि |
|---------|---------------|--|---------------------|
| 1. | योग फेस्ट | यूवाईसीओएएन, ऋषिकेश, उत्तराखंड | 12-14 मार्च 2022 |
| 2. | आयुर्वेद पर्व | आदिवेदा रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ योग साइंस एंड नेचुरोपैथी, तिरुवनंतपुरम, केरल | 03-05 जून 2022 |
| 3. | योग फेस्ट | एमएसएस विश्वविद्यालय, गुवाहाटी, असम | 11-13 जून 2022 |
| 4. | आयुर्वेद पर्व | विनोबा सेवा प्रतिष्ठान, जम्मू, जम्मू-कश्मीर | 01-03 जुलाई 2022 |
| 5. | आयुर्वेद पर्व | एसोचैम, सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल | 02-04 सितम्बर |

| | | | |
|-----|---------------|---|-----------------------|
| | | | 2022 |
| 6. | आयुर्वेद पर्व | विनोबा सेवा प्रतिष्ठान, इंफाल, मणिपुर | 09-11 सितम्बर 2022 |
| 7. | आयुर्वेद पर्व | एसोचैम, शिलांग, मेघालय | 15-17 सितम्बर 2022 |
| 8. | आयुर्वेद पर्व | एआईएसी, शिरडी, महाराष्ट्र | 23-25 सितम्बर 2022 |
| 9. | आयुर्वेद पर्व | आयुर्वेद व्यासपीठ नासिक, नागपुर, महाराष्ट्र | 11-13 नवम्बर 2022 |
| 10. | आयुर्वेद पर्व | विनोबा सेवा प्रतिष्ठान, राजमुंदरी, आंध्र प्रदेश | 18-20 नवम्बर 2022 |
| 11. | योग फेस्ट | सूर्या फाउंडेशन, आईटीओ, नई दिल्ली | 18-20 नवम्बर 2022 |
| 12. | आयुर्वेद पर्व | एआईएसी, रोहतक, हरियाणा | 23-25 दिसम्बर 2022 |

8.5 प्रदर्शनियां/संगोष्ठियां/एक्सपो:

| क्र. सं. | आयोजन | आयोजन का विवरण | तिथि |
|----------|-----------|---|--------------------|
| 1. | कार्यशाला | गंगटोक में राष्ट्रीय सोवा रिग्पा संस्थान द्वारा | 20-21 मई 2022 |
| 2. | सम्मेलन | हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी द्वारा | 24-26 मई 2022 |
| 3. | कार्यशाला | भुवनेश्वर में उत्कालिका समिति द्वारा | 20 जुलाई 2022 |
| 4. | संगोष्ठी | नई दिल्ली में सूर्या फाउंडेशन द्वारा | 18 सितम्बर 2022 |

| | | | |
|-----|--------------|--|-----------------------|
| 5. | भागीदारी | चंडीगढ़ में सीआईआई द्वारा चंडीगढ़ मेला | 14-17 अक्टूबर 2022 |
| 6. | भागीदारी | आईटीपीओ द्वारा नई दिल्ली में इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड फेयर | 14-27 नवम्बर 2022 |
| 7. | भागीदारी | सुरोदय सेवा समिति द्वारा नवयोग केन्द्र, टनकपुर में प्राकृतिक चिकित्सा दिवस 2022 के अवसर पर आरोग्य मेला | 18-20 नवम्बर 2022 |
| 8. | प्रदर्शनी | परीचित फाउंडेशन द्वारा राइज इन यूपी 2022 गाजियाबाद | 22-24 नवम्बर 2022 |
| 9. | सम्मेलन | इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली में सीआईआई द्वारा | 23 नवम्बर 2022 |
| 10. | विचार-गोष्ठी | संदीप उनि, नासिक द्वारा | 25-26 नवम्बर 2023 |
| 11. | संगोष्ठी | न्यू इंडिया द्वारा संथापुर, ढेंकनाल में | 25-29 नवम्बर 2022 |

8.6 आईआईटीएफ 2022 में आयुष मंत्रालय की भागीदारी

आयुष मंत्रालय ने 14 से 27 नवंबर 2022 तक प्रगति मैदान, नई दिल्ली में 41वें इंडिया इंटरनेशनल व्यापार मेले में अपने पवेलियन के माध्यम से अपनी पहलों और विभिन्न उपलब्धियों का प्रदर्शन किया। मंत्रालय ने "वैश्विक स्वास्थ्य के लिए आयुष" के विषय पर अपनी पहलों का प्रदर्शन किया।

आयुर्वेद, योग व प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा-रिग्पा और होम्योपैथी पद्धतियों के विभिन्न आयुष संस्थानों और अनुसंधान निकायों ने अपने स्टाल लगाए ताकि वे लोगों को जागरूक कर सके

कि आयुष चिकित्सा पद्धतियों के तहत उपलब्ध दिनचर्या, अच्छी आहार आदतों के माध्यम से आयुष को अपनी जीवन शैली में शामिल करके वे किस प्रकार अच्छा स्वास्थ्य बनाए रख सकते हैं।

विभिन्न गतिविधियों जैसे "अपना स्वयं आयुष उत्पाद बनाएं जैसे साबुन, जेल, क्रीम, गोली, इत्यादि", "दादी से पूछो" और आयुष प्रश्नमंच का आयोजन किया गया। आगंतुकों को कई स्वास्थ्य लाभों वाले औषधीय पादपों के छोटे-छोटे पौधे निःशुल्क दिए गए।

आगंतुकों के लिए निःशुल्क ओपीडी सेवाएं संचालित की गईं। सॉफ्टवेयर आधारित *प्रकृति परीक्षण* और *मिजाज परीक्षण* किया गया। मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (एमडीएनआईवाई), नई दिल्ली के विशेषज्ञों द्वारा योग फ्यूजन कार्यक्रम, लाइव योग प्रदर्शन, कार्यस्थल पर योग ब्रेक और योग चिकित्सा का प्रदर्शन किया गया।

8.7 महत्वपूर्ण दिवसों का आयोजन

11 फरवरी 2022 को यूनानी दिवस

9 और 10 अप्रैल 2022 को विश्व होम्योपैथी दिवस

वैश्विक आयुष निवेश और नवाचार शिखर सम्मेलन (जीएआईआईएस) 20 - 22 अप्रैल 2022

21 जून 2022 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

23 अक्टूबर 2022 को आयुर्वेद दिवस

18 नवम्बर 2022 को प्राकृतिक चिकित्सा दिवस

अध्याय 9

मीडिया आउटरीच

9.1 मीडिया सेल का परिचय और उद्देश्य

आयुष मंत्रालय का मीडिया सेल आईईसी (सूचना, शिक्षा और संचार) के दिशा-निर्देशों के व्यापक दायरे के अंतर्गत सार्थक सूचना का प्रसार करने में लगा हुआ है। यह सेल स्वास्थ्य परिचर्या की आयुष पद्धतियों के बारे में जागरूकता पैदा करने, आयुष सेवाओं को बढ़ावा देने और आयुष मंत्रालय की योजनाओं, कार्यक्रमों और कार्यकलापों के बारे में सूचना का प्रसार करने का कार्य करता है।

सूचना का प्रसार छः सोशल मीडिया प्लेटफार्मों और विभिन्न प्रकाशनों के साथ सीधे संपर्क के माध्यम से मीडिया में किया जाता है। मीडिया सेल ने मंत्रालय की नीतियों, दिशानिर्देशों के बारे में जानकारी देने और जागरूकता पैदा करने, लोगों में जागरूकता फैलाने, प्रेस विज्ञप्ति का प्रसार करने, प्रतिनिधियों की जानकारी देने, मीडिया हाऊस को शामिल करने आदि के लिए एक सोशल मीडिया एजेंसी को भी नियुक्त किया है। मीडिया सेल आयुष मंत्रालय द्वारा मनाए जा रहे विभिन्न महत्वपूर्ण समारोह के संबंध में सोशल मीडिया अभियान चलाने में भी सक्रिय रूप से लगा हुआ है।

9.2 मीडिया में व्यापक रूप से शामिल किए गए मुख्य आयोजन

9.2.1 डब्ल्यूएचओ ग्लोबल सेंटर फॉर ट्रेडिशनल मेडिसिन

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 19 अप्रैल 2022 को जामनगर, गुजरात में डब्ल्यूएचओ ग्लोबल सेंटर फॉर ट्रेडिशनल मेडिसिन (जीसीटीएम) की आधारशिला रखी। इस शिलान्यास समारोह में मॉरीशस के प्रधानमंत्री श्री प्रविंद कुमार जगनाथ और विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के महानिदेशक डॉ. टेड्रोस गेब्रेयेसस ने भाग लिया।

यह समारोह न केवल आयुष मंत्रालय बल्कि भारत सरकार के लिए भी महत्वपूर्ण समारोहों में से एक है। इस अवसर के लिए मीडिया आउटरीच सोशल मीडिया सामग्री और प्रिंट, डिजिटल और टेलीविजन मीडिया कवरेज के माध्यम से समारोह से एक महीने पूर्व आरंभ हो गई थी। हमें कार्यक्रम के दिन और कार्यक्रम के बाद भी अच्छी मीडिया कवरेज मिली।

इस अवसर पर बात करते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा, “डब्ल्यूएचओ ग्लोबल सेंटर फॉर ट्रेडिशनल मेडिसिन इस क्षेत्र में भारत के योगदान और क्षमता की पहचान है। भारत की पारंपरिक चिकित्सा पद्धति केवल उपचार तक ही सीमित नहीं है। यह जीवन का समग्र विज्ञान है। भारत इस साझेदारी को संपूर्ण मानवता की सेवा के लिए एक बड़ी जिम्मेदारी के रूप में लेता है।”

प्रधानमंत्री ने यह भी उल्लेख किया कि आज दुनिया स्वास्थ्य परिचर्या सुपुर्दगी के नए आयाम की तलाश कर रही है। उन्होंने कहा “मुझे खुशी है कि 'वन प्लेनेट अवर हेल्थ' का नारा देकर डब्ल्यूएचओ ने 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य' के भारतीय दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया है। भारत के लिए यह बहुत गर्व की बात है कि 2023 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष के रूप में चुना गया है।



माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी 19 अप्रैल 2022 को जामनगर, गुजरात में डब्ल्यूएचओ-जीसीटीएम शिलान्यास समारोह में सभा को संबोधित करते हुए।

9.2.2 वैश्विक आयुष निवेश एवं नवाचार शिखर सम्मेलन 2022

तीन दिवसीय वैश्विक आयुष निवेश एवं नवाचार शिखर सम्मेलन गांधीनगर, गुजरात में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। यह शिखर सम्मेलन भारत के आयुष क्षेत्र की ओर दुनिया का ध्यान आकर्षित करने के लिए भारत सरकार का एक विशिष्ट प्रयास था। इस आयोजन के लिए मीडिया आउटरीच इस समारोह से लगभग एक महीने पहले सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर काउंटडाउन पोस्ट, इसके महत्व और शिखर सम्मेलन के अन्य विवरणों के माध्यम से शुरू हुई थी। हमने समारोह के दौरान लाइव ट्वीट किया और समारोह के भाग के रूप में आयोजित विभिन्न पूर्ण सत्रों, राउंट टेबल, कार्यशाला और संगोष्ठी के सभी पहलुओं को शामिल किया। सोशल मीडिया और प्रिंट तथा डिजिटल

कहानियों के माध्यम से उद्योग जगत की आवाज और स्टार्ट-अप की सफलता की कहानी को विस्तार से बताया गया।



माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी 20 अप्रैल 2022 को गांधीनगर, गुजरात में वैश्विक आयुष निवेश एवं नवाचार शिखर सम्मेलन 2022 के उद्घाटन समारोह में सभा को संबोधित करते हुए।

9.2.3 डब्ल्यूएचओ जीसीटीएम और जीएआईआईएस का मीडिया आउटरीच डाटा

जीसीटीएम सोशल मीडिया

1. #GlobalTraditionalHealthcare - 34 मिलियन से अधिक हैशटैग
2. हमने 28 ट्वीट किए और 14.7 हजार टिप्पणियां प्राप्त कीं।
3. 29 फेसबुक पोस्ट किए जो 352 हजार फॉलोअर्स तक पहुंचे।
4. 28 इंस्टाग्राम पोस्ट जो 101 हजार लोगों तक पहुंचे।

जीएआईआईएस सोशल मीडिया

1. हमने 384 ट्वीट, 194 इंस्टाग्राम पोस्ट और 50 स्टोरी तथा 34 फेसबुक पोस्ट किए।
2. सोशल मीडिया चैनलों के लिए 40 से अधिक वीडियो।
3. 900 हजार से अधिक लोगों तक पहुंच बनाई।
4. हमने राष्ट्रीय स्तर पर दो बार ट्रेंड किया जिसमें ट्विटर पर 4 मिलियन से अधिक उपयोगकर्ताओं तक पहुंच बनाई।

पीआर: जीसीटीएम और जीएआईआईएस दोनों के लिए

- क) समारोह से पूर्व - 140 कवरेज
- ख) राजकोट में समारोह से पूर्व प्रेस कॉन्फ्रेंस - 277 कवरेज
- ग) जीसीटीएम शिलान्यास समारोह- 322 कवरेज
- घ) जीएआईआईएस पहला दिन- 1073 कवरेज
- ङ) जीएआईआईएस दूसरा दिन - 846 कवरेज
- च) जीएआईआईएस तीसरा दिन - 96 कवरेज
- छ) समारोह के पश्चात - 183 कवरेज
- ज) जीएआईआईएस + जीसीटीएम समग्र रूप में- 2938 कवरेज
- झ) कुल प्रिंट कवरेज- 415 (हिंदी- 104, गुजरात- 111, अन्य- 200)
- ञ) कुल कवरेज - 2938
- ट) कुल लोगों तक पहुंच- 1,356,571,524

9.2.4 अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2022

कोविड-19 महामारी के कारण 2 वर्ष के अंतराल के बाद अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2022 को वास्तविक रूप में मनाया गया। इसे दुनिया भर में मानवता की सेवा में योग के महत्व और योगदान को दर्शाने के इरादे से मनाया गया।



माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी मैसूर, कर्नाटक में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2022 पर सामूहिक योग प्रदर्शन का नेतृत्व करते हुए

इस आयोजन में बड़े पैमाने पर भागीदारी देखी गई जिसमें लगभग 125 करोड़ की वैश्विक पहुंच सहित 22.13 करोड़ से अधिक व्यक्तियों ने भाग लिया। मुख्य कार्यक्रम के लिए 100 दिन के काउंट डाउन के साथ मीडिया आउटरीच शुरू हो गया था। गार्जियन रिंग ऑफ योग, देश में 75 प्रतिष्ठित स्थानों पर आयोजन, मैसूर में डिजिटल और स्टेटिक योग प्रदर्शनी जैसे प्रमुख आर्कषणों को मीडिया

द्वारा अच्छी तरह से कवर किया गया था और मंत्रालय के सोशल मीडिया प्लेटफार्मों तथा मुख्यधारा में प्रिंट, टीवी और डिजिटल मीडिया के माध्यम से समान रूप से प्रचारित किया गया था।

9.2.5 मीडिया आउटरीच आंकड़े: आईडीवाई 2022

सोशल मीडिया

1. 557 मिलियन से अधिक लोगों तक पहुंचा और हमें 11898 मिलियन का इम्पेशन वॉल्यूम मिला।
2. हमने 259 ट्वीट किए, 332 इंस्टाग्राम पोस्ट, 192 स्टोरीज, 22 रील्स और 69 वीडियो तथा 288 फेसबुक पोस्ट किए।
3. #YogaForHumanity और #IDY2022 सबसे लोकप्रिय हैशटैग थे।
4. हम राष्ट्रीय स्तर पर ट्विटर पर दो बार ट्रेंड हुए- 19 जून को #IDY2022 के साथ और 21 जून को #YogaForHumanity के साथ।

आईडीवाई 2022: पीआर

1. कुल कवरेज:- 1177 कवरेज
2. कुल लोगों तक पहुंच:- 657,598,888

9.2.6 मकर संक्रांति पर सूर्य नमस्कार प्रदर्शन कार्यक्रम

कोविड महामारी के दौरान शरीर और मन को स्वस्थ रखने तथा खुद को सुरक्षित रखने के लिए भारत सहित दुनिया भर के 75 लाख से अधिक लोगों ने एक साथ सूर्य नमस्कार किया। कार्यक्रम के दिन सोशल मीडिया पर विशेष अभियान और पारंपरिक मीडिया में कवरेज के माध्यम से इस कहानी को बढ़ावा दिया गया।

9.2.7 07वां आयुर्वेद दिवस 2022

यह भारत में और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बड़े पैमाने पर मनाया गया। इस वर्ष का विषय था "हर दिन हर घर आयुर्वेद"। भारत सरकार के 26 से अधिक मंत्रालयों और विदेश मंत्रालय के भारत मिशनो और दूतावासों के सहयोग से आयोजित लगभग 5000 कार्यक्रमों के साथ छः सप्ताह तक चलने वाले इस समारोह में देश भर से विशाल भागीदारी देखी गई। सोशल मीडिया और पारंपरिक मीडिया के माध्यम से छः साप्ताहिक विषय आधारित कार्यक्रमों को दर्शाया गया।



07वें आयुर्वेद दिवस समारोह में 23 अक्टूबर, 2022 को दिल्ली में माननीय केंद्रीय मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल के साथ केंद्रीय मंत्री श्री अर्जुन मुंडा, केंद्रीय राज्य मंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी, केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. महेंद्रभाई मुंजपारा कालूभाई।

9.2.8 प्राकृतिक चिकित्सा दिवस 2022

मुख्य कार्यक्रम पुणे में राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान में आयोजित किया गया था। इस वर्ष प्राकृतिक चिकित्सा दिवस का विषय था, प्राकृतिक चिकित्सा: एक एकीकृत चिकित्सा, जिससे पूरे देश

में प्राकृतिक चिकित्सा के साथ रोगी-उन्मुख दृष्टिकोण का संदेश पहुंचा। सोशल और पारंपरिक मीडिया पर काउंटडाउन पोस्ट, समारोह की कवरेज के माध्यम से मीडिया में चर्चा पैदा की गई।

9.2.9 तीन आयुष संस्थानों का उद्घाटन

आयुष स्वास्थ्य परिचर्या अवसंरचना और संस्थानों के निर्माण के मामले में यह एक ऐतिहासिक वर्ष रहा। माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा आयुर्वेद, यूनानी और होम्योपैथी में तीन राष्ट्रीय आयुष उत्कृष्ट संस्थानों का उद्घाटन किया गया। विस्तृत सोशल तथा पारंपरिक मीडिया रणनीति तैयार की गई और सफलतापूर्वक क्रियान्वित की गई।



माननीय प्रधानमंत्री 11 दिसंबर, 2022 को गोवा में 9वीं विश्व आयुर्वेद कांग्रेस के समापन समारोह में तीन राष्ट्रीय आयुष संस्थानों का उद्घाटन करते हुए।

9.2.10 विश्व आयुर्वेद कांग्रेस और आरोग्य एक्सपो 2022

सभी हितधारकों के लिए एक वैश्विक मंच प्रदान करने के उद्देश्य से गोवा में 09वीं विश्व आयुर्वेद कांग्रेस और आरोग्य एक्सपो 2022 का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम को आरंभ से लेकर समापन दिवस तक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से प्रचारित किया गया। वीडियो प्रारूप के माध्यम से विभिन्न हितधारकों की विशेष कहानियों को दर्शाया गया।



9वें विश्व आयुर्वेद दिवस और आरोग्य एक्सपो का 8 दिसंबर 2022 को पंजिम, गोवा में उद्घाटन समारोह

9.2.11 समारोह, सहयोग, नीतिगत पहल

2022 के दौरान मंत्रालय द्वारा कई महत्वपूर्ण नीतिगत पहलें आरंभ की गईं। भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसआई) ने 'आयुर्वेद आहार' श्रेणी के अंतर्गत खाद्य उत्पादों के लिए सुरक्षा और गुणवत्ता मानकों के नियम तैयार किए, वन हर्ब, वन स्टैंडर्ड, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इन सहयोगों को सोशल मीडिया और पारंपरिक मीडिया के माध्यम से भली-भांति प्रचारित किया गया।

9.3 विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर मंत्रालय की सोशल मीडिया पहुंच

आयुष मंत्रालय इस समय छः सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर मौजूद है।

1. ट्विटर
2. इंस्टाग्राम,
3. फेसबुक
4. यूट्यूब
5. कू और
6. पब्लिक ऐप

हमने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2022 के दौरान राष्ट्रीय के साथ-साथ क्षेत्रीय राज्यों/शहरों के विशिष्ट दर्शकों के लिए एक नया सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पब्लिक ऐप जोड़ा। 2022 में अपने अद्वितीय कंटेंट और मैसेजिंग रणनीति के माध्यम से हम सभी प्लेटफॉर्मों पर बड़ी संख्या में नए फोलोवर्स बना पाए हैं। ट्विटर पर फॉलोअर्स की संख्या 3,47,000, इंस्टाग्राम पर 1,15,000, फेसबुक पर 3,80,000, यूट्यूब पर 61,300, कू पर दर्शकों की संख्या लगभग 2,51,900 और पब्लिक ऐप पर दर्शकों की संख्या 1,39,000 तक पहुंच गई है।

9.4 विभिन्न महत्वपूर्ण आयोजनों के लिए मीडिया में चर्चा के माध्यम से सृजित इंप्रेशन के आंकड़े

2022 में आयुष मंत्रालय के प्रमुख आयोजनों जैसे डब्ल्यूएचओ-ग्लोबल सेंटर ऑफ ट्रेडिशनल मेडिसिन का शिलान्यास, वैश्विक आयुष निवेश और नवाचार शिखर सम्मेलन, 2022, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2022, मकर सक्रांति पर सूर्य नमस्कार प्रदर्शन कार्यक्रम, 07वां आयुर्वेद दिवस 2022, प्राकृतिक चिकित्सा दिवस 2022 और तीन आयुष राष्ट्रीय संस्थानों के उद्घाटन ने सुविचारित सोशल मीडिया और पारंपरिक मीडिया संचार नीति के माध्यम से 360 डिग्री मीडिया दृश्यता हासिल की। आयुष मंत्रालय के सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म आउटरीच ने **5,63,40,767** का डाटा इंप्रेशन बनाया और एंगेजमेंट डेटा में भारी उछाल आया जो **23,77,737** तक पहुंच गया।

अध्याय 10

भारत में औषधीय पादप क्षेत्र

10.1 परिचय

भारत सरकार ने औषधीय पादप क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए दिनांक 24 नवंबर, 2000 को राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी) की स्थापना की है। वर्तमान में, बोर्ड आयुष मंत्रालय (आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी) भारत सरकार में स्थित है। एनएमपीबी का प्रमुख अधिदेश भारत में विभिन्न मंत्रालयों / विभागों / संगठनों के मध्य समन्वय के लिए उपयुक्त तंत्र विकसित करना और केंद्र / राज्य तथा अंतर्राष्ट्रीय, दोनों स्तर पर औषधीय पादप क्षेत्र के समग्र विकास (संरक्षण, खेती, व्यापार और निर्यात) के लिए सहायक नीतियों / कार्यक्रमों का कार्यान्वयन करना है।

10.2 मार्केट लिंकेज

औषधीय पादपों की खेती / संग्रहण कार्य से जुड़े किसानों/संग्राहकों को बाजार से जोड़ने के हमारे प्रयास में, प्रमुख कंपनियों (क्रय विभाग के व्यक्ति के संपर्क ब्यौरे सहित) की बृहद आवश्यकताओं को औषधीय पादपों की खेती करने में सहयोग करने वाली सभी राज्य कार्यान्वयन एजेंसियों और आरसीएफसी के साथ साझा/अवगत किया जाता है।

| विभिन्न एसयू और एच कंपनियों के लिए कच्ची सामग्री की आवश्यकता | | | |
|--|------------------|----------------------|-----------------------|
| क्र.सं. | कंपनी का नाम | प्रजातियों की संख्या | कुल मात्रा (एमटी में) |
| 1 | आयुर्वेद लिमिटेड | 13 | 570.00 |
| 2. | बेक्सन फार्मा | 120 | 35.00 |

| | | | |
|-----|---------------------|------------|----------------|
| 3. | सिप्ला | 1 | 1350.00 |
| 4. | डाबर इंडिया लिमिटेड | 46 | 348.80 |
| 5. | इमामी | 34 | 735.80 |
| 6. | महर्षि आयुर्वेद | 50 | 50.50 |
| 7. | नेचुरल रेमेडीज | 13 | .5780.00 |
| 8. | ओमनी एक्टिव | 16 | 33761.00 |
| 9. | फाइटो एक्स्ट्रेक्ट | 10 | 6400.00 |
| 10. | सामे लैब. | 23 | 22985.00 |
| 11. | यूनिर्कॉर्न फार्मा | 10 | 1875.00 |
| 12. | बोटैनिक हेल्थ केयर | 5 | 1750.00 |
| | | कुल | 75641.2 |

10.3 एनएमपीबी के आईटी क्रियाकलाप:

10.3.1 ई-चरक (<https://e-charak.in>)

एनएमपीबी ने औषधीय पादप क्षेत्र से सम्बद्ध विभिन्न हितधारकों के मध्य व्यापार और सूचनाओं के आदान-प्रदान को सुगम बनाने के लिए "ई-चरक" नामक औषधीय पादपों के व्यापार हेतु ऑनलाइन पोर्टल सह एंड्रॉइड आधारित एप्लिकेशन विकसित किया है।

वर्तमान में, ई-चरक मोबाइल एप्लिकेशन के 38,072 डाउनलोड; 8,687 पंजीकृत उपयोगकर्ता; 1,87,47,970 आगंतुक; 6,221 पोस्ट किए गए आइटम; 37,77,230 क्रेता-विक्रेताओं के साथ विचार-विमर्श सहित, ऑनलाइन चैट सिस्टम के माध्यम से 7,021 प्रश्नों का समाधान किया गया।

10.3.2 वैश्विक आयुष नवाचार और निवेश शिखर सम्मेलन

एनएमपीबी ने 'समक्ष आर्यी चुनौतियों और भावी तरीकों के संबंध में किसान निकायों, उद्योगों और राज्य/संघ राज्य क्षेत्र सरकार के मध्य क्रेता-विक्रेता बैठक का आयोजन किया जिसमें औषधीय पादपों की खेती और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन पर विचार-विमर्श सम्मिलित होता है।'

- क. इस कार्यक्रम में 500 (लगभग) प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।
- ख. पैनल चर्चा के दौरान औषधीय पादप क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न मंत्रालयों / विभागों / उद्योगों के 10 विशेषज्ञों की अगुआई में विचार-विमर्श हुआ।
- ग. उद्योग और किसान निकायों के मध्य 53 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर हुए।
- घ. लगभग 7500 किसान समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर करने में सम्मिलित हुए।
- ङ. हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापनों का अनुमानित मूल्य 234 करोड़ रुपये है।

10.3.3 एनएमपीबी, आयुष मंत्रालय द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव अभियान

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी), आयुष मंत्रालय ने भी देश में औषधीय पादप क्षेत्र के संवर्द्धन हेतु आजादी का अमृत महोत्सव (एकेएएम) अभियान का आयोजन किया है। एनएमपीबी, आयुष मंत्रालय ने एकेएएम के तहत निम्नलिखित दो क्रियाकलापों के लिए सहयोग प्रदान किया:

- (i) औषधीय पादपों पर जागरूकता उत्पन्न करने के लिए "आयुष आपके द्वार" ।
- (ii) 30 अगस्त, 2021 से आगे एक वर्ष की अवधि के दौरान खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को औषधीय पादपों की पौध का वितरण करना।

आयुष आपके द्वार के साथ औषधीय पादप की पौध का वितरण: अब तक, आयुष आपके द्वार अभियान के तहत अश्वगंधा, बेल, कालमेघ, लेमन ग्रास, शतावरी, आंवला, तुलसी, गिलोय, घृतकुमारी इत्यादि की 8345393 पौध संघ राज्य क्षेत्र सहित 30 राज्यों के किसानों, विद्यार्थियों, परिवारों और आम जनता को वितरित की गई।

औषधीय पादपों की खेती

17 राज्यों / संघ राज्य क्षेत्रों में जिला / राज्य / क्षेत्र के अधिक से अधिक किसानों को कवर करने के लिए क्षेत्रीय-सह-सुविधा केंद्र (आरसीएफसी), राज्य औषधीय पादप बोर्ड (एसएमपीबी) और

अन्य योजना कार्यान्वयन एजेंसियों के माध्यम से 3 सितंबर, 2021 को औषधीय पादपों की पौध का वितरण किए जाने के लिए कार्यक्रमों का उद्घाटन / आरंभ किया गया।

औषधीय पादपों का वर्ष भर वितरण

एकेएएम अभियान के दौरान, एनएमपीबी, आयुष मंत्रालय ने आरसीएफसी / एसएमपीबी और अन्य कार्यान्वयन एजेंसियों के माध्यम से देश भर के **14792 किसानों** को विभिन्न औषधीय पादपों की **91 लाख** से अधिक पौध का वितरण किया।

अभियान के दौरान, वितरण किए जाने वाले औषधीय पादपों में कुटकी, कुठ, जटामांसी, गिलोय, तुलसी, कालमेघ, अश्वगंधा, एलोय वेरा, ब्राह्मी, शतावरी, स्टीविया, तेजपत्ता, अशोक, गुग्गुलु, सर्पगंधा, आंवला आदि सम्मिलित हैं। अभियान के अंतर्गत, राज्य और क्षेत्र विशेष की प्रजातियों की खेती को बढ़ावा देने हेतु किसानों को वितरण करने में प्राथमिकता दी गई थी।

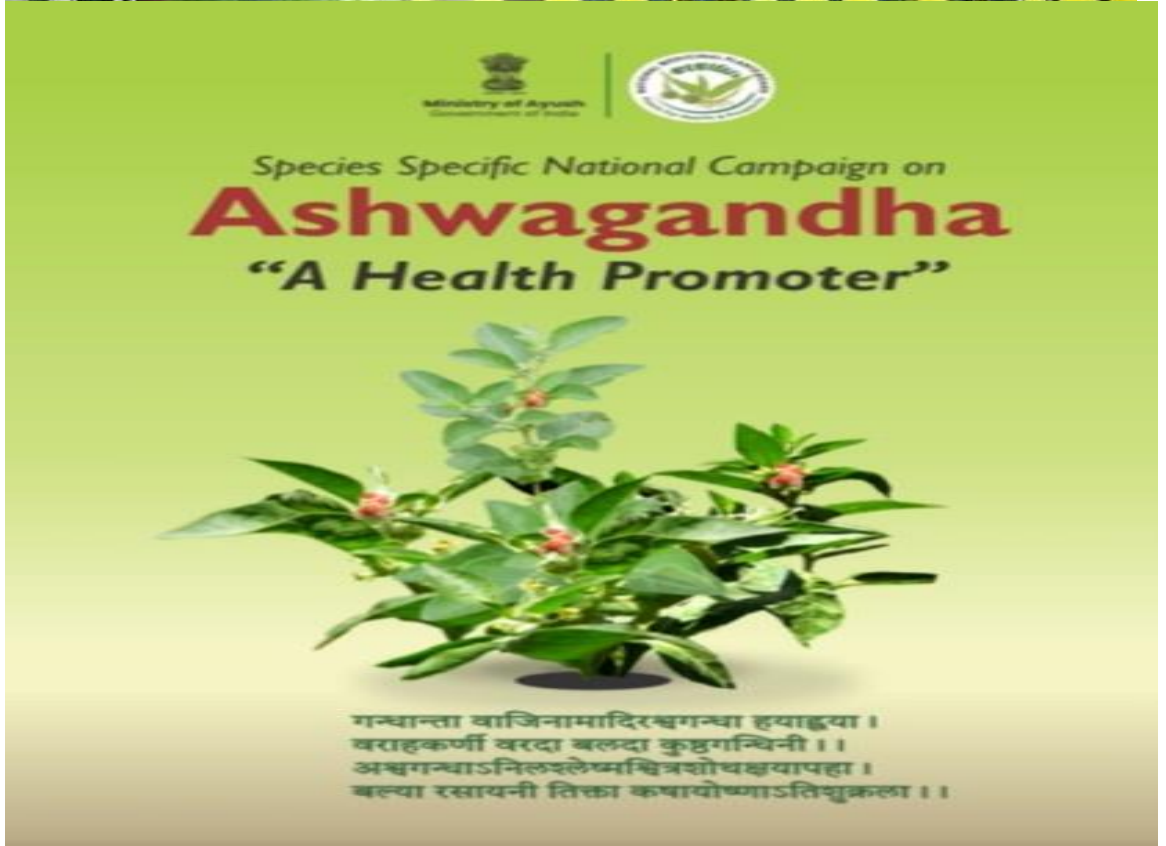


10.3.4 अश्वगंधा-"एक स्वास्थ्य वर्धक" पर राष्ट्रीय अभियान-

- (i) राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय ने आम जन के मध्य अश्वगंधा से स्वास्थ्य विषयक लाभों के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने और पूरे देश में इस संभावित औषधीय

पादप के उपयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अश्वगंधा- " स्वास्थ्य वर्धक " नामक राष्ट्रीय अभियान प्रारम्भ किया।

- (ii) माननीय मंत्रियों के समूह और विभिन्न मंत्रालयों के सचिवों की उपस्थिति में 23 अक्टूबर, 2022 को 7वें आयुर्वेद दिवस समारोह के अवसर पर राष्ट्रीय अभियान शुरू किया गया।



10.3.5 जनवरी, 2022 से दिसंबर, 2022 तक एनएमपीबी की केंद्रीय क्षेत्र योजना के अनुसंधान और विकास कार्यकलाप

(i) अनुसंधान एवं विकास क्रियाकलापों को बढ़ावा देने के लिए, राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी), आयुष मंत्रालय, 'औषधीय पादप संरक्षण, विकास और सतत प्रबंधन' पर अपनी केंद्रीय क्षेत्र योजना के अंतर्गत केवल देश भर के सरकारी और निजी विश्वविद्यालयों / अनुसंधान संस्थानों / संगठनों को 'औषधीय पादपों के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान विषयक कार्यकलाप करने के लिए परियोजना आधारित वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

(ii) स्थापना से लेकर अब तक अर्थात् वर्ष 2001-2002 से 2022-23 की अवधि के दौरान औषधीय पादप संरक्षण, विकास और सतत प्रबंधन की केंद्रीय क्षेत्र योजना के अंतर्गत देश भर के विभिन्न संगठनों को औषधीय पादप के विभिन्न पहलुओं से संबंधित समर्थित अनुसंधान परियोजनाओं का विषय-वार विवरण निम्नलिखित है:

| क्र.सं. | अनुसंधान क्षेत्र | परियोजनाओं की संख्या |
|---------|---|----------------------|
| 1. | बायोएक्टिविटी निर्देशित अंशांकन अध्ययन और प्री-क्लिनिकल अध्ययन | 48 |
| 2. | कृषि तकनीकों का विकास, नर्सरी तकनीक और कृषि पद्धति का मानकीकरण | 76 |
| 3. | जिओ टैग डिजिटल लाइब्रेरी का प्रलेखन और विकास | 21 |
| 4. | कच्ची औषधियों के स्थानापन्न और प्रमाणीकरण का ज्ञात करना | 22 |
| 5. | जीनोटाइप पहचान, जेनेटिक्स सुधार, जीनोम अध्ययन और जर्मप्लाज्म संग्रहण और संरक्षण | 23 |
| 6. | इंटरक्रॉपिंग और सतत उत्पादन तकनीक | 31 |
| 7. | इन-विट्रो प्रोपेगेशन अध्ययन, सूक्ष्म प्रोपेगेशन रसायन और मोलेक्यूलर प्रोफाइलिंग और फाइटो-केमिकल मूल्यांकन | 90 |
| 8. | फसलोपरांत प्रबंधन, भारी धातुओं का आकलन और | 53 |

| | | |
|------------|--|------------|
| | एकीकृत हानिकारक कीट प्रबंधन | |
| 9. | औषधीय पादपों का सर्वेक्षण, पहचान, लक्षण वर्णन और संरक्षण | 27 |
| 10. | किस्मों का विकास और विपणन की संभावना | 11 |
| कुल | | 402 |

- (iii) 104 चयनित औषधीय पादपों की कृषि-तकनीकें तीन खंडों में प्रकाशित की गईं।
- (iv) इसके अतिरिक्त, अनुसंधान एवं विकास अनुभाग के साथ 02 समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर हुए हैं:
- (क) राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी), आयुष मंत्रालय और आईसीएआर-राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (एनबीपीजीआर), जर्मप्लाज्म अनुरक्षण और संरक्षण हेतु कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग और जैव प्रौद्योगिकी विभाग।
- (ख) एनएमपीबी और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने औषधीय पादप क्षेत्र को सुदृढ़ करने के लिए औषधीय पादपों में बायोटेक उपाय पर अनुसंधान एवं विकास विषयक प्रस्तावों के लिए संयुक्त रूप से प्रस्ताव किया।
- (v) इन प्रायोजित/वित्तीय रूप से समर्थित अनुसंधान परियोजनाओं के अंतर्गत, एनएमपीबी ने अब तक 05 ऐसी अनूठी परियोजनाओं की पहचान की है जो नई प्रकृति की हैं और पेटेंट योग्य हैं। उनके आईपीआर दाखिल करने की कार्रवाई चल रही है।
1. एगल मार्मेलोस से गौण चयापचयों का जैव-उत्पादन (आर एंड डी/टीएन-04/2006-07)।
 2. हैरी रूट कल्चर के माध्यम से दशमूल की वृक्ष प्रजातियों से गौण मेटाबोलाइट्स का इन विट्रो उत्पादन (आर एंड डी/टीएन-0112013-14-एनएमपीबी)।
 3. डायोस्कोरिया फ्लोरिबंडा से एंटी-कैंसर और एंटी-इंफ्लेमेटरी एजेंटों का विकास (आरएंडडी/यूपी-04/2015-16)।

4. हिमाचल प्रदेश से जीनस बैररिस (एल) की चयनित प्रजातियों से साइटो-मोर्फोलॉजिकल फाइटोकेमिकल, मोलेक्यूलर लक्षण वर्णन और नए जड़ी-बूटी उत्पाद का उत्पादन (आरएंडडी/एचपी-02/2019-20)।
5. औषधीय ट्यूबर/कंद फसलों के लिए फसलोपरांत प्रबंधन पद्धतियां (एमपी-01/2017- 18)।

10.4 जनवरी, 2022 से दिसंबर, 2022 तक उपलब्धियां

1. राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी) की उपरोक्त योजना के अंतर्गत एनएमपीबी की केंद्रीय क्षेत्र योजना के अनुसंधान और विकास घटक के तहत प्राप्त परियोजना प्रस्तावों की जांच के लिए परियोजना स्क्रीनिंग समिति (पीएससी) की वर्ष 2022 (वर्ष जनवरी, 2022 से दिसंबर, 2022 तक) में कुल चार (04) बैठकें अर्थात् 74वीं, 75वीं, 76वीं और 77वीं बैठकें क्रमशः 10 फरवरी, 2022, 19 और 23 मई, 2022, 5 और 06 सितंबर और 27 दिसंबर, 2022 को आयोजित की गई थीं।
2. अनुशंसित परियोजनाओं को तत्पश्चात स्थायी वित्त समिति (एसएफसी) की बैठकों के समक्ष रखा गया। वर्ष 2022 के दौरान कुल 02 एसएफसी बैठकें अर्थात् 82वीं और 84वीं बैठकें क्रमशः 10 फरवरी, 2022 और 27 सितंबर, 2022 को आयोजित हुईं और विभिन्न संगठनों / संस्थानों की 320.75 लाख रुपये लागत की कुल 08 परियोजनाएं स्वीकृत की गईं।
3. राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में जनवरी, 2022 से दिसंबर, 2022 के दौरान अनुसंधान एवं विकास समर्थित परियोजनाओं के तहत कुल 25 शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं।
4. एनएमपीबी समर्थित आर एंड डी परियोजनाएं, जिन्हें पोस्टर के माध्यम से प्रस्तुत किया गया: समर्थित अनुसंधान परियोजनाओं के तहत, एनएमपीबी ने अब तक निम्नलिखित अनूठी परियोजनाओं की पहचान की है, जिन्हें 20-22 अप्रैल, 2022 को

गांधीनगर में आयोजित वैश्विक आयुष निवेश और नवाचार शिखर सम्मेलन 2022 में प्रस्तुत किया गया:

- i. पीआर आरएंडडी/एमपी- 02/2012-13 के तहत - 'गुग्गुल रेजिन की गैर-हानि कारक कटाई': शीर्षक नवाचार - मध्य प्रदेश में कम्मिफोरा वाइटी गम ओलियोगम रेजिन की गैर-हानि कारक कटाई पद्धति का मानकीकरण।
- ii. पीआर सं. आरएंडडी/केई-01/2016-17 के तहत नवाचार- 'व्यावसायिक रूप से कारोबार करने वाली प्रमुख कच्ची औषधियों का प्रमाणीकरण' शीर्षक: भारत में आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में व्यावसायिक रूप से कारोबार वाली प्रमुख कच्ची औषधियों का प्रमाणीकरण।
- iii. पीआर सं. आरएंडडी/यूपी-04/2009-10 के तहत नवाचार- 'बृहत पंचमूल के स्थायी स्रोत के लिए दृष्टिकोण' : नई जड़ों के विरोधी अप्रदाहक प्रोफाइलिंग के विशेष संदर्भ में बृहत्पंचमूल पर बहु-केंद्रित जांच।
- iv. पीआर सं. आरएंडडी/ओआर-01/2015-16 के तहत नवाचार- 'जैविक इनोकुलेंट्स के माध्यम से गुणवत्ता में संवृद्धि'। विभिन्न मृदा संरचना के तहत पीजीपीएफ (पादप के विकास को बढ़ावा देने वाली कवक) के अनुप्रयोग द्वारा पौधशाला प्रौद्योगिकी का मानकीकरण और पाइपर लॉगम की गुणवत्ता पर इसका प्रभाव: ओडिशा का आरईटी औषधीय पादप।
- v. पीआर सं. आरएंडडी/केई-01/2015-16 के तहत नवाचार- 'कच्ची सामग्री की सतत आपूर्ति के रूप में स्थानापन्न'। फार्माकोग्नोस्टिकल, फाइटोकेमिकल और फार्माकोलॉजिकल अध्ययनों का उपयोग करके दुर्लभ औषधीय पादपों के लिए स्थानापन्न पादप/पादपों के भाग ज्ञात करना।
- vi. पीआर सं. आरएंडडी/एमएस-04/2010-11 के तहत नवाचार - 'परंपरागत स्रोतों के विकल्प के रूप में जैव संसाधनों की उपयोगिता'। शीर्षक: नीक्टेथेस अर्बोर्टीईस की औषधीय और कॉस्मेटिक उपयोगिताओं का मूल्यांकन- केसर का विकल्प।

vii. पीआर सं. आरएंडडी/यूए-01/2009-10 के तहत नवाचार-उच्च ऊंचाई औषधीय जड़ी बूटी की खेती और संरक्षण नवाचार। शीर्षक: नार्डोस्टैचिस जटामांसी डीसी की खेती के लिए बड़े पैमाने पर प्रोपेगेशन और प्रौद्योगिकी उपाय का मानकीकरण: उच्च हिमालय की गंभीर रूप से लुप्तप्राय उच्च मूल्य वाली औषधीय जड़ी-बूटियाँ”

viii. पीआर सं. आरएंडडी/एचआर-01/2006-07 के तहत नवाचार- 'इंटरक्रॉपिंग के माध्यम से आय दोगुनी करना'। शीर्षक: हरियाणा में पोप्लर (पॉपुलस डेल्टोइड्स) आधारित कृषि प्रणालियों से औषधीय जड़ी-बूटियों और बेलों का संरक्षण, अनुकूलन और स्थापना ”।

5. राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी), आयुष मंत्रालय औषधीय पादपों की खेती, संरक्षण, विकास के संबंध में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए एनएमपीबी की केंद्रीय क्षेत्र योजना (सीएसएस) के तहत सूचना शिक्षा और संचार (आईईसी) क्रियाकलापों के माध्यम से पूरे भारत के विभिन्न संस्थानों/गैर-सरकारी संगठनों को प्रशिक्षण कार्यक्रम / कार्यशाला /संगोष्ठी / सम्मेलन आयोजन करने हेतु परियोजना मोड में सहयोग प्रदान करता है।

6. एनएमपीबी औषधीय पादपों के संबंध में जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से औषधीय पादपों से संबंध में जनता के मध्य पारंपरिक ज्ञान का प्रसार करने के लिए सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी) क्रियाकलाप में सम्मिलित रहता है। एनएमपीबी द्वारा भारत में औषधीय पादप क्षेत्र के विकास के लिए ऐसे क्रियाकलाप किए जा रहे हैं।

7. सूचना शिक्षा और संचार (आईईसी) नीति के माध्यम से हितधारकों में जागरूकता उत्पन्न करना, अनुभव दौरे, शिक्षा और कौशल विकास :

संसाधन प्रबंधकों, कृषकों, संग्राहकों, आपूर्ति श्रृंखला मध्यस्थों, व्यापारियों, स्थानीय चिकित्सकों, शोधकर्ताओं से लेकर उत्पादकों और निर्यातकों आदि विभिन्न हितधारकों की विशाल श्रृंखला औषधीय पादप क्षेत्र से जुड़ी है। उपयुक्त आउटरीच रणनीति, कौशल विकास,

उचित मान्यता, प्रोत्साहन आदि के माध्यम से विकास और प्रबंधन के महत्व के बारे में विभिन्न लक्षित समूहों के मध्य औषधीय पादपों के विभिन्न पहलुओं जैसे वनों से कटाई, कृषि तकनीकें, विनिर्माण, कच्ची सामग्री की उचित संभाल, व्यापार आदि के बारे में सूचनाओं का प्रसार करना आवश्यक है। प्रतिवेदन अवधि के दौरान, एनएमपीबी ने औषधीय पादपों की खेती, संरक्षण और सतत प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए देश भर के संस्थानों/संगठनों को प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्मेलन/संगोष्ठी /कार्यशाला का आयोजन करने हेतु 14 परियोजनाओं (संगोष्ठी-6, सम्मेलन-2, कार्यशाला-2 और प्रशिक्षण कार्यक्रम-4) के लिए सहायता प्रदान की है।

8. प्रोफेसर आयुष्मान-कॉमिक बुक:

एनएमपीबी ने कोविड-19 के प्रति जागरूकता और कोविड-19 महामारी की स्थिति में औषधीय पादपों के उपयोग के संबंध में विशेष रूप से समर्पित कॉमिक बुक "कोविड-19 से आयुष्मान की जंग : जड़ी-बूटियां " की दूसरी श्रृंखला भी प्रकाशित की। इस कॉमिक बुक का माननीय प्रधान मंत्री द्वारा 21 अप्रैल, 2022 को ग्लोबल आयुष इन्वेस्टमेंट एंड इनोवेशन समिट (जीएआईआईएस) के दौरान महात्मा मंदिर, गांधीनगर, गुजरात में विमोचन किया गया था। इसके अतिरिक्त, कॉमिक बुक "प्रोफेसर आयुष्मान की वापसी" की तीसरी श्रृंखला 8 दिसंबर, 2022 को विश्व आयुर्वेद कांग्रेस और आरोग्य एक्सपो, पंजिम, गोवा में जारी की गई थी। इस कॉमिक बुक का माननीय आयुष मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल और गोवा के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. प्रमोद सावंत द्वारा विमोचन किया गया।

9. मेडिसिनल प्लांट्स जर्नल का प्रकाशन:

एनएमपीबी औषधीय पादप संरक्षण और संसाधन विकास सोसायटी, नई दिल्ली के सहयोग से "मेडिसिनल प्लांट्स" नामक पत्रिका प्रकाशित करता रहा है। "मेडिसिनल प्लांट्स" जर्नल में औषधीय पादप की खेती, कृषि प्रौद्योगिकी, नई औषधियों के विकास,

फार्माकोग्नॉसी, एथनो-वनस्पति विज्ञान और प्रलेखन, जैव प्रौद्योगिकी सुधार और सूक्ष्म प्रोपेगेशन, कीट और रोग, रोगाणुरोधी और जैविक गुणों, विपणन और जड़ी-बूटी उत्पाद के व्यावसायीकरण के सभी पहलु सम्मिलित होते हैं।

प्रतिवेदन अवधि के दौरान इसके 14 खंड और 4 अंक प्रकाशित हुए हैं।

10. राष्ट्रीय और क्षेत्रीय रॉ ड्रग रिपॉजिटरी (एनआरडीआर और आरआरडीआर) की स्थापना:

एनएमपीबी ने केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान (सीसीआरएएस के अंतर्गत), झांसी में नेशनल रॉ ड्रग रिपॉजिटरी (एनआरडीआर) और अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए), नई दिल्ली, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए) जयपुर, राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान (एनआईएस), चेन्नई और भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग (पीसीआईएम एंड एच), गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश में कुल चार क्षेत्रीय रॉ ड्रग रिपॉजिटरी (आरआरडीआर) की स्थापना की है।

11. वर्तमान में एनएमपीबी "औषधीय पादप संरक्षण, विकास और सतत प्रबंधन की केंद्रीय क्षेत्र योजना" का समग्र देश में कार्यान्वयन कर रहा है। इस योजना के अंतर्गत, राज्य वन विभागों को स्व-स्थाने /बाह्य-स्थाने संरक्षण, संसाधन संवर्द्धन और आजीविका सृजन के लिए जेएफएमसी/बीएमसी आदि को परियोजना आधारित सहायता प्रदान की जाती है।

औषधीय पादप आदि घटक के संरक्षण, संसाधन वृद्धि घटक के तहत 1 जनवरी, 2022 से 31 दिसंबर, 2022 तक औषधीय पादप स्व-स्थाने / बाह्य-स्थाने संरक्षण और संसाधन संवर्द्धन के तीन (03) नए परियोजना प्रस्तावों का अनुमोदन किया गया है। सिक्किम राज्य की औषधीय पादपों के संसाधन संवर्द्धन की दो (02) परियोजनाओं और मिजोरम राज्य में

औषधीय पादपों के बाह्य-स्थाने संरक्षण की एक (01) परियोजना के लिए 12.53 करोड़ रुपये की स्वीकृति प्रदान की गई है।

राष्ट्रीय आयुष मिशन योजना के औषधीय पादप घटक के तहत वित्तीय वर्ष 2015-16 से 2020-21 तक समर्थित क्रियाकलाप निम्नलिखित हैं:

| राष्ट्रीय आयुष मिशन योजना के औषधीय पादप घटक के तहत वित्तीय वर्ष 2015-16 से 2020-21 तक समर्थित क्रियाकलाप | | | | | | | | |
|--|---|---------|---------|---------|---------|---------|---------|-------|
| क्र.सं | समर्थित क्रियाकलाप | 2015-16 | 2016-17 | 2017-18 | 2018-19 | 2019-20 | 2020-21 | कुल |
| 1. | औषधीय पादपों की खेती (क्षेत्रफल हेक्टेयर में) | 8722 | 12109 | 10366 | 9958 | 6794 | 8356 | 56305 |
| 2. | खेती का रखरखाव (क्षेत्र हेक्टेयर में) | 2031 | 164 | 163 | 176 | 130 | 10 | 2673 |
| 3. | पौधशालाओं की स्थापना | 32 | 39 | 38 | 38 | 50 | 23 | 220 |
| 4. | फसलोपरांत प्रबंधन | 62 | 48 | 66 | 52 | 99 | 27 | 354 |
| 5. | प्रसंस्करण इकाईयां | 1 | 2 | 3 | 1 | 16 | 2 | 25 |
| 6. | ग्रामीण/जिला संग्रहण केंद्र /खुदरा दुकानें | 0 | 11 | 9 | 17 | 2 | 3 | 42 |
| 7. | बीज जर्म-प्लाज्म केंद्र | 0 | 3 | 5 | 0 | 1 | 1 | 10 |
| 8. | प्रदर्शन स्थल | 0 | 2 | 2 | 2 | 6 | 3 | 15 |

अध्याय 11

आयुष औषधों का गुणवत्ता नियंत्रण एवं विनियमन

11.1 प्रस्तावना

औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम 1940 और उसके अंतर्गत बनाए गए नियम 1945 में यथा निर्धारित आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी औषधों का गुणवत्ता नियंत्रण और औषध लाइसेंस जारी करने से संबंधित कानूनी प्रावधानों का प्रवर्तन संबंधित राज्य/संघ राज्य क्षेत्र सरकार द्वारा नियुक्त राज्य औषध नियंत्रकों/राज्य लाइसेंसिंग प्राधिकारियों के पास निहित है। औषधि एवं प्रसाधन नियम, 1945 का नियम 158-ख आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी औषधियों के विनिर्माण के लिए लाइसेंस जारी करने हेतु विनियामक दिशानिर्देशों का प्रावधान करता है और औषधि एवं प्रसाधन नियम, 1945 का नियम 85 (क से झ) होम्योपैथी औषधियों के विनिर्माण के लिए लाइसेंस जारी करने हेतु विनियामक दिशानिर्देशों का प्रावधान करता है। यह विनिर्माताओं के लिए अनिवार्य है कि वे विनिर्माण इकाइयों और औषधियों के लाइसेंस हेतु निर्धारित अपेक्षाओं को पूरा करें जिसमें औषधि एवं प्रसाधन सामग्री नियम, 1945 की अनुसूची न और अनुसूची ड-1 के अनुसार सुरक्षा एवं प्रभावकारिता के साक्ष्य, अच्छी विनिर्माण पद्धतियों (जीएमपी) का अनुसरण करना और संबंधित भेषजसंहिता में दिए गए औषधों के गुणवत्ता मानक शामिल हैं।

11.2 औषधि नीति अनुभाग, आयुष मंत्रालय का विजन और उद्देश्य

आयुष मंत्रालय में आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी (एएसयू एंड एच) औषधियों के लिए नियामक और गुणवत्ता नियंत्रण कार्य करने और औषधियों से संबंधित पहलों को लागू करने के लिए एक औषध नीति अनुभाग (डीपीएस) है। औषध नीति अनुभाग एएसयू एंड एच औषधियों और संबंधित मामलों के संबंध में औषधि और प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 के प्रावधानों एवं उसके तहत बनाए गए नियमों और औषधि और चमत्कारिक उपचार (आक्षेपणीय विज्ञापन) अधिनियम, 1954 को प्रशासित करता है। इस संबंध में, अनुभाग एएसयू एंड एच के केंद्रीय औषध नियंत्रण ढांचे

के रूप में कार्य करता है और कानूनी प्रावधानों के समान प्रशासन प्राप्त करने और नियामक मार्गदर्शन, स्पष्टीकरण और दिशा प्रदान करने के लिए राज्य लाइसेंसिंग प्राधिकरणों/ औषध नियंत्रकों और औषध निर्माता संघों के साथ समन्वय करता है। इसके अलावा, औषध नीति अनुभाग में निम्नलिखित कार्य किए जाते हैं-

इसके अतिरिक्त औषध नीति अनुभाग में निम्नलिखित कार्य किए जाते हैं -

- I. आयुष मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित केंद्रीय क्षेत्र योजना अर्थात् आयुष औषधि गुणवत्ता एवं उत्पादन संवर्धन योजना के तहत प्राप्त राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों/निजी कंपनी के सहायता अनुदान प्रस्तावों और उपयोगिता प्रमाणपत्रों की जांच।
- II. दो वैधानिक निकायों- आयुर्वेदिक, सिद्ध और यूनानी औषधि तकनीकी सलाहकार बोर्ड (एएसयूडीटीएबी) और आयुर्वेदिक, सिद्ध और यूनानी औषधि सलाहकार समिति (एएसयूडीसीसी) का सचिवीय कार्य जिसमें उनकी बैठकें आयोजित करने और अनुवर्ती कार्रवाई हेतु समन्वय शामिल हैं।
- III. एएसयू और एच औषधियों के मामलों के लिए केन्द्रीय औषध मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ), राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग, विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी), वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय; पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारतीय गुणवत्ता परिषद, फार्मेक्सिल, भारतीय मानक ब्यूरो और अन्य सरकारी विभागों तथा नियामक एजेंसियों के साथ इंटरफेस।
- IV. एएसयू औषधियों, औषधि परीक्षण प्रयोगशालाओं का लाइसेंस और विनिर्माण इकाइयों और प्रयोगशालाओं का संयुक्त निरीक्षण करने के लिए डब्ल्यूएचओ-जीएमपी/सीओपीपी प्रमाणन योजना के तहत प्राप्त आवेदनों की तकनीकी जांच।
- V. आयुष उपचारों और स्वास्थ्य परिचर्या की नई पद्धतियों/उपचारों के लिए स्वास्थ्य बीमा कवरेज के मामले।
- VI. एएसयूएंड एच औषधों के विज्ञापनों की भेषजसतर्कता और निगरानी।

11.3 प्रमुख उपलब्धियां

गुडुची (टीनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया) के एकल अथवा सम्मिश्रित विनिर्माण हेतु कड़ा अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए सभी एएसयू निर्माताओं/औषध संघो/उद्योग हितधारकों को गुडुची के भेषजसंहितागत मानकों का अनुपालन करने के लिए 24 फरवरी 2022 को एडवाइजरी जारी की गई है।

- I. आयुष मंत्रालय ने गुडुची पर एक तकनीकी डोजियर प्रकाशित किया है, जिसे प्रोफेसर एम.एल.बी. भट्ट, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, के.जी. मेडिकल यूनिवर्सिटी, लखनऊ की अध्यक्षता में समिति द्वारा तैयार किया गया है।
- II. स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक (डीजीएचएस) की अध्यक्षता में 27.6.2022 को आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी औषध तकनीकी सलाहकार बोर्ड (एएसयूडीटीएबी) की बैठक आयोजित की गई।
- III. केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) ने ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म को एक एडवाइजरी जारी की है कि औषधि एवं प्रसाधन सामग्री नियम, 1945 की अनुसूची ड (1) में सूचीबद्ध आयुर्वेदीय, सिद्ध और यूनानी औषधों वाले अवयवों की बिक्री अथवा बिक्री की सुविधा प्लेटफार्म पर उपयोगकर्ता द्वारा क्रमशः पंजीकृत आयुर्वेद, सिद्ध या यूनानी चिकित्साभ्यासी के वैद्य नुस्खे को अपलोड करने के बाद ही उपलब्ध होगी।
- IV. आयुष मंत्रालय ने दिनांक 27.09.2022 की राजपत्र अधिसूचना सं.आ. 4562 (ई) द्वारा अपने 09 अधिकारियों को आयुष मंत्रालय में उनके सामान्य कार्य के अलावा 09 पदों के अतिरिक्त प्रभार के लिए नियुक्त किया है, अर्थात् औषध निरीक्षक के 04 पद (आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी प्रत्येक पद्धति में 01); सहायक औषध नियंत्रक के 04 पद (आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी प्रत्येक के लिए 01) और उप औषध नियंत्रक (एएसयू और एच) का 01 पद।
- V. अभी तक 32 आयुर्वेदिक औषधि विनिर्माण इकाइयों को औषध महानियंत्रक (भारत) द्वारा डब्ल्यूएचओ-जीएमपी (सीओपीपी) प्रदान किया गया है।
- VI. आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी औषधों के परीक्षण के लिए औषधि एवं प्रसाधन सामग्री नियम, 1945 के नियम 160-क से ज के तहत 78 औषध परीक्षण प्रयोगशालाओं को मंजूरी दी गई है।
- VII. उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) ने भारतीय चिकित्सा की पारंपरिक पद्धतियों (टीएसआईएम) के लिए बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआरएस) संरक्षण

को सक्षम करने के लिए सचिव, डीपीआईआईटी की अध्यक्षता में एक समिति गठित की है जिसमें सचिव, आयुष मंत्रालय सदस्य संयोजक के रूप में है। वर्ष 2022 के दौरान उक्त समिति की दो बैठकें आयोजित की गईं। उक्त समिति के विचारार्थ विषय निम्नानुसार हैं:

- क. आईपीआर के संरक्षण में आयुष औषधों के सामने आने वाली चुनौतियों की जांच।
 - ख. पारंपरिक चिकित्सा में आईपीआर के संरक्षण के लिए मौजूदा प्रावधानों में कमियां।
 - ग. अन्य देशों में विनिर्माताओं द्वारा पेटेंट आदि के अधिग्रहण को रोकने के लिए भारत के पारंपरिक ज्ञान के उचित प्रलेखन को सक्षम करना।
 - घ. आयुष चिकित्साभ्यासियों, शोधकर्ताओं और छात्रों के बीच आईपीआर के बारे में 'नए' आयुष क्षमता निर्माण को विकसित करने, सहयोगात्मक अनुसंधान और अन्य उपायों को बढ़ावा देना। आयुष औषधों के प्रचार से संबंधित कोई अन्य प्रासंगिक मामला।
 - ङ. यदि आवश्यक हो तो मौजूदा आईपीआर संबंधित कानून के दिशानिर्देशों में संशोधन और उचित संशोधनों की सिफारिशों जैसे हस्तक्षेप का सुझाव देना।
- i. कोविड से संबंधित औषधियाँ: आयुष-64, कबासुरा कुडिनीर, आयुरक्षा किट, बाल रक्षा किट, आयुर केयर किट के लिए औद्योगिक तैयारियों का आकलन करने हेतु 26.12.2022 को सलाहकार, आयुर्वेद, आयुष मंत्रालय की अध्यक्षता में एएसयू औषध विनिर्माताओं/उद्योगों के साथ एक बैठक आयोजित की गई थी।
 - ii. नवम्बर, 2022 माह में आयुष औषधि गुणवत्ता एवं उत्पादन संवर्धन योजना (एओजीयूएसवाई) की कार्यक्रम प्रबंधन इकाई (पीएमयू) के अंतर्गत कार्यक्रम प्रबंधक (तकनीकी) और (लेखा) के दो पदों और डीईओ के एक पद पर भर्ती की गई है।
 - iii. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (एमओएचएफडब्ल्यू) ने 08.07.2022 को नई औषधों, चिकित्सा उपकरणों और प्रसाधन सामग्री विधेयक, 2022 के प्रारूप पर लोगों/ हितधारकों से सुझाव / टिप्पणियां / आपत्तियां आमंत्रित की थीं। इस संबंध में उक्त प्रारूप की जांच करने और उक्त प्रारूप विधेयक के संबंध में विभिन्न हितधारकों से प्राप्त अभ्यावेदन पर विचार करने के लिए समिति गठित की गई है। आयुष मंत्रालय ने हितधारकों की टिप्पणियों सहित समिति के सुझाव स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय को सौंप दिए हैं।

iv. एओजीयूएसवाई योजना के तीसरे घटक अर्थात्, "आयुष औषधों के लिए तकनीकी मानव संसाधन तथा क्षमता निर्माण कार्यक्रमों सहित केंद्रीय और राज्य विनियामक ढांचे का सुदृढीकरण करना" के अंतर्गत आयुष मंत्रालय ने राज्यों में एएसयू एंड एच उद्योग और विनियामक कर्मियों के लिए मानव संसाधनों के विकास हेतु व्यापक कार्यक्रम आरंभ किया है। दक्षिण क्षेत्र (तमिलनाडु; आंध्र प्रदेश; तेलंगाना; केरल; कर्नाटक; पुडुचेरी; और लक्षद्वीप, अंडमान और निकोबार) के लिए राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान (एनआईयूएम), बेंगलूर, कर्नाटक में आयुष औषध विनियामकों, उद्योग कार्मिकों और अन्य हितधारकों के लिए 6 और 7 जनवरी, 2022 को प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

11.4 भेषजसतर्कता पहलें

आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी (एएसयूएंड एच) औषधों के लिए भेषजसतर्कताकार्यक्रम एओजीयूएसवाई योजना के अंतर्गत स्थापित किया गया है। यह कार्यक्रम पूरे देश में स्थापित एक राष्ट्रीय भेषजसतर्कता केंद्र (एनपीवीसीसी), पांच मध्यस्थ भेषजसतर्कता केंद्रों (आईपीवीसी) और 99 परिधीय भेषजसतर्कता केंद्रों (पीपीवीसी) के त्रि-स्तरीय नेटवर्क के माध्यम से कार्य कर रहा है।

इस कार्यक्रम का विजन एएसयू और एच औषधों में औषध सुरक्षा की निगरानी द्वारा भारतीय आबादी में रोगी की सुरक्षा में सुधार करना है जिससे इन औषधों के उपयोग से जुड़े जोखिम कम होंगे। इसके अतिरिक्त, यह कार्यक्रम विभिन्न हितधारकों के बीच जागरूकता पैदा करने, संदिग्ध प्रतिकूल प्रभावों की रिपोर्टिंग की प्रवृत्ति को विकसित करने और प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में आने वाले भ्रामक विज्ञापनों की निगरानी पर केंद्रित है।

आयुष चिकित्सीय दृष्टिकोण के संबंध में जागरूकता पैदा करने और आयुष औषधों के सही प्रयोग के बारे में शिक्षित करने, तथा स्वास्थ्य परिचर्या पेशेवरों में संभावित संदिग्ध प्रतिकूल औषध प्रतिक्रिया की रिपोर्टिंग को विकसित करना के लिए देश भर में नियमित रूप से जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। वर्तमान वर्ष में, जनवरी से नवम्बर, 2022 तक 243 जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं, जहां 20521 हितधारकों को जागरूक किया गया है।

संबंधित राज्य लाइसेंसिंग प्राधिकरणों को आपत्तिजनक विज्ञापनों की रिपोर्टिंग करना इस कार्यक्रम का एक उद्देश्य है। प्रतिवेदन अवधि (जनवरी से नवम्बर 2022 तक) के दौरान, कुल 6632 भ्रामक विज्ञापन देखे गए हैं और चूककर्ताओं के विरुद्ध संभावित कार्रवाई के लिए एसएलए को सूचित किया गया है।

2018 से केंद्र को संदिग्ध प्रतिक्रियाएं मिलना शुरू हो गई हैं। यह अलग-अलग मामले की सुरक्षा रिपोर्ट हैं और भविष्य में संदर्भ के लिए संकेत हो सकते हैं। इन्हें रिकार्ड कर के आयुष मंत्रालय के औषधि नीति अनुभाग को सूचना हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है। वर्तमान वर्ष के दौरान हमने आयुष औषधों की ऐसी 285 संदिग्ध प्रतिक्रियाओं की सूचना दी है। ये रिपोर्टें हल्के किस्म की हैं इनमें से कोई भी रिपोर्ट गंभीर नहीं पाई गई और किसी को भी अस्पताल में भर्ती करने की आवश्यकता नहीं थी। कोई मृत्यु नहीं हुई, और सभी रिपोर्ट स्व-सीमित तथा गैर-गंभीर प्रकृति की थीं।

11.5 आयुष क्षेत्र में बीमा कवरेज

बीमा कवरेज के अंतर्गत आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी, योग और प्राकृतिक चिकित्सा उपचार के व्यय संबंधी दावों की प्रतिपूर्ति / निपटान के लिए दिशानिर्देश जारी किए गए हैं, जिसमें उपचार के लिए पात्र अस्पताल, उन रोग दशाओं की अनंतिम सूची जिसमें रोगी को अस्पताल में भर्ती होने की आवश्यकता है, सांकेतिक उपचार और अस्पताल में रहने की संभावित अवधि, उपचारों/चिकित्सा की बेंचमार्क लागत, उपचार व्यय का निर्धारण जैसे बेंचमार्क दिए गए हैं। विभिन्न हितधारकों द्वारा दिए गए अभ्यावेदन अथवा उठाए गए मुद्दों को आवश्यक कार्रवाई के लिए बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई) को भेजा जाता है।

11.6 ई-औषधि पोर्टल

आयुष मंत्रालय ने आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी औषधों की ऑनलाइन लाइसेंसिंग के लिए ई-औषधि पोर्टल आरंभ किया था। अभी तक 51 लाइसेंसिंग प्राधिकरणों, 241 औषध निरीक्षकों और

2094 विनिर्माताओं ने सफलतापूर्वक स्वयं को ई-औषधि पोर्टल, जो लाइसेंस आवेदनों के लिए ऑनलाइन प्रणाली है, में अपना पंजीकरण कराया है।

अध्याय 12

भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग

12.1 प्रस्तावना

भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग (पीसीआईएमएवंएच) आयुष मंत्रालय, भारत सरकार का एक अधीनस्थ कार्यालय है। पीसीआईएमएवंएच की गतिविधियों के प्रमुख क्षेत्र भेषजसंहिता तथा योग संग्रह (फॉर्मूलरीज) के विकास के साथ-साथ भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी की पद्धतियों के लिए केंद्रीय औषधि परीक्षण सह अपीलीय प्रयोगशाला के रूप में कार्य करना है।

आयोग को शुरुआत में आयुष मंत्रालय के तहत, एक स्वायत्त निकाय के रूप में 18 अगस्त, 2010 को भारतीय चिकित्सा भेषजसंहिता आयोग (पीसीआईएम) के रूप में स्थापित किया गया तथा 31 अगस्त, 2010 को सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत पंजीकृत किया गया था। केंद्र सरकार के निर्णय के परिणामस्वरूप, (दिनांक 3 जून, 2020), पूर्ववर्ती स्वायत्त पीसीआईएमएवंएच को आयुष मंत्रालय के अधीन एक अधीनस्थ कार्यालय के रूप में पुनः स्थापित किया गया, जिसमें दो केंद्रीय प्रयोगशालाएं नामतः भारतीय चिकित्सा भेषजसंहिता प्रयोगशाला (पीएलआईएम) और होम्योपैथी भेषजसंहिता प्रयोगशाला (एचपीएल) का विलय (दिनांक 6 जुलाई, 2020 के राजपत्र द्वारा अधिसूचित) कर दिया गया है।

विलय के बाद पीसीआईएमएवंएच की कल्पना पर्याप्त प्रशासनिक संरचना हेतु की गई है, ताकि भेषजसंहितागत कार्यों की क्षमता और परिणामों को बढ़ाया जा सके, एएसयू एंड एच औषधियों के फार्माकोपियल मानकों के संगतिकरण को प्राप्त किया जा सके, दोहराव को रोका जा सके, औषधि मानकीकरण कार्य का अतिव्यापीकरण तथा प्रभावी ढंग से संसाधनों का इष्टतम उपयोग किया जा सके।

12.2 विजन एवं उद्देश्य

विजन: भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी की दवाओं के लिए गुणवत्ता मानकों की स्थापना में नोडल एजेंसी बनना।

उद्देश्य: भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी में उपयोग की जाने वाली दवाओं के लिए गुणवत्ता मानकों को तैयार करना और केंद्रीय औषधि परीक्षण सह अपीलीय प्रयोगशाला के रूप में कार्य करना।

12.2.1 गुणवत्ता के मानक

- क) 'भारतीय चिकित्सा' और 'होम्योपैथी' की औषधियों/सूत्रों के लिए फार्माकोपिया विकसित करना।
- ख) 'भारतीय चिकित्सा' के योग संग्रह विकसित करने के लिए।
- ग) प्रकाशित फार्माकोपिया और फार्मूलरीज को संशोधित/अद्यतन/परिशोधित करना, जैसा कि आवश्यक समझा जा सकता है।
- घ) पीसीआईएमएवंएच के कार्यात्मक क्षेत्र से संबंधित 'भारतीय चिकित्सा' एवं 'होम्योपैथी' के फार्माकोपिया/फॉर्मूलरीज के पूरक सार-संग्रह और अन्य संबंधित वैज्ञानिक/नियामक जानकारी प्रकाशित करना।

12.2.2 शीर्ष प्रयोगशाला

- क) 'भारतीय चिकित्सा' और 'होम्योपैथी' के लिए केंद्रीय औषधि परीक्षण सह अपीलीय प्रयोगशाला के रूप में कार्य करना।
- ख) 'भारतीय चिकित्सा' और 'होम्योपैथी' से संबंधित गुणवत्ता नियंत्रण में लगे औषधि नियामक प्राधिकारियों और कर्मियों को क्षमता निर्माण प्रशिक्षण प्रदान करना।
- ग) 'भारतीय चिकित्सा' एवं 'होम्योपैथी' की औषधियों/योगों के गुणवत्ता आश्वासन और औषधि अनुसंधान पर जागरूकता को बढ़ावा देना।

12.2.3 प्रामाणिक संदर्भ सामग्री के संग्रह

- क) 'भारतीय चिकित्सा' एवं 'होम्योपैथी' में प्रयुक्त कच्चे माल के प्रामाणिक संदर्भ कच्चेमाल संग्रह (आरआरएम) को बनाए रखना।
- ख) 'भारतीय चिकित्सा' एवं 'होम्योपैथी' की औषधियों/सूत्रीकरण के लिए स्थापित चिकित्सीय महत्व के साथ रासायनिक अंशों का प्रामाणिक संदर्भ रासायनिक मार्कर (आरसीएम) संग्रह बनाए रखना।

12.2.4 विविध

- क) औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 और उसके अंतर्गत आने वाले नियमों के साथ-साथ पीसीआईएमएवंएच के कार्यात्मक क्षेत्र से संबंधित 'सरकार' के अन्य नियमों/योजनाओं/कार्यक्रमों के प्रावधानों के प्रचार/संवर्धन/क्रियान्वन/प्रवर्तन व्यवस्था के लिए किसी भी गतिविधि का अभ्यास करना।

12.3 वर्ष 2022-23 के दौरान उपलब्धियां

जनवरी 2022 से दिसंबर 2022 के दौरान और जनवरी 2023 से मार्च 2023 के दौरान संभावित पीसीआईएमएवंएच की महत्वपूर्ण उपलब्धियां:

| क्र.सं. | मात्रात्मक प्रदेय तथा लक्ष्य | उपलब्धियां | अपेक्षित (जनवरी 2023- मार्च 2023) |
|---------|------------------------------|---|---|
| 1. | भेषजसंहिताओं का प्रकाशन | | |
| | आयुर्वेद | प्रकाशित 1. भारतीय आयुर्वेदिक भेषजसंहिता (एपीआई), भाग-I, खंड-X (खनिज एवं धातु) 2. भारतीय आयुर्वेदिक योग संग्रह (एफआई), भाग- IV (पशु चिकित्सा) | |

| | | | |
|----|----------------------|---|--------------------|
| | सिद्ध | प्रगतिशील भारतीय सिद्ध भेषजसंहिता (एसपीआई), भाग- I, खंड III 1. भारतीय सिद्ध योग संग्रह(एसएफआई), भाग- I (संशोधित तमिल) 2. भारतीय सिद्ध योग संग्रह, भाग- II (अंग्रेजी) | जारी है |
| | यूनानी | प्रकाशित 1. भारतीय यूनानी भेषजसंहिता (यूपीआई), भाग- I, खंड VII | जारी किया जाना है। |
| 2. | मोनोग्राफ तैयार करना | | |
| | नए मोनोग्राफ | पूर्ण 1. भारतीय होम्योपैथिक भेषजसंहिता (एचपीआई) खंड 11 के लिए 03 मोनोग्राफ अर्थात् <i>बोसवेलिया सेराटा</i> , <i>क्यूक्यूर्बिता सिड्रलस</i> और <i>एमिगोडेलस पर्सिका</i> पूरे हो चुके हैं। 2. आयुर्वेद की एकल दवाओं पर 20 मोनोग्राफ और आयुर्वेद के यौगिक सूत्रीकरण पर 21 मोनोग्राफ का तकनीकी डाटा भारतीय आयुर्वेदिक भेषजसंहिता के लिए पूरा कर लिया गया है। 3. सिद्ध भेषजसंहिता के लिए 10 मोनोग्राफ पूरे कर लिए गए हैं। | |
| | | प्रगतिशील आयुर्वेद, सिद्ध एवं होम्योपैथी (50 सं.) की एकल दवाओं के लिए भेषजसंहिता मानकों के विकास के संबंध में कार्य और आयुर्वेद तथा सिद्ध (40 सं.) के फॉर्मूलेशन पीसीआईएमएवंएच के वैज्ञानिक कार्य | जारी है |

| | | | |
|--|--|---|------------------------|
| | | को आउटसोर्स करने की योजना के तहत परियोजना मोड में प्रगति पर है। | |
| संशोधन | | 1. भारतीय आयुर्वेदिक भेषजसंहिता (एपीआई), भाग-1, खंड-1 2. यूनानी चिकित्सा राष्ट्रीय योग संग्रह भाग-1, II & III 3. भारतीय यूनानी भेषजसंहिता (यूपीआई), भाग-1, खंड III | जारी है |
| होम्योपैथिक दवाओं पर तैयार उत्पादों का मानकीकरण (एफपीएस) | पूर्ण | 06 एफपीएस पूर्ण कर लिए गए हैं: <i>मेंगीफेरा इंडिका, सिफेलेंद्र इंडिका, हायोसाइमस नाइजर, अशोक, कैलेंडुला ऑफिसिनैलिस और टर्मिनलिस कैबुला</i> प्रगतिशील 05 एफपीएस प्रगति पर हैं: <i>बैंकोपा मोननेरी, ऑसीमम कैनम, सॉलिडैगो विरगौरिया, सिम्फाइटम ऑफिनिनेल और अर्टिका यूरेन्स</i> | जारी है |
| 3. | मोनोग्राफ के लिए अंतर-संगठनात्मक सहयोग | | |
| | | संयुक्त विकास के तहत चल रहे मोनोग्राफों में निम्नलिखित पी-ड्राफ्ट मोनोग्राफ बीआईएस के लिए तैयार किए गए हैं: <ul style="list-style-type: none"> • <i>बोएरहावियाडिफ्यूसा</i> (पुनर्नर्वा, जड़) • <i>एंद्रोग्राफिस पैनीक्यूलेटा</i> (कलमेघ, क्षेत्रीय भाग) • <i>कैसिया सेन्ना</i> (सेन्ना, पत्ता) • <i>पिक्रोराइजाकुरोआ</i> (कटुका, जड़ के साथ) | सतत प्रक्रिया जारी है। |

| | | | |
|----|--|---|---------------|
| | | राइजोम) • <i>टर्मिनेलिया बेलेरिका</i> (बिभितका, पेरिकार्प) | |
| 4. | एएसयू एंड एच औषधियों का परीक्षण | | |
| | विभिन्न प्राधिकरणों से प्राप्त एएसयू एंड एच औषधियों का परीक्षण जैसे कि सरकारी आपूर्ति, कानूनी प्राधिकरण, पोर्ट प्राधिकरण | एएसयू औषधि नमूने 29 औषधि नमूनों की जांच की गई है। होम्योपैथिक औषधि नमूने 627 औषधि नमूनों की जांच की गई है। | तय नहीं है |
| 5 | क्षमता विनिर्माण कार्यक्रम | | |
| | अभिविन्यास प्रशिक्षण कार्यक्रम | 03 | 01 |
| | छात्रों का ज्ञानर्जन दौरा | 46 | 08 |
| 6. | कच्ची औषधि भंडार का अनुरक्षण | | |
| | वानस्पतिक संदर्भ मानक (बीआरएस) | 479 नमूनों को अनुरक्षित किया गया है। | सतत प्रक्रिया |
| | क्षेत्रीय कच्ची औषधि भंडार | 69 नमूनों को अनुरक्षित किया गया है। | 20 |
| | फाइटोकेमिकल संदर्भ मानक (पीआरएस) | 143 नमूनों को अनुरक्षित किया गया है। | सतत प्रक्रिया |
| | एएसयू एंड एच औषधि संग्रहालय के | 1320 नमूनों को अनुरक्षित किया गया है। | सतत प्रक्रिया |

| | | | |
|----|---|---|---------------|
| | नमूने | | |
| | संग्रहालय में औषधियों के नमूनों को शामिल करना | 60 कच्ची औषधियों के नमूनों को शामिल किया गया। | सतत प्रक्रिया |
| 7. | हर्बल गार्डन और जर्मप्लाज़्म बैंक | | |
| | औषधीय पौधों का अनुरक्षण | लगभग 120 औषधीय पौधे | सतत प्रक्रिया |
| | औषधीय पौधे लगाना | 04 औषधीय पौधे | सतत प्रक्रिया |
| | जर्मप्लाज़्म और बीज बैंक का अनुरक्षण | 66 बीज | सतत प्रक्रिया |

12.3.1 एक राष्ट्र एक जड़ी-बूटी-एक मानक

आयुष मंत्रालय ने 'एक राष्ट्र, एक जड़ी-बूटी और एक मानक' की अवधारणा रखी है। इसका मुख्य उद्देश्य एक जड़ी-बूटी के कई मानकों को एक में संविलीन करना है। पहले चरण के रूप में, भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग (पीसीआईएमएवंएच) ने भारतीय आयुर्वेदिक भेषजसंहिता (एपीआई), भारतीय सिद्ध भेषजसंहिता (एसपीआई), भारतीय यूनानी भेषजसंहिता (यूपीआई), भारतीय होम्योपैथिक भेषजसंहिता (एचपीआई) तथा भारतीय भेषजसंहिता (आईपी) के माध्यम से प्रकाशित किए गए/प्रकाशित होने वाली जड़ी-बूटी के कई मानकों को संविलीन किया जा रहा है।



पीसीआईएमएवंएच तथा आईपीसी के बीच समझौता जापन पर हस्ताक्षर किए गए

पीसीआईएमएवंएच तथा भारतीय भेषजसंहिता आयोग (आईपीसी) ने "एक जड़ी-बूटी, एक मानक" विकसित करने के लिए समझौता जापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस सहयोग के माध्यम से प्रकाशित प्रत्येक मोनोग्राफ में अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता आवश्यकताओं के साथ भारतीय मानक होंगे, ताकि सभी भारतीय मानक एक जड़ी-बूटी के लिए वैश्विक मानकों के साथ समकालीन बन सकें। 14 औषधियों के मोनोग्राफ पर कार्य शुरू किया गया है।

12.3.2 एसयू एंड एच औषधि के नमूनों का परीक्षण

केंद्रीय औषधि परीक्षण प्रयोगशाला होने के नाते पीसीआईएमएवंएच ने केंद्रीय और राज्य सरकार के विभिन्न प्राधिकरणों जैसे सरकारी आपूर्ति, कानूनी प्राधिकरणों, पोर्ट प्राधिकरणों से प्राप्त एसयू एंड एच औषधों के अंतर्गत जनवरी 2022 से दिसंबर 2022 के दौरान एसयू के 29 औषध नमूने और होम्योपैथिक दवाओं के 627 नमूनों का परीक्षण किया।

होम्योपैथी औषधों का परीक्षण

(01.01.2022 से 14.12.2022 तक)

| क्र. सं. | होम्योपैथी | | विधिक | पोर्ट | सरकारी आपूर्ति |
|----------|-------------|------------|-------|-------|----------------|
| 1 | मदर टिंक्चर | 189 | 171 | 19 | 437 |
| 2. | टेबलेट | 189 | | | |
| 3. | तनुकरण | 109 | | | |
| 4. | मरहम | 45 | | | |
| 5. | ग्लोब्यूलस | 31 | | | |
| 6. | फॉर्मूलेशन | 59 | | | |
| 7. | ईयर ड्रॉप्स | 02 | | | |
| 8. | आई ड्रॉप | 02 | | | |
| 9. | लैक्टोज | 01 | | | |
| | कुल | 627 | | | |

एएसयू औषधों का परीक्षण

(01.01.2022 से 14.12.2022 तक)

| क्र.सं. | एएसयू | | विधिक/ पोर्ट | कोर्ट | ड्रग इंस्पेक्टर |
|---------|------------------|----|--------------|-------|-----------------|
| 1. | पाउडर /चूर्ण | 04 | 20 | 04 | 05 |
| 2. | कैप्सूल | 16 | | | |
| 3. | च्यवनप्राश | 01 | | | |
| 4. | पुदीना तेल | 02 | | | |
| 5. | हैंड सैनिटाइज़र | 01 | | | |
| 6. | कच्ची लंबी मिर्च | 01 | | | |
| 7. | वटी | 04 | | | |

| | | | | |
|-----|----|--|--|--|
| कुल | 29 | | | |
|-----|----|--|--|--|

12.3.2 डब्ल्यूएचओ दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र के लिए पारंपरिक/हर्बल उत्पादों के लिए प्रयोगशाला आधारित गुणवत्ता नियंत्रण पर डब्ल्यूएचओ क्षेत्रीय प्रशिक्षण।

भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग (पीसीआईएमएवंएच), आयुष मंत्रालय ने विश्व स्वास्थ्य संगठन दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र (डब्ल्यूएचओ-एसईएआरओ) के सहयोग से दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र में पारंपरिक/हर्बल उत्पादों के गुणवत्ता नियंत्रण के लिए प्रयोगशाला क्षमता को उन्नत करने हेतु एक बड़ा कदम उठाया है। 1 से 3 नवंबर, 2022 के दौरान पीसीआईएमएवंएच ने विश्व स्वास्थ्य संगठन दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र के लिए पारंपरिक/हर्बल उत्पादों के लिए प्रयोगशाला आधारित गुणवत्ता नियंत्रण पर क्षेत्रीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 9 देशों (भूटान, इंडोनेशिया, भारत, श्रीलंका, थाईलैंड, नेपाल, मालदीव, तिमोर लेस्ते और बांग्लादेश) के कुल 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य हर्बल उत्पादों के गुणवत्ता नियंत्रण के लिए प्रयोग की जाने वाली प्रयोगशाला आधारित विधियों एवं तकनीकों के बारे में दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र के देशों के प्रतिभागियों के ज्ञान को संवर्धित करना था।



डब्ल्यूएचओ-सीरो के लिए पारंपरिक/हर्बल उत्पादों के लिए प्रयोगशाला आधारित गुणवत्ता नियंत्रण पर क्षेत्रीय प्रशिक्षण



डॉ किम सुंगचोल, सलाहकार, पारंपरिक चिकित्सा, डब्ल्यूएचओ-सीरो द्वारा संबोधन

12.3.4 एएसयू एंड एच औषधियों में प्रयुक्त होने वाले औषधीय पौधों का हर्बल गार्डन

आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी चिकित्सा पद्धति में उपयोग किए जाने वाले लगभग 100 पौधों के साथ-साथ होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में इस्तेमाल होने वाले 20 पौधों को दोनों हर्बल गार्डन में उगाया गया। एएसयू एंड एच दवाओं में इस्तेमाल होने वाले 60 औषधीय पौधों के बीजों को बीज बैंक में संरक्षित करने के लिए हर्बल गार्डन से कटाई की गई। इसके अलावा, 04 नए औषधीय पौधे अर्थात् हर्बल गार्डन में एब्रोमौगस्टा, सोलनम ज़ैथोकार्पम, सिंथिलियम सिनेरियम और एकलिफेन्डिका उगाए गए हैं।





होम्योपैथिक औषधियों में उपयोग किए जाने वाले औषधीय पौधों का हर्बल गार्डन (ऊपर)

एएसयू औषधों में उपयोग किए जाने वाले औषधीय पौधों का हर्बल गार्डन (नीचे)

12.3.5 औषधीय पौधों के लिए सर्वेक्षण सह संग्रह दौरा

एएसयू एंड एच पद्धतियों में उपयोग होने वाले औषधीय पौधों को एकत्र करने के लिए दिनांक 15.02.2022 को गंगा नहर रोड, मुरादनगर और दिनांक 23.02.2022 को गंगा नहर रोड, मसूरी में दो सर्वेक्षण सह संग्रह दौरे आयोजित किए गए ।

12.3.6 कच्ची औषधि संग्रह का अनुरक्षण

पीसीआईएमएवंएच एएसयू एंड एच चिकित्सा पद्धतियों में उपयोग किए जाने वाले औषधीय पौधों के वानस्पतिक संदर्भ मानकों (बीआरएस) का अनुरक्षण करता है। जनवरी 2022 से दिसंबर 2022 के दौरान, अब तक प्रामाणिक बीआरएस के 479 नमूनों का अनुरक्षण किया गया है। इसके अलावा, पीसीआईएमएवंएच द्वारा एएसयू एंड एचकच्ची औषधियों के नमूनों के संग्रहालय का भी अनुरक्षण किया जा रहा है। जनवरी 2022 से दिसंबर 2022 के दौरान, एएसयू एंड एच औषधियों के लगभग 1320 संग्रहालय नमूनों का अनुरक्षण किया गया है। पीसीआईएमएवंएच द्वारा राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी) की योजना के तहत, एएसयू एंड एच औषधियों की कच्ची औषधियों

का क्षेत्रीय संग्रह (आरआरडीआर) भी विकसित किया जा रहा है। जनवरी 2022 से दिसंबर 2022 के दौरान अब तक 69 दवाओं के नमूने संरक्षित किए गए हैं।

12.3.7 बीआईएस के लिए मोनोग्राफ

बोएरहावियाडिफ्यूसा (पुनर्नवा, जड़), एंड्रोग्राफिस पैनिकुलाटा (कलमेघ, एरियल भाग), कैसिया सेन्ना (सेना, लीफ), पिक्रोराइजाकुरोआ (कटुका, जड़ के साथ राइज़ोम), टर्मिनेलिया बेलेरिका (बिभीतका, पेरिकार्प) जैसे 05 प्ररूप मोनोग्राफ तैयार किए गए और बीआईएस को भेजने के लिए मंत्रालय को सूचित किया गया।

अध्याय 13

आयुष के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना

13.1 प्रस्तावना

आयुर्वेद और योग को भारत की सॉफ्ट पावर के रूप में स्थापित करने के लिए भारत द्वारा किए गए सक्रिय प्रयासों और साथ ही इन प्रणालियों की सुरक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य लाभ के बारे में सबूत पैदा करने से आयुर्वेद, योग और अन्य भारतीय पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली की मांग को दुनिया भर में काफी बढ़ावा मिला है।

आयुष चिकित्सा प्रणाली के बारे में जागरूकता बढ़ाने और मजबूत करने के लिए मंत्रालय ने अंतर्राष्ट्रीय सहयोग (आईसी योजना) को बढ़ावा देने के लिए एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना विकसित की जिसका उद्देश्य विदेशों में आयुष प्रणालियों के अंतर्राष्ट्रीय प्रचार, विकास और मान्यता को सुगम बनाना; हितधारकों की बातचीत को बढ़ावा देना और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयुष के बाजार विकास को बढ़ावा देना; विशेषज्ञों और सूचनाओं के अंतरराष्ट्रीय आदान-प्रदान का समर्थन करना; अंतर्राष्ट्रीय बाजार में आयुष उत्पादों को बढ़ावा देना और विदेशों में आयुष शैक्षणिक पीठों की स्थापना करना था।

13.2 योजना का विजन और उद्देश्य:

यह योजना निम्नलिखित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए है:

- क) अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयुष चिकित्सा पद्धतियों के बारे में जागरूकता और रुचि को बढ़ावा देना और मजबूत करना।
- ख) आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा-रिग्पा और होम्योपैथी के अंतर्राष्ट्रीय प्रचार, विकास और मान्यता को सुगम बनाना।
- ग) अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयुष के हितधारकों और बाजार के विकास की बातचीत को बढ़ावा देना।

- घ) आयुष पद्धतियों के प्रचार और प्रसार के लिए विशेषज्ञों और सूचनाओं के अंतर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान का समर्थन करना।
- ङ) आयुष उत्पादों/सेवाओं/शिक्षा/अनुसंधान/प्रशिक्षण को विश्व स्तर पर बढ़ावा देना।
- च) विदेशों में आयुष शैक्षणिक पीठों की स्थापना के माध्यम से शिक्षाविदों और अनुसंधान को बढ़ावा देना।

13.2 विश्व स्तर पर आयुष को बढ़ावा देने के लिए गतिविधियों के बारे में मुख्य बिंदु:

आयुष मंत्रालय अपनी आईसी योजना के तहत विश्व स्तर पर आयुष को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करता है। इस योजना के तहत, आयुष मंत्रालय आयुष उत्पादों और सेवाओं के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए भारतीय आयुष विनिर्माताओं/आयुष सेवा प्रदाताओं को सहायता प्रदान करता है; आयुष चिकित्सा प्रणाली के अंतर्राष्ट्रीय प्रचार, विकास और मान्यता को सुगम बनाता है; अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयुष के हितधारकों और बाजार के विकास को बढ़ावा देता है; विदेशों में आयुष अकादमिक पीठों की स्थापना के माध्यम से शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा देना और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयुष चिकित्सा पद्धति के बारे में जागरूकता और रुचि को बढ़ावा देने और मजबूत करने के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला/संगोष्ठी आयोजित करता है।

अब तक, आयुष मंत्रालय ने आयुर्वेद, योग और अन्य सभी आयुष प्रणालियों के प्रचार के लिए 50 से अधिक देशों के साथ देश-दर-देश समझौता ज्ञापन, अनुसंधान सहयोग, आयुष की अकादमिक पीठों की स्थापना के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर, विदेशी विश्वविद्यालयों, आयुर्वेद/आयुष अस्पतालों/अकादमिक संस्थान की स्थापना, हर्बल गार्डन की स्थापना, विशेषज्ञों का आदान-प्रदान, आयुष विशेषज्ञों की प्रतिनियुक्ति, कार्यशालाओं, सम्मेलनों आदि का आयोजन करके सहयोग किया है। हालांकि, दुनिया के विभिन्न भागों के विदेशी छात्रों को आयुर्वेद, योग, यूनानी आदि संबंधित आयुष प्रणालियों को सीखने के लिए प्रति वर्ष 104 सीटें आवंटित की जाती हैं। छात्रों को भारत में आयुष प्रणाली का अध्ययन करने के लिए छात्रवृत्ति, शिक्षण शुल्क, आने-जाने का हवाई किराया आदि प्रदान किया जाता है। योजनान्तर्गत शैक्षणिक वर्ष 2022-23 हेतु कुल 66 सीट सुनिश्चित की गयी है।

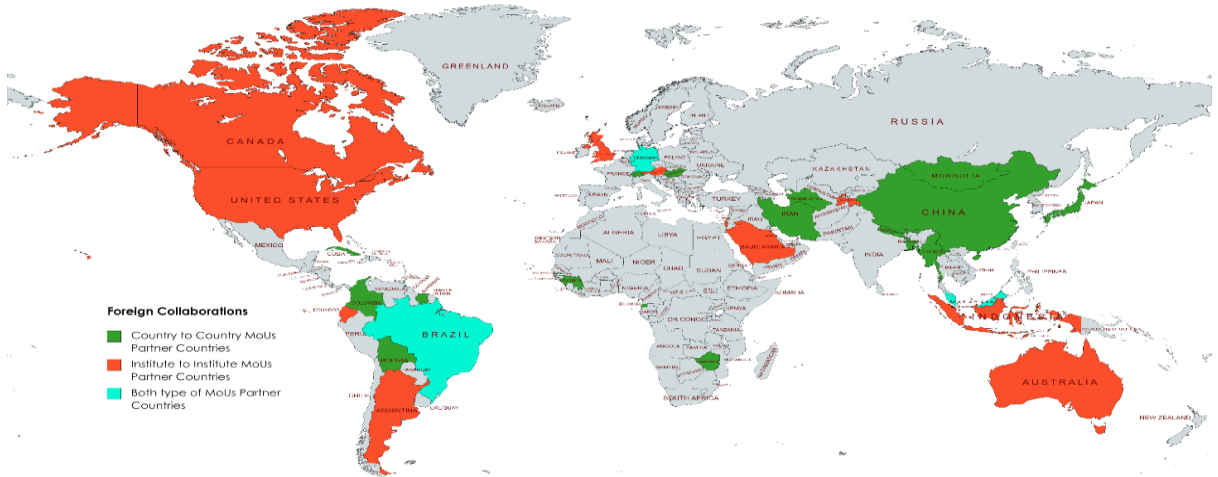
वर्तमान में आयुष फैलोशिप योजना के तहत निम्नलिखित 32 देशों के 260 छात्र विभिन्न संस्थानों में आयुष शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं:

| क्र.सं. | देश | क्र.सं. | देश |
|---------|---------------|---------|---------------|
| 1 | अफ़ग़ानिस्तान | 17 | मोज़ाम्बिक |
| 2 | आर्मीनिया | 18 | नेपाल |
| 3 | ऑस्ट्रिया | 19 | नीदरलैंड |
| 4 | बांग्लादेश | 20 | पुर्तगाल |
| 5 | भूटान | 21 | रूस |
| 6 | ब्राज़िल | 22 | दक्षिण कोरिया |
| 7 | बुल्गारिया | 23 | श्रीलंका |
| 8 | क्रोएशिया | 24 | सूरीनाम |
| 9 | जर्मनी | 25 | सीरिया |
| 10 | यूनान | 26 | तंजानिया |
| 11 | इंडोनेशिया | 27 | थाईलैंड |
| 12 | ईरान | 28 | तुर्किए |
| 13 | जापान | 29 | युगांडा |
| 14 | केन्या | 30 | अमेरीका |
| 15 | मलेशिया | 31 | वेनेजुएला |
| 16 | मॉरीशस | 32 | वियतनाम |



13.2.1 विभिन्न देशों के साथ समझौता ज़ापन:

अब तक, आयुष मंत्रालय ने देश दर देश 24 देशों नेपाल, बांग्लादेश, हंगरी, त्रिनिदाद और टोबैगो, मलेशिया, मॉरीशस, मंगोलिया, तुर्कमेनिस्तान, म्यांमार, डब्ल्यूएचओ- जिनेवा, जर्मनी (संयुक्त घोषणा), ईरान, साओ टोम और प्रिंसिपे, इक्वेटोरियल गिनी, क्यूबा, कोलम्बिया, जापान (एमओसी), बोलीविया, गाम्बिया, गिनी गणराज्य, चीन, सेंट विंसेंट और द ग्रेनाडाइन्स, सूरीनाम, ब्राजील और जिम्बाब्वे के साथ पारंपरिक चिकित्सा और होम्योपैथी के क्षेत्र में सहयोग के लिए समझौता ज़ापनों पर हस्ताक्षर किए हैं। इन समझौता ज़ापनों के तहत मंत्रालय आयुष को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कार्यकलापों का संचालन कर रहा है। विदेशी संस्थानों/विश्वविद्यालयों के साथ सहयोगात्मक अनुसंधान/शैक्षणिक सहयोग करने के लिए 43 समझौता ज़ापनों पर हस्ताक्षर किए गए।



13.2.2 विदेशी विश्वविद्यालयों/संस्थानों में आयुष शैक्षणिक पीठों की स्थापना:

आयुष शैक्षणिक पीठों की स्थापना के लिए ऑस्ट्रेलिया, मॉरीशस, लातविया, हंगरी, स्लोवेनिया, आर्मेनिया, रूस, मलेशिया, दक्षिण अफ्रीका, बांग्लादेश, थाईलैंड आदि विदेशी संस्थानों के साथ 15 समझौता ज़ापनों पर हस्ताक्षर किए गए हैं।



13.2.3 आयुष सूचना प्रकोष्ठ-

चिकित्सा की आयुष पद्धतियों के बारे में प्रामाणिक जानकारी प्रसारित करने के लिए 39 देशों में आयुष सूचना प्रकोष्ठ की स्थापना की गई है। आयुर्वेद दिवस, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस आदि भी हर साल आयुष सूचना प्रकोष्ठों के माध्यम से मनाए जा रहे हैं।

13.2.4 विदेशी संस्थानों के साथ अनुसंधान सहयोग और आयुष शैक्षणिक पीठों की स्थापना के लिए

समझौता जापनों पर हस्ताक्षर

- क) अकादमिक पीठ की स्थापना के लिए केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस) और यूनिवर्सिडाड ऑटोनोमा डी न्यूवो लियोन मेक्सिको के बीच एक समझौता जापन।
- ख) अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) और यूनिवर्सिटी हेल्थ नेटवर्क, (यूएचएन) कनाडा के बीच एक समझौता जापन।
- ग) अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) और फेडरल यूनिवर्सिटी ऑफ रियो डी जनेरियो (यूएफआरजे) और दा ब्राजीलियन एकेडमिक कंसोर्टियम फॉर इंटीग्रेटिव हेल्थ (सीएबीएसआईएन), ब्राजील के बीच एक समझौता जापन।

- घ) राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर और फिलीपींस इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रेडिशनल एंड अल्टरनेटिव हेल्थकेयर, फिलीपींस के बीच एक समझौता ज्ञापन
- ड) राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ (आरएवी) और फंडेसियन डी सालूद आयुर्वेद प्रेमा, अर्जेटीना के बीच एक समझौता ज्ञापन।
- च) नई दिल्ली के वाणिज्य भवन में 15वें भारत ताइवान आर्थिक परामर्श के दौरान 4 नवंबर, 2022 को पारंपरिक चिकित्सा में सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।



- छ) 6.10.2022 को आयुर्वेद में अनुसंधान सहयोग पर अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, नई दिल्ली और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड इंडस्ट्रियल साइंस एंड टेक्नोलॉजी, जापान के बीच समझौता ज्ञापन।



ज) आयुर्वेद में अकादमिक सहयोग की स्थापना के लिए अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान और यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेज ऑफ हवाना (यूसीएमएच), हवाना, क्यूबा के बीच एक संस्थान स्तर के समझौता ज्ञापन पर 9.12.2022 को गोवा, भारत में आयोजित विश्व आयुर्वेद कांग्रेस में हस्ताक्षर किए गए थे।



13.4 01.01.2022 से 31.12.2022 के दौरान आयुष के अंतर्राष्ट्रीय प्रचार के लिए मंत्रालय द्वारा की गई पहल/उपलब्धियां:

क) कोविड-19 के शमन में आयुष की भूमिका और कोविड-19 के लिए भारत में किए गए नैदानिक अध्ययनों के निष्कर्षों/परिणामों सहित मंत्रालय की गतिविधियों/पहलों को विभिन्न बहुपक्षीय/द्विपक्षीय मंचों, अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों जैसे-डब्ल्यूएचओ, यूनेस्को, एससीओ, बिम्सटेक, आईबीएसए और विदेशी स्वास्थ्य प्राधिकरण आदि में प्रस्तुत किया गया है।

ख) मंत्रालय ने आयुष और कोविड-19 पर वर्चुअल सेमिनार/वेबिनार/कार्यशाला आदि आयोजित करने में भारतीय मिशन/दूतावासों/विदेशी एमओयू भागीदार संस्थानों का सहयोग किया है।

ग) डब्ल्यूएचओ के साथ सहयोग:

- i. "भारत में पारंपरिक चिकित्सा के डब्ल्यूएचओ वैश्विक केंद्र की स्थापना": महानिदेशक डब्ल्यूएचओ ने 13 नवंबर 2020 को आयुर्वेद दिवस के अवसर पर "भारत में पारंपरिक चिकित्सा के लिए डब्ल्यूएचओ वैश्विक केंद्र" की स्थापना की घोषणा की। तदनुसार, समयबद्ध तरीके से इस केंद्र की स्थापना के लिए गतिविधियों के समन्वय और निगरानी के लिए भारत सरकार और डब्ल्यूएचओ की ओर से संयुक्त कार्यबल का गठन किया गया। संयुक्त कार्य बल ने कई दौर की बैठकें कीं और भारत में इस केंद्र की स्थापना के लिए भारत सरकार और डब्ल्यूएचओ के बीच हस्ताक्षर किए जाने वाले मेजबान देश समझौते के पाठ पर चर्चा की और इसे अंतिम रूप दिया।
- ii. आयुष मंत्रालय के प्रयासों से, डब्ल्यूएचओ मुख्यालय, जिनेवा के टीसीआई एकक में डब्ल्यूएचओ के पेशेवर ग्रेडिंग स्केल में पी-4 स्तर के समकक्ष ग्रेड पर भारत के मौजूदा तकनीकी पद को पी-5 स्तर पर उन्नत किया गया है। तदनुसार, मंत्रालय ने डब्ल्यूएचओ मुख्यालय, जिनेवा में पी-5 स्तर पर द्वितीयक आधार पर एक आयुष विशेषज्ञ की प्रतिनियुक्ति की है, जिन्होंने डब्ल्यूएचओ मुख्यालय जिनेवा में तैनाती ग्रहण कर ली है।

iii. आयुष/पारंपरिक चिकित्सा के क्षेत्र में बहुपक्षीय मंचों जैसे- ब्रिक्स, आईओआरए, जी-20 आदि के साथ बातचीत:

घ) भारत की जी-20 अध्यक्षता

भारत सरकार 2022-2023 में जी20 की अध्यक्षता कर रही है और यह भारत के लिए न केवल जी20 को चलाने का अवसर होगा बल्कि सामाजिक आर्थिक और वैज्ञानिक विकास के साथ-साथ हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विविधता और विरासत में हमारी राष्ट्रीय उपलब्धियों को प्रदर्शित करने का अवसर होगा। हमारे जी20 के दौरान, कई क्षेत्रीय बैठकें आयोजित की जाएंगी, जिनकी संख्या सौ से अधिक (मंत्रालयी, वरिष्ठ अधिकारी, कार्यकारी समूह, तकनीकी, कार्य बल, पी2पी आदि) होने का अनुमान है। मंत्रालय ने भारत की जी20 अध्यक्षता की तैयारी पर विदेश मंत्रालय में कई अंतर-मंत्रालयी बैठक में भाग लिया है और अध्यक्षता के दौरान पारंपरिक औषधीय से संबंधित गतिविधियों के आयोजन पर अपनी जानकारी प्रदान की है।

ड) बिम्सटेक

बिम्सटेक टास्क फोर्स ऑन ट्रेडिशनल मेडिसिन (बीटीएफटीएम) की चौथी बैठक 20 जनवरी 2022 को वर्चुअली श्रीलंका के कोलंबो में आयोजित की गई थी। केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस) के महानिदेशक (प्रभारी) ने बैठक में भाग लिया और पारंपरिक चिकित्सा पर प्रस्तुति दी।

च) आयुष मंत्रालय और वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), नई दिल्ली, भारत ने पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी (टीकेडीएल) और जैविक विविधता अधिनियम (बीडीए) 2002 पर वर्चुअल मोड में बिम्सटेक सदस्य राज्यों के लिए 07 और 08 अप्रैल 2022 तक दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। थाईलैंड, बांग्लादेश, भूटान, म्यांमार, श्रीलंका से 22 अधिकारियों/विशेषज्ञों ने उक्त प्रशिक्षण में भाग लिया।

छ) पारंपरिक चिकित्सा पर एससीओ फोरम

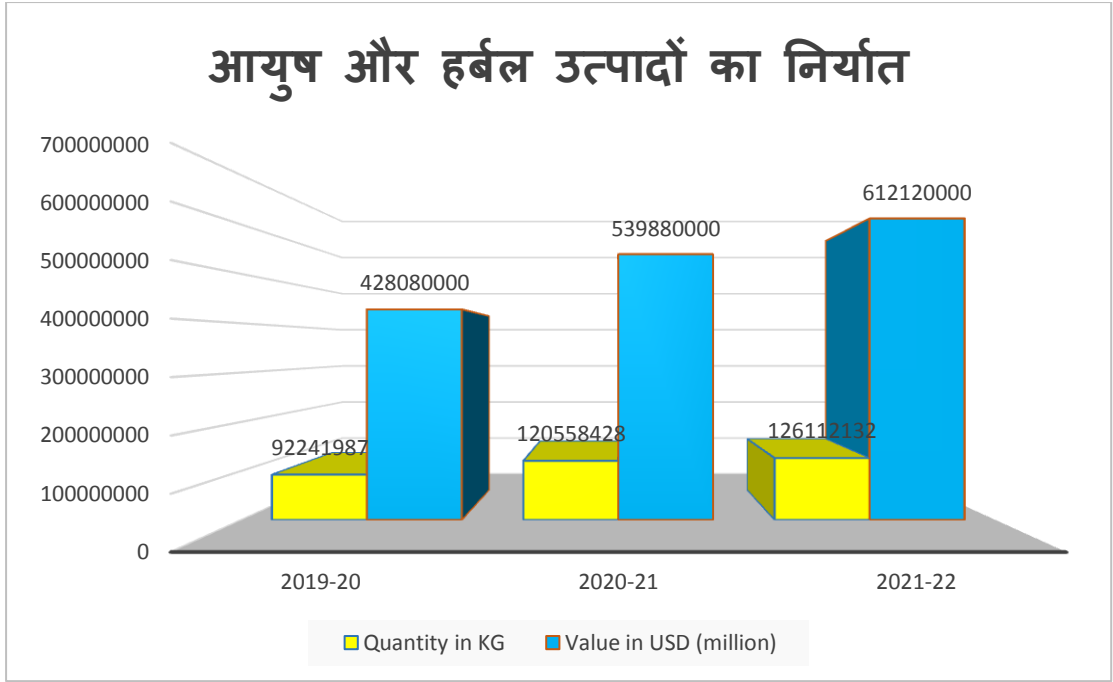
आयुष मंत्रालय के सलाहकार (आयु.), निदेशक, आयुष मंत्रालय और सीसीआरएस के अनुसंधान अधिकारी (आयु.) का एक संयुक्त प्रतिनिधिमंडल पारंपरिक चिकित्सा में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) और स्वास्थ्य मंत्री का एससीओ के मंच में भाग लेने के लिए आयुष मंत्रालय द्वारा प्रतिनियुक्त किया गया था, जो 'आधुनिक स्वास्थ्य प्रणाली में पारंपरिक (लोक) चिकित्सा का एकीकरण' विषय पर 07 से 8 जून 2022 तक ताशकंद, उज्बेकिस्तान में आयोजित किया गया था।

ज) पारंपरिक चिकित्सा पर ब्रिक्स उच्च-स्तरीय बैठक 11 मई 2022 को पारंपरिक चिकित्सा पर ब्रिक्स सहयोग और कोविड-19 के उपचार में पारंपरिक चिकित्सा की भूमिका के विषय पर वर्चुअल रूप से आयोजित की गई थी।

झ) 2021 से 2025 तक स्वास्थ्य प्रणाली और देखभाल तक पहुंच को मजबूत करने के लिए आसियान हेल्थ क्लस्टर 3 का कार्यक्रम 08-10 फरवरी 2022 को वर्चुअल मोड में आयोजित किया गया था।

13.5 अन्य उपलब्धियां

क) भारत सरकार के ठोस प्रयासों के परिणामस्वरूप 2021 में आयुष और हर्बल दवाओं के निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है:



ख) प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी घरेलू स्तर पर समग्र स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने राष्ट्र को स्वस्थ और मजबूत बनाने में सहयोग करने के लिए “हर दिन हर घर आयुर्वेद” थीम पर सातवें आयुर्वेद दिवस 23 अक्टूबर 2022 को धन्वंतरि जयंती (धनतेरस) के अवसर पर उपयुक्त तरीके से मनाया गया। विदेश मंत्रालय/विदेश में सभी भारतीय मिशनों से अनुरोध किया गया था कि वे सातवें आयुर्वेद दिवस को सर्वोत्तम संभव तरीके से मनाएं और आयुर्वेद के माध्यम से स्वास्थ्य के संवर्धन के लिए चिह्नित थीम पर रेडियो वार्ता/रोड शो/टीवी शो आदि जनसंवाद तथा अन्य संबंधित कार्यक्रम आयोजित करने जैसी विभिन्न गतिविधियां करें।

ग) आयुष मंत्रालय हर साल विदेशों में भारतीय मिशनों को तकनीकी सहायता प्रदान करने के साथ भारत और दुनिया भर में 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाता है। इस वर्ष 2022 में 08वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मैसूर के साथ-साथ 190 से अधिक देशों में मनाया गया। विभिन्न गतिविधियां जैसे- योग सत्र/व्याख्यान/वेबिनार/कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इस कार्यक्रम में बड़ी भागीदारी और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से भी बहुत उत्साह देखा गया।

घ) आयुष मंत्रालय ने आईसीसीआर के माध्यम से भारत के प्रमुख संस्थानों में आयुष पद्धति में स्नातक-पूर्व (यूजी), स्नातकोत्तर (पीजी) और पीएचडी पाठ्यक्रमों में 101 देशों के 104 पात्र विदेशी नागरिकों को छात्रवृत्ति प्रदान करने का प्रस्ताव दिया।

ड) मंत्रालय ने वैश्विक स्तर पर आयुष के प्रचार-प्रसार के लिए कई अंतरराष्ट्रीय बैठकों/कार्यक्रमों/वेबीनार आदि में भाग लिया।

च) आयुष मंत्रालय, भारत सरकार और स्वास्थ्य मंत्रालय, जर्मनी सरकार के बीच पारंपरिक चिकित्सा पर दूसरी जेडब्ल्यूजी बैठक का आयोजन 14 नवंबर 2022 को नई दिल्ली में किया गया था। इस बैठक ने स्वास्थ्य सेवा वितरण प्रणाली में शिक्षा, अनुसंधान और चिकित्सा की आयुष प्रणाली को शामिल करने के क्षेत्र में दोनों पक्षों द्वारा शुरू की जा रही विभिन्न गतिविधियों का अवलोकन प्रदान किया।

छ) भारत में पारंपरिक चिकित्सा के डब्ल्यूएचओ वैश्विक केंद्र (जीसीटीएम) की स्थापना - आयुष मंत्रालय और डब्ल्यूएचओ ने भारत में पारंपरिक चिकित्सा के लिए पहले डब्ल्यूएचओ के वैश्विक केंद्र की स्थापना के लिए 25.03.2022 को एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। 19.04.2022 को डब्ल्यूएचओ-जीसीटीएम का ग्राउंड-ब्रेकिंग समारोह भारत के माननीय प्रधान मंत्री, डब्ल्यूएचओ के महानिदेशक और अन्य माननीय गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में जामनगर (गुजरात) में आयोजित किया गया था। इस केंद्र का उद्देश्य डब्ल्यूएचओ की पारंपरिक चिकित्सा नीति (2014-23) को लागू करने के लिए सहायता प्रदान करना और सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज की यात्रा के हिस्से के रूप में पारंपरिक चिकित्सा की भूमिका को मजबूत करने के लिए विकासशील नीतियों और कार्य योजनाओं में राष्ट्रों का समर्थन करना है। डब्ल्यूएचओ-जीसीटीएम के लिए कुल स्वीकृत बजटीय प्रावधान 2022 से 10 वर्षों के लिए 85 मिलियन अमरीकी डालर है। आयुष मंत्रालय ने 82,72,837/- अमरीकी डालर (63.25 करोड़ रुपये के बराबर) जारी किए हैं।

ज) 20-22 अप्रैल को "वैश्विक आयुष निवेश और नवाचार शिखर सम्मेलन" के दौरान चर्चा के लिए "यूएचसी-क्षमता और चुनौतियों को प्राप्त करने के लिए आयुर्वेद, योग/पारंपरिक

चिकित्सा/एकीकृत चिकित्सा का एकीकरण" विषय के साथ एक 'डिप्लोमैटिक कॉन्क्लेव' आयोजित किया गया था। इस कॉन्क्लेव के दौरान चर्चा और प्रस्तुति के क्षेत्र आयुष नवाचार और अनुसंधान एवं विकास पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करना-परिप्रेक्ष्य और आगे का रास्ता; संबंधित देशों में पारंपरिक चिकित्सा/एकीकृत चिकित्सा/हर्बल दवाओं की स्थिति; संबंधित देशों में पारंपरिक चिकित्सा/एकीकृत चिकित्सा/हर्बल दवाओं के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप; पारंपरिक चिकित्सा/समग्र चिकित्सा के क्षेत्र में संबंधित सरकार द्वारा की गई पहल; पारंपरिक चिकित्सा/समग्र चिकित्सा के माध्यम से सुरक्षित और स्वस्थ जीवन के लिए चिकित्सा मूल्य यात्रा बढ़ाने; हर्बल क्षेत्र में व्यापार के अवसरों पर चर्चा की गई।

झ) मंत्रालय ने 22.04.2022 को "आयुष निर्यातकों के साथ नियामकों की बातचीत" पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। टीजीए-ऑस्ट्रेलिया के एक सहित कुल 07 नियामकों/विशेषज्ञों ने सत्र के दौरान प्रस्तुतियां दीं और निर्यातकों/विनिर्माताओं के साथ बातचीत की। लगभग 50 आयुष निर्यातकों/विनिर्माताओं ने कार्यशाला में भाग लिया और नियामकों/विशेषज्ञों के साथ सक्रिय रूप से बातचीत की।

ज) 07 नवंबर, 2022 को पहली संयुक्त कार्य समूह की बैठक में भाग लेने के लिए मंत्रालय के एक प्रतिनिधिमंडल ने ब्रासीलिया, ब्राजील का दौरा किया। यह बैठक 2020 में आयुष मंत्रालय, भारत और स्वास्थ्य मंत्रालय, ब्राजील के बीच हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन के उद्देश्यों के तहत थी।



ट) सचिव आयुष की अध्यक्षता में आयुष मंत्रालय के एक प्रतिनिधिमंडल ने 18 से 21 सितंबर, 2022 तक आईटीयू/डब्ल्यूएचओ फोकस ग्रुप ऑन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस फॉर हेल्थ (एफजी-एआई4एच) की कार्यशाला और बैठक में भाग लेने के लिए हेलसिंकी, फिनलैंड का दौरा किया। सचिव, आयुष मंत्रालय ने "पारंपरिक चिकित्सा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका और आयुष की डिजिटल पहल" पर एक प्रस्तुति दी।



ठ) 28.10.2022 को लातविया में आयुर्वेद दिवस समारोह, जिसमें आयुष के माननीय कैबिनेट मंत्री का एक वीडियो संदेश, सचिव आयुष और स्वीडन में भारत के राजदूत का संबोधन शामिल था।



ड) आयुष मंत्रालय और क्यूबा गणराज्य के राजदूत के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल के बीच 26.9.2022 को आयुष भवन में पारंपरिक चिकित्सा पद्धति के क्षेत्र में सहयोग पर एक द्विपक्षीय बैठक हुई।



ढ) पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के क्षेत्र में सहयोग पर 15 दिसंबर, 2022 को डीआईएनएवीआईएसए, पराग्वे और आयुष मंत्रालय के बीच एक वर्चुअल बैठक आयोजित की गई। स्वास्थ्य और स्वच्छता निगरानी मंत्रालय, पैराग्वे से, भारत के दूतावास से (पराग्वे में भारत के राजदूत सहित) और विशेष सचिव आयुष की अध्यक्षता वाले आयुष मंत्रालय से कई गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।



- ण) आयुर्वेद और अन्य पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के क्षेत्र में सहयोग पर आयुष मंत्रालय, भारत सरकार और पारंपरिक एवं पूरक चिकित्सा प्रभाग (टी एंड सीएम), स्वास्थ्य मंत्रालय (एमओएच), मलेशिया सरकार के बीच 7वीं द्विपक्षीय तकनीकी बैठक (बीटीएम) 09 दिसंबर 2022 को पंजिम, गोवा में आयोजित की गई थी। मलेशिया के साथ और अधिक सहयोग किए जाने पर चर्चा हुई। डॉ. गोह चेंग सून, निदेशक, टी एंड सीएम डिवीजन, (एमओएच) मलेशिया, और श्री प्रमोद के पाठक, विशेष सचिव, आयुष मंत्रालय ने बैठक का नेतृत्व किया।
- त) आईसी योजना के तहत, आयुष पद्धति के प्रचार और प्रसार के लिए, आयुष मंत्रालय ने कई आयुष विशेषज्ञों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वैज्ञानिक पत्रों की प्रस्तुति के लिए, कई आयुष उद्योगों/उद्यमियों को कार्यक्रमों में भाग लेने और विभिन्न देशों में आयुष उत्पादों के पंजीकरण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की।
- थ) आयुष मंत्रालय और वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), नई दिल्ली, भारत ने पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी (टीकेडीएल) और जैविक विविधता अधिनियम (बीडीए) 2002 पर वर्चुअल मोड पर बिम्सटेक सदस्य राज्यों के लिए 7 और 8 अप्रैल, 2022 तक दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। थाईलैंड, बांग्लादेश, भूटान, म्यांमार, श्रीलंका से उपरोक्त प्रशिक्षण के लिए बाईस अधिकारियों/विशेषज्ञों ने भाग लिया।

- द) बिम्सटेक टास्क फोर्स ऑन ट्रेडिशनल मेडिसिन (बीटीएफटीएम) की चौथी बैठक 20 जनवरी, 2022 को श्रीलंका के कोलंबो में वर्चुअली आयोजित की गई थी। महानिदेशक (प्रभारी), केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस) ने बैठक में भाग लिया।
- ध) आयुष मंत्रालय ने दिनांक 04.10.2022 से एक वर्ष की अवधि के लिए योग और पारंपरिक चिकित्सा केंद्र, अशगबत, तुर्कमेनिस्तान में एक आयुर्वेद विशेषज्ञ की प्रतिनियुक्ति की।
- न) ताजिकिस्तान में भारत की पारंपरिक चिकित्सा पद्धति विकसित करने हेतु दोनों देशों के बीच सहयोग को मजबूत करने के तरीके पर चर्चा करने के लिए आयुष मंत्रालय और ताजिकिस्तान के राजदूत के बीच 12 सितंबर, 2022 को एक बैठक हुई।
- प) रूस के साथ फार्मास्युटिकल्स की दूसरी जेडब्ल्यूजी बैठक 21 दिसंबर, 2022 को वर्चुअल मोड में आयोजित की गई और इसका प्रतिनिधित्व पीसीआईएम एंड एच के निदेशक ने किया।
- फ) ताइवान से तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल यानी श्री यी-त्सौ हुआंग, महानिदेशक, चीनी चिकित्सा और फार्मसी विभाग, स्वास्थ्य और कल्याण मंत्रालय; सुश्री त्साई-पे हसिह, अनुभाग प्रमुख, चीनी चिकित्सा और फार्मसी विभाग, स्वास्थ्य और कल्याण मंत्रालय; और सुश्री यिंग-जंग चेन, कार्यकारी अधिकारी, चीनी चिकित्सा और फार्मसी विभाग, स्वास्थ्य और कल्याण मंत्रालय ने 3 नवंबर, 2022 को अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) का दौरा किया।



अध्याय 14

अन्य केन्द्रीय क्षेत्र की योजनाएँ

14.1 आयुर्जान

14.1.1 प्रस्तावना

आयुष मंत्रालय वित्त वर्ष 2021-22 से “आयुर्जान” नामक एक अम्ब्रेला केंद्रीय क्षेत्र की योजना को कार्यान्वित कर रहा है, जिसके दो घटक हैं। यथा:-

- (i) आयुष में क्षमता निर्माण और सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई); और
- (ii) आयुष में अनुसंधान और नवाचार। यह योजना वित्त वर्ष 2025-26 तक स्वीकृत है।

14.1.2 विजन और उद्देश्य

योजना का मुख्य उद्देश्य शैक्षणिक गतिविधियों, प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण आदि प्रदान करके आयुष में शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार का समर्थन करना है।

14.1.2.1 उद्देश्य

क. आयुष में क्षमता निर्माण और सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई)

योजना की समग्र संरचना का उद्देश्य आयुष कर्मियों को आवश्यकता-आधारित व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करने और ज्ञान अंतराल को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करना है।

आयुष में क्षमता निर्माण और सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई) के उप-घटक:

- क) सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई) कार्यक्रम।
- ख) वेब-आधारित (ऑन-लाइन) शैक्षणिक कार्यक्रम।
- ग) डोमेन ज्ञान रखने वाले संगठनों को सहायता।

- घ) सीएमई के लिए दो दिवसीय राष्ट्रीय स्तर की कार्यशालाएं/सम्मेलन; और
- ड) 50 निजी चिकित्सकों के लिए दो दिवसीय विषय-/विशेषता सीएमई

ख. आयुष घटक में अनुसंधान और नवाचार

- क) प्राथमिकता वाली बीमारियों के लिए अनुसंधान और विकास (आर एंड डी) आधारित आयुष दवाओं का विकास।
- ख) आयुष उत्पादों और अभ्यास के लिए सुरक्षा, मानकीकरण और गुणवत्ता नियंत्रण पर डेटा उत्पन्न करना।
- ग) आयुष दवाओं और उपचारों की प्रभावकारिता पर साक्ष्य-आधारित समर्थन विकसित करना।
- घ) शास्त्रीय ग्रंथों पर शोध को प्रोत्साहित करना और आयुष पद्धतियों के मूलभूत सिद्धांतों की जांच करना।
- ड) कच्ची औषधियों और तैयार आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी औषधियों में भारी धातुओं, कीटनाशक अवशेषों, माइक्रोबियल भार, सुरक्षा/विषाक्तता आदि पर डेटा रखना।
- च) आयुष निर्यात बढ़ाने के लिए बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) क्षमता वाले आयुष उत्पादों को विकसित करना।
- छ) आयुष पद्धतियों में संभावित मानव संसाधन विकसित करना, विशेष रूप से आयुष पद्धतियों से संबंधित वैज्ञानिक योग्यता और विशेषज्ञता को विकसित करना।
- ज) आयुष विभाग और अन्य संगठनों/संस्थानों के बीच संयुक्त अनुसंधान उद्यम विकसित करना।

14.1.2.2 वित्त पोषण का उद्देश्य

क. आयुष घटक में क्षमता निर्माण और सीएमई:

आयुष कर्मियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए पात्र संस्थानों/संगठनों को सहायता अनुदान प्रदान किया जाता है।

ख. आयुष घटक में अनुसंधान और नवाचार

आयुष पद्धतियों के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान करने के लिए पात्र संस्थानों/संगठनों को सहायता अनुदान प्रदान किया जाता है और अनुसंधान कर्मचारियों को वेतन के भुगतान, उपकरण, रसायन और अभिकर्मकों की खरीद, आकस्मिकता और संस्थागत सहायता के लिए अनुदान का उपयोग किया जाता है।

14.1.3 प्रमुख उपलब्धियां

आयुष घटक में क्षमता निर्माण और सीएमई

- वित्तीय स्थिति: 1 जनवरी से 31 दिसंबर, 2022 की अवधि के दौरान, प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए विभिन्न संस्थानों/संगठनों को 6.40 करोड़ रुपये की धनराशि जारी की गई।
- विभिन्न संस्थानों/संगठनों द्वारा जनवरी से दिसंबर, 2022 की अवधि में आयुष शिक्षकों/चिकित्सकों/शोधकर्ताओं आदि के लिए कुल 64 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें 1884 प्रशिक्षुओं को विभिन्न विषयों/विषयों पर प्रशिक्षित किया गया।

आयुर्वेद- रचना शरीर; पंचकर्म; द्रव्यगुण; संहिता सिद्धांत; चिकित्सकों के लिए सीएमई; रसशास्त्र और भैषज्य कल्पना; कायाचिकित्सा; कौमारभृत्य; क्रिया शरीर; रोग निदान; शल्य तंत्र; शालाक्य तंत्र; स्त्री रोग; अगदा तंत्र; और स्वस्थवृत्त।

होम्योपैथी - रिपोर्टरी; मटेरिया मेडिका; जिन और ऑब्स।

सिद्ध - वर्मम,

यूनानी चिकित्सा- तहफुज़िवा समाजी तिब; महियातुल अमराज़; इल्मुल कबलतवा अमराज़-ए-निस्वान; अमराज-ए-निस्वानवा आफताल; एडविया; मौलाजात; इल्मुल-सैदला; अमराज-ए-जिल्दवा ताजिनियत;

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा - योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा चिकित्सकों के लिए सीएमई।

अनुसंधान एवं विकास - आयुष पद्धतियों की वैज्ञानिक समझ और प्रचार के लिए अनुसंधान एवं विकास में वर्तमान रुझान, आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति और प्रौद्योगिकी; भारत में चिकित्सा की स्वदेशी प्रणाली को मानकीकृत करने के लिए तकनीकी हस्तक्षेप (आयुर्टेक- एक अभिनव कार्यक्रम जिसके तहत, 30 शोधकर्ताओं ने भाग लिया है) और आयुष प्रशासक/विभागों/संस्थानों के प्रमुखों के लिए प्रबंधन कार्यक्रम।

आयुष घटक में अनुसंधान एवं नवाचार :

28 जनवरी, 2022 को आयोजित परियोजना स्वीकृति समिति की बैठक में वित्त पोषण के लिए चार नई अनुसंधान परियोजनाओं, आठ चल रही परियोजनाओं और सत्रह पूर्ण परियोजनाओं को मंजूरी दी गई थी।

14.2 आयुर्स्वास्थ्य योजना

14.2.1 प्रस्तावना

आयुष मंत्रालय वित्त वर्ष 2021-22 से “आयुष स्वास्थ्य योजना” नाम से एक अम्ब्रेला योजना को कार्यान्वित कर रहा है, जिसे इस मंत्रालय की दो पुरानी योजनाओं यानी (i) सार्वजनिक स्वास्थ्य पहल में आयुष हस्तक्षेप को बढ़ावा देने के लिए सहायता अनुदान की केंद्रीय क्षेत्र योजना; और (ii) आयुष शिक्षा/औषध विकास एवं अनुसंधान/नैदानिक अनुसंधान आदि में लगे आयुष संगठनों (सरकारी/गैर-सरकारी गैर-लाभकारी) को उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) के उन्नयन के लिए सहायता हेतु केंद्रीय क्षेत्र की योजना को मिलाकर विकसित किया गया था। यह योजना वित्त वर्ष 2025-26 तक स्वीकृत की गई है। आयुर्स्वास्थ्य योजना के घटकों का उल्लेख नीचे किया गया है:-

क. आयुष एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य (पीएचआई)

ख. उत्कृष्टता केंद्र (सीओई)

14.1.4 विजन और उद्देश्य

पीएचआई घटक के उद्देश्य:

- क) सामुदायिक स्वास्थ्य देखभाल के लिए आयुष हस्तक्षेप को बढ़ावा देना।
- ख) सार्वजनिक स्वास्थ्य में आयुष स्वास्थ्य देखभाल के लाभों को प्रदर्शित करना।
- ग) एकीकृत आयुष पद्धति के माध्यम से सतत विकास लक्ष्य-2 (एसडीजी-2) और सतत विकास लक्ष्य-3 (एसडीजी-3) को लागू करने में सहायता करना।
- घ) विभिन्न सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दों में आयुष उपचारों के माध्यम से आयुष पद्धतियों की प्रभावकारिता का प्रलेखीकरण जिसे राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों में बड़े पैमाने पर लागू किया जा सकता है।

सीओई घटक के उद्देश्य:

- क) सरकारी और गैर-सरकारी दोनों क्षेत्रों में प्रतिष्ठित आयुष और एलोपैथी संस्थानों में उन्नत/विशेष आयुष चिकित्सा स्वास्थ्य इकाई की स्थापना का समर्थन करना।
- ख) राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयुष को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा प्रौद्योगिकी, अनुसंधान और नवाचार और आवश्यक ऐसे अन्य क्षेत्रों में आयुष पेशेवरों की दक्षताओं को मजबूत करने के लिए प्रतिष्ठित संस्थानों के कार्यों और सुविधाओं दोनों की स्थापना और उन्नयन के लिए रचनात्मक और अभिनव प्रस्तावों का समर्थन करना।
- ग) प्रतिष्ठित संगठनों के लिए रचनात्मक और अभिनव प्रस्तावों का समर्थन करना, जिनके पास सु-स्थापित भवन और बुनियादी ढांचा है और आयुष पद्धतियों के लिए उत्कृष्टता केंद्र के स्तर पर काम करना चाहते हैं।

14.1.5 प्रमुख उपलब्धियां

पीएचआई घटक की प्रमुख उपलब्धियां

आयुस्वास्थ्य योजना के पीएचआई घटक के तहत एक सरकारी संगठन/संस्थान और दो गैर-सरकारी संगठन/संस्थानों को सहायता दी गई है। तीन संगठनों/संस्थानों को 1,44,61,505/- रुपये की संचयी राशि जारी की गई है। इसके अलावा, दो परियोजनाओं के लिए 1,08,43,402.50/- (लगभग) की संचयी राशि के लिए आईएफडी सहमति प्राप्त की गई है। यह राशि अब आयुस्वास्थ्य योजना के पीएचआई घटक के तहत दिनांक 01.01.2023 से 31.03.2023 तक जारी की जा सकती है।

सीओई घटक की प्रमुख उपलब्धियां

आयुस्वास्थ्य योजना के सीओई घटक के तहत सात सरकारी संगठनों/संस्थानों और चार गैर-सरकारी संगठनों/संस्थानों को सहायता दी गई है। ग्यारह संगठनों/संस्थानों को 29,88,96,621 /- रुपये की संचयी राशि जारी की गई है। इसके अलावा, दो संगठनों/संस्थानों के लिए आयुस्वास्थ्य योजना के सीओई घटक के तहत 01.01.2023 से 31.03.2023 तक संचयी राशि 2.80 करोड़ (लगभग) जारी की जा सकती है।

14.3 चैंपियन सेवा क्षेत्र योजना

14.3.1 प्रस्तावना

आयुष मंत्रालय ने चैंपियन सेवा क्षेत्र योजना के तहत, चिकित्सा मूल्य यात्रा के लिए अपनी केंद्रीय क्षेत्र योजना शुरू की है। इस योजना को 31-03-2022 तक केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया था। इसके बाद वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, वाणिज्य विभाग ने अपने कार्यालय ज्ञापन संख्या के-44020/41/2018-टीपीडी/एफटीएस-3133663 दिनांक 21 सितंबर, 2022 के माध्यम से सूचित किया है कि चैंपियन सेवा क्षेत्र योजना को 31.03.2024 तक जारी रखा जा सकता है। योजना के तहत तीन घटक हैं।

क. आयुष सुपर स्पेशलिटी अस्पतालों/डे केयर सेंटरों की स्थापना

ख. कौशल विकास

ग. आयुष ग्रिड की स्थापना

14.3.2 विजन और उद्देश्य

विजन

देश में चूंकि प्रलेखीकरण/रिकॉर्ड और पारंपरिक चिकित्सा पद्धति पर अब तक मामूली या न्यूनतम ध्यान रहा है, इसलिए पारंपरिक चिकित्सा पद्धति के क्षेत्र में विशेष रूप से चिकित्सा पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए, चिकित्सा मूल्य यात्रा के लिए चैंपियन सेवा क्षेत्र योजना भारत सरकार द्वारा तैयार की गई है। इस पहल से न केवल भारत में आयुर्वेद, योग और अन्य पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को बढ़ावा और प्रचार-प्रसार होगा, बल्कि देश में अंतर्राष्ट्रीय रोगियों/पर्यटकों/आगंतुकों की संख्या में भी वृद्धि होने की उम्मीद है, जिससे देश में विदेशी मुद्रा के रूप में राजस्व उत्पन्न होने की संभावना है। प्रस्तावित योजना आयुर्वेद, योग और अन्य पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के क्षेत्र में क्षमता निर्माण और कौशल विकास के लिए अधिक अवसर पैदा करने की क्षमता रखती है तथा आयुष जॉब के अधिक अवसर पैदा करती है और आयुर्वेद, योग और अन्य पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के क्षेत्र में राष्ट्रव्यापी प्रामाणिक डेटा का उत्पादन भी करती है।

योजना के उद्देश्य:

- i. आयुष सुपर स्पेशियलिटी अस्पतालों और डे केयर सेंटर्स की स्थापना के लिए निजी निवेशकों को ब्याज सब्सिडी प्रदान करके आयुष में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- ii. कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर आयुष क्षेत्र में कौशल विकास को बढ़ावा देना।
- iii. सेवाओं, उत्पादों, शिक्षा, उत्पादन, बाजार का आकार, मांग आपूर्ति मानचित्रण आदि सहित आयुष पद्धतियों के सभी पहलुओं को शामिल करते हुए वास्तविक समय डेटा उत्पन्न करने के लिए एक मेगा डिजिटल प्लेटफॉर्म आयुष ग्रिड स्थापित करना, जो नीति निर्माताओं, नियामकों, शोधकर्ताओं को तदनुसार नीति बनाने में सक्षम करेगा।

14.3.3 प्रमुख उपलब्धियां

- i. 14.02.2022 को राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान, चेन्नई को 1,35,15,000/- रुपये जारी किए गए।
- ii. 14.02.2022 को पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान, शिलांग को 76,80,000/- रुपये जारी किए गए और
- iii. दिनांक 14.02.2022 को चैंपियन सेवा क्षेत्र योजना के कौशल विकास घटक के तहत राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान, कोलकाता को 39,95,000 /- रुपये जारी किए गए।
- iv. 29 मार्च, 2022 को चैंपियन सेवा क्षेत्र योजना के आयुष सुपर स्पेशलिटी अस्पतालों डे केयर सेंटर घटक की स्थापना के तहत निवेशक पूर्णायु बायो साइंसेज प्रा. लिमिटेड, बेंगलुरु, कर्नाटक द्वारा ब्याज सबवेंशन दावे का निपटान हेतु भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक को 9,50,780/- रुपये की राशि जारी की गई।

अध्याय 15

योजना और मूल्यांकन

15.1 प्रस्तावना

आयुष मंत्रालय के तहत, योजना और मूल्यांकन प्रभाग को विभिन्न मंत्रालयों/विभागों को आयुष डेटा एकत्र करने, संकलित करने और प्रसारित करने का अधिकार है। यह प्रभाग विभिन्न स्रोत एजेंसियों यथा- आईएसएम एंड एच आयुष निदेशालय, आईएसएम एंड एच राज्य बोर्ड, आईएसएम एंड एच औषधि नियंत्रक, राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, डीजीसीआई एंड एस, केंद्र/राज्य सरकारों सहित राष्ट्रीय संस्थान और अनुसंधान परिषदों से भारत में आयुष पद्धति के विभिन्न पहलुओं पर डेटा एकत्र करता है। योजना और मूल्यांकन प्रभाग, आयुष मंत्रालय संबंधित योजना पीडी के अनुरोध के अनुसार किसी स्वतंत्र तृतीय-पक्ष एजेंसी द्वारा मंत्रालय की केंद्रीय क्षेत्र की योजनाओं के मूल्यांकन के लिए भी काम करता है।

15.2 विजन और उद्देश्य

1. आयुष नीति और योजनाओं/कार्यक्रमों, निगरानी, मूल्यांकन और आगे सुधार के लिए निर्णय लेने को सुगम बनाने हेतु आयुष पद्धतियों पर समय पर, विश्वसनीय और व्यापक डेटा प्रदान करना।
2. भारत सरकार के साथ-साथ राज्य सरकारों के मंत्रालयों/विभागों के बीच सांख्यिकीय गतिविधियों का समन्वय करना ताकि विभिन्न आयुष सांख्यिकीय उत्पादों को लाने में और सुधार के लिए सांख्यिकीय डेटा की गुणवत्ता में सुधार करने, अंतराल की पहचान करने और डेटा उपलब्धता में समय अंतराल को कम किया जा सके।

15.3 जनजातीय उपयोजनाओं एवं अनुसूचित जाति उपयोजना की निगरानी

1. आयुष मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित की जा रही स्कीमों की निम्नलिखित योजना/उपयोजना की निगरानी (इन विषयों से संबंधित संसदीय मामलों के अलावा):

क) आउटपुट-आउटकम मॉनिटरिंग फ्रेमवर्क (ओओएमएफ) की तैयारी

ख) जनजातीय उप योजना (टीएसपी)

ग) अनुसूचित जाति उप योजना (एससीएसपी)

घ) मंत्रालय की योजनाओं के एनईआर घटक के तहत एनईआर राज्यों को बजट आवंटन की निगरानी।

ड) जेन्डर बजटिंग

2. अनुसूचित जाति उप योजना (एससीएसपी), जनजातीय उप योजना (टीएसपी) और आउटपुट-आउटकम मॉनिटरिंग फ्रेमवर्क (ओओएमएफ) की वित्तीय और भौतिक प्रगति का ऑनलाइन अद्यतन।

15.4 आयुष इन इंडिया

योजना और मूल्यांकन प्रभाग राज्य-वार आयुष बुनियादी ढांचे (अस्पतालों, बिस्तरों, औषधालयों आदि), आयुष पंजीकृत चिकित्सकों, स्नातक और स्नातकोत्तर आयुष कॉलेजों, लाइसेंस प्राप्त फार्मेशियों, एनएचएम में आयुष पद्धतियों के एकीकरण, औषधीय पादपों, आयुष से संबंधित विदेश व्यापार, मंत्रालय का परिव्यय और व्यय, नई पहल, आयुष में अनुसंधान और विकास आदि से संबंधित सांख्यिकीय आंकड़ों का संग्रह और संकलन करता है। इन आंकड़ों को आयुष मंत्रालय के वार्षिक सांख्यिकीय प्रकाशन के माध्यम से प्रकाशित किया जा रहा है जिसे "आयुष इन इंडिया" के रूप में जाना जाता है। प्रकाशन का मुद्रण और वितरण अंतिम उपयोगकर्ता तक किया जाता है।

15.5 कोई अन्य पहल

- क. राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ), सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (एमओएसपीआई) जुलाई, 2022-जून, 2023 की अवधि के दौरान एनएसएस के 79वें दौर में आयुष पर पहला सर्वेक्षण कर रहा है। इस सर्वेक्षण में जिन प्रमुख मापदंडों पर जानकारी एकत्र करने का प्रस्ताव किया गया है, वे (i) आयुष पद्धति के बारे में घरेलू जागरूकता (ii) आयुष प्रद्वति का उपयोग और (iii) परिवारों द्वारा आयुष उपचार के लिए किए गए व्यय हैं। पी एंड ई प्रभाग ने सर्वेक्षण के लिए आयुष क्षेत्र से संबंधित आवश्यक जानकारी प्रदान की है।
- ख. विभिन्न मंत्रालयों/विभागों को डेटा/सूचना की आपूर्ति करना।
- ग. ओपन गवर्नमेंट डेटा (ओजीडी) प्लेटफॉर्म, भारत पर डेटा अपलोड करना।

अध्याय 16

हिंदी का प्रगतिशील प्रयोग

16.1 राजभाषा के रूप में हिंदी

आयुष मंत्रालय के शासकीय कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को उत्तरोत्तर बढ़ावा देने के लिए हिंदी अनुभाग राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित वार्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु हिंदी अनुभाग भरसक प्रयास करता रहता है। इस प्रयास में हिंदी अनुभाग ने राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले दस्तावेजों तथा सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग हेतु आवश्यक अन्य दस्तावेजों के हिंदी अनुवाद के अतिरिक्त 01 जनवरी, 2022 से 31 दिसम्बर, 2022 तक की अवधि के दौरान निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्यकलाप भी किए हैं:-

16.1.1 मंत्रालय में राजभाषा के प्रयोग की स्थिति का मूल्यांकन करने तथा उसके प्रगामी प्रयोग हेतु नए निर्णय/उपाय करने हेतु मंत्रालय में प्रभारी संयुक्त सचिव, राजभाषा की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का नियमित रूप से आयोजन किया गया।

16.1.2 हिंदी टिप्पण और आलेखन में अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान करने और उनके रोजमर्रा के कार्य में हिंदी प्रयोग के संकोच को दूर करने के लिए अक्टूबर माह में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस सत्र में अधिकारियों/कर्मचारियों की भागीदारी बहुत अच्छी रही।



कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यशाला

16.1.3 राजभाषा प्रयोग के क्षेत्र में देश की शीर्ष निरीक्षण समिति - संसदीय राजभाषा समिति ने इस मंत्रालय के 19 अधीनस्थ कार्यालयों का निरीक्षण किया है। आयुष मंत्रालय ने पूरे मनोयोग से अपने प्रयासों का प्रदर्शन करते हुए प्रगति दर्शाई और समिति द्वारा यथानिर्देशित कार्रवाई का शत प्रतिशत अनुपालन करने का आश्वासन दिया।



संसदीय राजभाषा समिति द्वारा केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान संस्थान, कोट्टयम का निरीक्षण

16.1.4 मंत्रालय में 14 से 28 सितंबर, 2022 के दौरान हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिंदी प्रयोग में रुचि रखने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने के लिए 06 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।





हिंदी पखवाड़ा, 2022

16.1.5 राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की समीक्षा करने के लिए मंत्रालय के हिंदी प्रभारी अधिकारियों ने 07 अधीनस्थ कार्यालयों का राजभाषायी निरीक्षण किया तथा कमियों को दूर करने के उपाय सुझाए।

16.1.6 आयुष विभाग का एक पूर्ण मंत्रालय के रूप में उन्नयन होने के कारण मंत्रालय के कार्यभार के साथ-साथ इस अनुभाग के कार्यभार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। तथापि, मौजूदा जन संसाधन के द्वारा अथक प्रयासों के माध्यम से सम्पूर्ण दायित्वों का बखूबी निर्वहन किया जा रहा है।

अध्याय 17

लिंग सशक्तिकरण और समानता

17.1 आयुष मंत्रालय में लिंग-वार पदधारिता

आयुष मंत्रालय में लिंग-वार पदधारिता-नियमित और संविदात्मक (31.12.2022 तक)

| क्र.सं. | पद नाम | समूह | पदों की संख्या | धारिता | पुरुष | महिला | स्तर |
|---------------------------|---|------|----------------|--------|-------|-------|---------------------------------|
| क. सचिवालय कार्मिक | | | | | | | |
| 1. | सचिव | क | 01 | 01 | 01 | 00 | स्तर-17 |
| 2. | विशेष सचिव* | क | 00 | 01 | 01 | 00 | स्तर-17 |
| 3. | संयुक्त सचिव** | क | 04 | 02 | 01 | 01 | स्तर-14 |
| 4. | निदेशक/उप सचिव | क | 04 | 04 | 03 | 01 | स्तर-13/ स्तर-12 |
| 5. | निदेशक/उप सचिव(सेंट्रल स्टाफिंग स्कीम के तहत**) | क | 03 | 03 | 03 | 00 | स्तर-13/ स्तर-12 |
| 6. | अवर सचिव*** | क | 08 | 08 | 06 | 02 | स्तर-11 |
| 7. | अनुभाग अधिकारी | ख | 16 | 03 | 03 | 00 | स्तर-10/ स्तर-09/ स्तर-08 |
| 8. | सहायक | ख | 24 | 23 | 14 | 09 | स्तर-07 |

| | | | | | | | |
|--------------------------------------|-------------------------------------|---|-----------|-----------|-----------|-----------|---------------------------------|
| | अनुभाग अधिकारी | | | | | | |
| 9. | वरिष्ठ सचिवालय सहायक | ग | 11 | 00 | 00 | 00 | स्तर-04 |
| 10. | कनिष्ठ सचिवालय सहायक | ग | 01 | 00 | 00 | 00 | स्तर-03 |
| 11. | मल्टी-टास्किंग स्टाफ (एमटीएस) | ग | 06 | 06 | 05 | 01 | स्तर-03/ स्तर-02 |
| 12. | चालक | ग | 02 | 00 | 00 | 00 | स्तर-02 |
| उप-योग (I) | | | 79 | 51 | 37 | 14 | |
| ख. अधिकारियों के निजी कार्मिक | | | | | | | |
| 1. | वरिष्ठ प्रमुख निजी सचिव | क | 1 | 2 | 2 | 0 | स्तर-12 |
| 2. | प्रमुख निजी सचिव | क | 9 | 9 | 6 | 3 | स्तर-11 |
| 3. | निजी सचिव | ख | 15 | 03 | 02 | 01 | स्तर-10/ स्तर-09/ स्तर-08 |
| 4. | आशुलिपिक श्रेणी ग | ग | 09 | 01 | 00 | 01 | स्तर-07 |
| 5. | आशुलिपिक | ग | 19 | 18 | 13 | 05 | स्तर-06/ |

| | | | | | | | |
|---|--|---|----|----|----|----|---------|
| | श्रेणी घ | | | | | | स्तर-04 |
| उप-योग (II) | | | 53 | 33 | 23 | 10 | |
| ग. आयुष चिकित्सक और तकनीकी स्टाफ | | | | | | | |
| 1. | सहालकार (आयुर्वेद) | क | - | 02 | 02 | 00 | स्तर-14 |
| 2. | सहालकार (होम्योपैथी) | क | - | 01 | 00 | 01 | स्तर-14 |
| 3. | सहालकार (यूनानी) | क | - | 01 | 01 | 00 | स्तर-14 |
| 4. | संयुक्त सलाहकार (ए/यू/एस/एच) | क | - | 01 | 01 | 00 | स्तर-13 |
| 5. | संयुक्त सलाहकार (योग और प्राकृतिक चिकित्सा) | क | 01 | - | - | - | स्तर-13 |
| 6. | उप सलाहकार (ए/यू/एस/एच) | क | - | 01 | 01 | 00 | स्तर-12 |
| 7. | उप सलाहकार(योग और प्राकृतिक चिकित्सा) | क | 01 | - | - | - | स्तर-12 |
| 8. | सहायक सलाहकार | क | - | 04 | 03 | 01 | स्तर-11 |

| | | | | | | | |
|--|--|---|-----------|------------|-----------|-----------|---------|
| | (ए/यू/एस/एच) | | | | | | |
| 9. | अनुसंधान अधिकारी(ए/यू/ए स/एच) | क | - | 38 | 14 | 24 | स्तर-10 |
| 10. | अनुसंधान अधिकारी(योग) | क | 01 | - | - | - | स्तर-10 |
| 11. | अनुसंधान अधिकारी (प्राकृतिक चिकित्सा) | क | 01 | - | - | - | स्तर-10 |
| 12. | उप औषध नियंत्रक (एएसयू और एच) | क | 01 | - | - | - | स्तर-12 |
| 13. | सहायक औषध नियंत्रक (ए/यू/एस/एच) | क | 04 | - | - | - | स्तर-11 |
| 14. | औषध निरीक्षक (ए/यू/एस/एच) | ख | 04 | - | - | - | स्तर-08 |
| उप-योग (III) | | | 13 | 48# | 22 | 26 | |
| घ. एनएमपीबी ग्रुप 'क' तकनीकी कर्मचारी | | | | | | | |
| 1. | मुख्य कार्यकारी अधिकारी | क | 01 | - | - | - | स्तर-14 |
| 2. | उप मुख्य कार्यकारी | क | 01 | 01 | 01 | 00 | स्तर-13 |

| | | | | | | | |
|------------------------------|--|---|-----------|-----------|-----------|-----------|---------|
| | अधिकारी | | | | | | |
| 3. | उप निदेशक (औषधीय पादप) | क | 01 | - | - | - | स्तर-12 |
| 4. | सहायक सलाहकार (वनस्पति विज्ञान) | क | 01 | - | - | - | स्तर-11 |
| 5. | प्रबंधक (विपणन और व्यापार) | क | 01 | 01 | 01 | 00 | स्तर-11 |
| 6. | अनुसंधान अधिकारी(औ.पा. /कृषि) | क | 02 | 02 | 02 | 00 | स्तर-10 |
| 7. | अनुसंधान अधिकारी(वनस्प ति विज्ञान) | क | 01 | - | - | - | स्तर-10 |
| उप-योग (IV) | | | 08 | 04 | 04 | 00 | |
| ड. सांख्यिकीय कार्मिक | | | | | | | |
| 1. | उप महानिदेशक (आईएसएस) | क | 01 | 01 | 01 | 00 | स्तर-14 |
| 2. | उप निदेशक (आईएसएस) | क | 01 | 01 | 01 | 00 | स्तर-11 |
| 3. | सहायक निदेशक (आईएसएस) | क | 01 | 01 | 01 | 00 | स्तर-10 |

| | | | | | | | |
|---------------------------------|---|----------------|----|--------|-------|-------|---------|
| 4. | वरिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी (एसएसएस) | ख | 02 | 02 | 02 | 00 | स्तर-07 |
| 5. | कनिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी (एसएसएस) | ख | 02 | 02 | 01 | 01 | स्तर-06 |
| उप-योग (V) | | | 07 | 07 | 06 | 01 | |
| च. हिन्दी कार्मिक | | | | | | | |
| 1. | संयुक्त निदेशक | क | 01 | - | - | - | स्तर-12 |
| 2. | सहायक निदेशक | क | 01 | 01 | 00 | 01 | स्तर-10 |
| 3. | वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी | ख | 01 | 01 | 00 | 01 | स्तर-07 |
| 4. | कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी | ख | 01 | 01 | 01 | 00 | स्तर-06 |
| उप-योग (VI) | | | 04 | 03 | 01 | 02 | |
| छ. संविदात्मक कार्मिक \$ | | | | | | | |
| क्र.सं. | संविदा पद का नाम | पदों की संख्या | | धारिता | पुरुष | महिला | |
| 1. | सलाहकार \$\$ | 42 | | 34 | 32 | 02 | |
| 2. | पेशेवर युवा | 10 | | 04 | 03 | 01 | |
| 3. | कार्यालय सहायक/डाटा इंट्री ऑपरेटर (डीईओ) | 101 | | 76 | 41 | 35 | |

| | | | | | |
|---------------------------------------|--|------------|------------|------------|-----------|
| 4. | हाउसकीपिंग कर्मियों (पर्यवेक्षक, कचरा संग्राहक, माली आदि सहित) | 23 | 23 | 16 | 07 |
| 5. | एमटीएस | 32 | 31 | 30 | 01 |
| 6. | सुरक्षा कार्मिक | 24 | 24 | 24 | 00 |
| उप-योग (VII) | | 232 | 192 | 146 | 46 |
| कुल योग (I+II+III+IV+V+VI+VII) | | 397 | 338 | 239 | 99 |

नोट: *संयुक्त सचिव पद को विशेष सचिव के पद पर प्रोन्नत किया गया है

** जी-20 सचिवालय के लिए सृजित संयुक्त सचिव का एक अस्थायी पद, उप सचिव का एक अस्थायी पद शामिल है

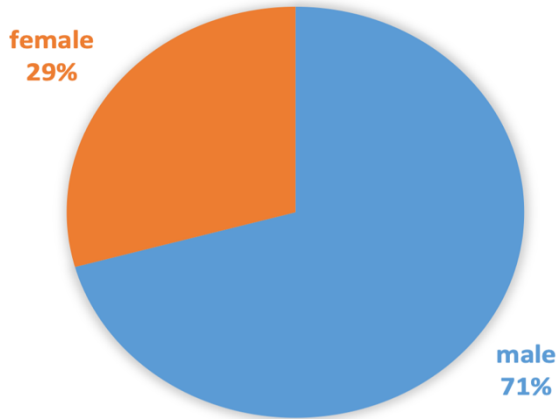
*** सेंट्रल स्टाफिंग स्कीम के तहत जी-20 सचिवालय के लिए सृजित अवर सचिव का एक अस्थायी पद शामिल है

आयुष चिकित्सकों के कुल स्वीकृत पद 261 हैं जिनमें 121- आयुर्वेद, 110- होम्योपैथी, 25- यूनानी और 05- सिद्ध चिकित्सक शामिल हैं। इन चिकित्सकों को या तो केंद्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना (सीजीएचएस), स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (एमओएच एंड एफडब्ल्यू) के व्यवस्थापन में सीजीएचएस औषधालयों में उनकी आगे की तैनाती के लिए रखा गया है या नीति संबंधी मामलों में समर्थन के लिए तकनीकी आवश्यकता के आधार पर आयुष मंत्रालय में उनकी तैनाती के लिए रखा गया है। इन पदों को कुल संयुक्त स्वीकृत पद संख्या के भीतर संचालित किया जाना है।

\$ आयुष मंत्रालय के प्रशासनिक प्रभाग द्वारा अनुबंधित कर्मचारी

\$\$ प्रशासन प्रभाग द्वारा नियुक्त सलाहकार और मंत्रालय के क्षेत्रीय संगठनों के माध्यम से नियुक्त

GENDER WISE STAFF IN MINISTRY OF AYUSH



17.2 अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष गतिविधियां (सेमिनार, अतिथि व्याख्यान आदि)

महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक उपलब्धियों का उत्सव मनाने के लिए हर साल 8 मार्च को विश्व स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (आईडब्ल्यूडी) के रूप में मनाया जाता है। 8 मार्च, 2022 को आयुष मंत्रालय में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। श्रीमती कविता गर्ग, संयुक्त सचिव ने आयुष भवन में मंत्रालय की सभी महिला कर्मचारियों के लिए एक इंटरैक्टिव सत्र की अध्यक्षता की। बैठक में वरिष्ठ महिला अधिकारी भी मौजूद रहीं। इसके अलावा, समारोह के हिस्से के रूप में, आयुष मंत्रालय ने मंत्रालय की सभी महिला अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए माननीय आयुष मंत्री जी के आवासीय कार्यालय में एक इंटरैक्टिव सत्र भी आयोजित किया, जिसे माननीय आयुष मंत्री जी ने संबोधित किया।

17.3 कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न संबंधी समिति

कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न की रोकथाम के लिए एक शिकायत तंत्र प्रदान करने के लिए माननीय सर्वोच्च न्यायालय के दिशा-निर्देशों और मानदंडों के अनुपालन में जारी किए गए महिला एवं बाल विकास विभाग के निर्देशों के अनुपालन में, महिलाओं के यौन उत्पीड़न की रोकथाम के लिए एक समिति आयुष मंत्रालय का गठन निम्नानुसार किया गया है:

| क्र.सं. | नाम और पदनाम | स्थिति | संपर्क सूत्र | आधिकारिक पता |
|---------|---|---------------|---------------------------------------|---|
| 1. | श्रीमती विजयलक्ष्मी भारद्वाज, निदेशक, आयुष मंत्रालय | अध्यक्ष | 24651658 | आयुष भवन, बी-ब्लॉक, जीपीओ कॉम्प्लेक्स, आईएनए, नई दिल्ली- 110023 |
| 2. | श्री. यश वीर सिंह, उप सचिव, आयुष मंत्रालय | सदस्य | 24651644 | आयुष भवन, बी-ब्लॉक, जीपीओ कॉम्प्लेक्स, आईएनए, नई दिल्ली- 110023 |
| 3. | श्रीमती बुलबुल दास, प्रभारी सदस्य, अखिल भारतीय महिला सम्मेलन (एआईडब्ल्यूसी) | सदस्य | 23389314 23381165 मो:9910816106 | अखिल भारतीय महिला सम्मेलन, सरोजिनी हाउस, 6-भगवान दास रोड, नई दिल्ली-110001 |
| 4. | श्री अंजन बिस्वास, उप सचिव, आयुष मंत्रालय | सदस्य | 24651957 | आयुष भवन, बी-ब्लॉक, जीपीओ कॉम्प्लेक्स, आईएनए, नई दिल्ली- 110023 |
| 5. | श्रीमती शीला तिर्की, अवर सचिव, आयुष मंत्रालय | सदस्य सचिव | 24651962 | आयुष भवन, बी-ब्लॉक, जीपीओ कॉम्प्लेक्स,आईएनए, नई दिल्ली-110023 |

शिकायत समिति आयुष मंत्रालय में तैनात महिला कर्मचारियों की शिकायतों पर विचार/सुनवाई करती है और ऐसी शिकायतों पर उचित कार्रवाई करती है। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा

जीएसआर 769 (ई) दिनांक 09.12.2013 को जारी अधिसूचना में शिकायतों की जांच के तरीके को विनिर्दिष्ट किया गया है।

17.4 लैंगिक बजट और महिला विशिष्ट कार्यक्रम

भाग क : 100% महिला विशिष्ट कार्यक्रम

| (करोड़ रुपये में) | | | | |
|-------------------|--|------------------|--------------------|------------------|
| क्र.सं. | संगठन | 2022-23 (बीई) | 2022-23 (बीआरई) | 2023-24 (बीई) |
| 1. | केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद (सीसीआरएस) | 0.44 | 0.28 | 0.32 |
| 2. | केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएस) | 5.10 | 2.72 | 5.00 |
| 3. | पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान (एनईआईएच) | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| 4. | राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए) | 13.50 | 13.50 | 15.00 |
| कुल | | 19.04 | 16.50 | 20.32 |

भाग ख: 30% महिला विशिष्ट कार्यक्रम

| (करोड़ रुपए में) | | | | |
|------------------|---|------------------|------------------|------------------|
| क्र.सं. | संगठन | 2022-23 (बीई) | 2022-23 (बीई) | 2023-24 (बीई) |
| 1. | केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरयूएम) | 11.25 | 9.00 | 8.50 |
| 2. | राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ (आरएवी) | 5.00 | 7.50 | 8.26 |

| | | | | |
|------------------------|--|--------------|--------------|--------------|
| 3. | केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (सीसीआरएच) | 15.00 | 15.00 | 15.00 |
| 4. | राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान (एनआईएन) | 0.05 | 0.05 | 0.06 |
| कुल | | 31.30 | 31.55 | 31.82 |
| कुल (भाग क + ख) | | 50.34 | 48.05 | 52.14 |

अध्याय 18

आयुष ग्रिड

18.1 प्रस्तावना

आयुष ग्रिड (एजी) परियोजना की परिकल्पना आयुष मंत्रालय द्वारा पूरे आयुष क्षेत्र के लिए एक व्यापक सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) बैकबोन बनाने के लिए की गई है। एजी प्लेटफॉर्म क्षमता निर्माण और मीडिया आउटरीच के साथ-साथ छह कार्यात्मक क्षेत्रों-स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, अनुसंधान, औषधि प्रशासन, औषधीय पादपों और आयुष मंत्रालय की दूरदर्शिता में सेवा वितरण के डिजिटलीकरण की परिकल्पना करता है। व्यापक आयुष इकोसिस्टम को पूरा करने और आयुष क्षेत्र में तालमेल के लिए ऊर्जा लगाने के लिए मंच एक 'पारिस्थितिकी तंत्र' मॉडल को अपनाएगा। यह सेवा वितरण के लिए एक संघबद्ध व्यवस्था को अपनाएगा जिसमें आयुष मंत्रालय के तहत संस्थानों और राज्य निदेशालयों को अपनी व्यक्तिगत जरूरतों के अनुसार अपने आईटी समाधान चुनने की छूट होगी।

18.2 विजन और उद्देश्य

18.2.1 विजन

एक सुरक्षित और इंटरऑपरेबल डिजिटल इकोसिस्टम के माध्यम से सभी को कुशल, समग्र, सस्ती और गुणवत्तापूर्ण सेवाएं प्रदान करने के लिए आयुष क्षेत्र को बदलना।

18.2.2 उद्देश्य/परिणाम

एजी परियोजना से परिकल्पित प्रमुख परिणाम इस प्रकार हैं:

- (i) भारत और वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा, अनुसंधान आदि जैसी आयुष सेवाओं तक पहुंच बढ़ाना।
- (ii) डिजिटल समाधानों द्वारा आयुष क्षेत्र का समग्र कवरेज सुनिश्चित करें।
- (iii) आयुष हितधारकों के बीच डिजिटल सहयोग और सर्वोत्तम अभ्यासों का आदान-प्रदान बढ़ाना।
- (iv) राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति, 2017 के अनुसार स्वास्थ्य और कल्याण के उच्चतम संभव स्तर को प्राप्त करना।
- (v) सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी)-3, 2030 के साथ एकरूपता में अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण (स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करना और सभी उम्र के लिए कल्याण को बढ़ावा देना)।
- (vi) एसडीजी-4 2030 के अनुसार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा (समावेशी और समान गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करना और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना)
- (vii) एसडीजी-9 2030 के अनुसार उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढांचा (लचीले बुनियादी ढांचे का निर्माण, समावेशी और टिकाऊ औद्योगीकरण को बढ़ावा देना और नवाचार को बढ़ावा देना)

18.3 प्रमुख उपलब्धियां

1. **आयुष जीआईएस** मंत्रालय द्वारा लॉन्च किया गया है। आयुष भू-सूचना प्रणाली (जीआईएस) का वर्तमान संस्करण आयुष स्वास्थ्य सुविधाओं, आयुष चिकित्सकों, आयुष मेडिकल कॉलेजों और छात्रों के मानचित्रण के लिए विकसित किया गया है। यह आयुष स्वास्थ्य सुविधाओं, आयुष चिकित्सकों, आयुष मेडिकल कॉलेजों और छात्रों को कुछ बुनियादी विवरणों के साथ स्वयं को पंजीकृत करने की सुविधा प्रदान करता है। ऐप आवश्यक सुविधा तक पहुंचाने के साथ-साथ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, ईमेल आदि जैसे विभिन्न माध्यमों से किसी को भी खोजी गई सुविधा का विवरण साझा करने की सुविधा भी प्रदान करता है।

2. आयुष मंत्रालय और मंत्रालय के अधीन संगठनों के साथ आयुष से संबंधित सभी प्रामाणिक और सत्यापित सूचनाओं का प्रसार करने के लिए **आयुष सूचना हब (एआईच) की स्थापना की गई है।** यह जानकारी जनता सहित आयुष में सभी हितधारकों के लिए उपयोगी होगी। आयुष सूचना हब जनता को बिना लॉगिन के सूचना तक पहुंचने की सुविधा प्रदान करता है।
3. **आयुसॉफ्ट:-** आयुसॉफ्ट शास्त्रीय आयुर्वेदिक ग्रंथों को व्यापक, प्रामाणिक, बुद्धिमत्ता एवं ज्ञान भंडार में परिवर्तित करने का एक दृष्टिकोण है। आयुसॉफ्ट का पहला चरण शुरू हो गया है। इसमें निम्नलिखित दो मॉड्यूल हैं-
 - क) **आयुर्विज्ञान** खोज सुविधा के साथ आयुर्वेदिक विश्वकोश है। इसमें ऑनलाइन संहिता, विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर लेख, चिकित्सीय प्रक्रियाओं की वीडियो क्लिप, फोटो गैलरी और मंत्रों की ऑडियो फाइलें शामिल हैं।
 - ख) **शब्द निधि** आयुर्वेदिक शब्दावली का शब्दकोष है। व्युत्पत्ति संबंधी मौलिक शब्द, परिभाषा, नैदानिक अनुप्रयोग आदि के अर्थों का वर्णन किया गया है।
4. **आयुष नेक्स्ट:-** आयुष नेक्स्ट (पोर्टल और मोबाइल एप्लिकेशन) आयुष मंत्रालय की एक डिजिटल रूप से संचालित पहल है जिसका उद्देश्य कैरियर मार्गदर्शन, इंटरैक्टिव फोरम, क्विज़ और अधिक के साथ सूचना के आदान-प्रदान के क्षेत्र को व्यापक बनाना है। विशेषज्ञों का दल कैरियर सलाह, रोजगार संबंधी प्रश्न, डिग्री और योग्यता के आधार पर प्रश्नों को हल करने के लिए ज्ञान से भरा है। युवाओं के लिए विचारों और ज्ञान को साझा करने, सलाह और परामर्श लेने, विचार-मंथन करने और सीखते रहने के लिए एक मंच है।
5. **आयुष अस्पताल प्रबंधन सूचना प्रणाली (एएचएमआईएस):-** यह मंत्रालय के तहत विभिन्न स्वायत्त निकायों की 95 से अधिक आयुष स्वास्थ्य सुविधाओं में संचालित की गई है। ओपीडी की विभिन्न कार्यात्मकताओं के प्रबंधन के लिए निगरानी मापदंडों के साथ उन्नत संस्करण को शुरू किया गया है।
6. **आयुष ग्रिड प्रोजेक्ट की डीपीआर पूरी हो चुकी है।**

7. पारंपरिक चिकित्सा (टीएम) मॉड्यूल-2 के अल्फा ड्राफ्ट को अंतिम रूप दे दिया गया है। बीटा मसौदा प्रक्रिया में है।
8. आयुष एनजीओ पोर्टल:- मंत्रालय की विभिन्न केंद्रीय क्षेत्र की योजनाओं में की जाने वाली सभी गतिविधियों का एक समर्पित पोर्टल मंत्रालय ने विकसित और शुरू किया है। यह पोर्टल एनजीओ दर्पण और पीएफएमएस पोर्टल के साथ एकीकृत है।
9. आयुष ग्रिड के तहत विभिन्न आईटी पहलों पर विस्तृत प्रस्तुति और स्वास्थ्य कार्यशाला के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर केंद्रित समूह विश्व स्वास्थ्य संगठन- इंटेलिजेंस टेलीकम्युनिकेशन यूनिट (डब्ल्यूएचओ-आईटीयू) में विचार-विमर्श और हेल्सिंकी में बैठक के बाद, स्वास्थ्य दूरसंचार मानकीकरण ब्यूरो-डब्ल्यूएचओ पर फोकस ग्रुप के तहत "पारंपरिक चिकित्सा अनुसंधान एवं कार्यान्वयन हेतु एआई" पर एक अलग टॉकिंग ग्रुप का गठन किया गया था।

आयुष मंत्रालय में स्वीकृत पदों की संख्या और रिक्ति की स्थिति

| क्र.सं. | पद का नाम | समूह | स्वीकृत पद | धारित पद | पुरुष | महिला | वेतन स्तर |
|---------------------------------------|--|------|------------|-----------|-----------|-----------|---------------------------------|
| क. सचिवालय कार्मिक | | | | | | | |
| 1. | सचिव | क | 01 | 01 | 01 | 00 | स्तर -17 |
| 2. | विशेष सचिव* | क | 00 | 01 | 01 | 00 | स्तर -17 |
| 3. | संयुक्त सचिव** | क | 04 | 02 | 01 | 01 | स्तर -14 |
| 4. | निदेशक/उप सचिव | क | 04 | 04 | 03 | 01 | लेवल -13/ स्तर -12 |
| 5. | सेंट्रल स्टाफिंग स्कीम के अंतर्गत निदेशक/उप सचिव** | क | 03 | 03 | 03 | 00 | स्तर-13/ स्तर-12 |
| 6. | सचिव के तहत*** | क | 08 | 08 | 06 | 02 | स्तर -11 |
| 7. | अनुभाग अधिकारी | ख | 16 | 03 | 03 | 00 | स्तर- 10/स्तर- 09/स्तर-08 |
| 8. | सहायक अनुभाग अधिकारी | ख | 24 | 23 | 14 | 09 | स्तर -07 |
| 9. | वरिष्ठ सचिवालय सहायक | ग | 11 | 00 | 00 | 00 | स्तर -04 |
| 10. | कनिष्ठ सचिवालय सहायक | ग | 01 | 00 | 00 | 00 | स्तर -03 |
| 11. | मल्टी-टास्किंग स्टाफ (एमटीएस) | ग | 06 | 06 | 05 | 01 | स्तर- 03/स्तर-02 |
| 12. | चालक | ग | 02 | 00 | 00 | 00 | स्तर -02 |
| कुल योग (I) | | | 79 | 51 | 37 | 14 | |
| ख. अधिकारियों के निजी कर्मचारी | | | | | | | |
| 1. | वरिष्ठ प्रधान | क | 1 | 2 | 2 | 0 | स्तर -12 |

| | | | | | | | |
|--|--|---|-----------|-----------|-----------|-----------|---------------------------------|
| | निजी सचिव | | | | | | |
| 2. | प्रमुख निजी सचिव | क | 9 | 9 | 6 | 3 | स्तर -11 |
| 3. | निजी सचिव | ख | 15 | 03 | 02 | 01 | स्तर- 10/स्तर- 09/स्तर-08 |
| 4. | स्टेनोग्राफर श्रेणी ग | ग | 09 | 01 | 00 | 01 | स्तर -07 |
| 5. | स्टेनोग्राफर श्रेणी घ | ग | 19 | 18 | 13 | 05 | स्तर- 06/स्तर-04 |
| कुल योग (II) | | | 53 | 33 | 23 | 10 | |
| ग. आयुष चिकित्सक और तकनीकी कर्मचारी | | | | | | | |
| 1. | सलाहकार (आयुर्वेद) | क | - | 02 | 02 | 00 | स्तर -14 |
| 2. | सलाहकार (होम्योपैथी) | क | - | 01 | 00 | 01 | स्तर -14 |
| 3. | सलाहकार (यूनानी) | क | - | 01 | 01 | 00 | स्तर -14 |
| 4. | संयुक्त सलाहकार (ए/यू/एस/एच) | क | - | 01 | 01 | 00 | स्तर -13 |
| 5. | संयुक्त सलाहकार (योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा) | क | 01 | - | - | - | स्तर -13 |
| 6. | उप सलाहकार (ए/यू/एस/एच) | क | - | 01 | 01 | 00 | स्तर -12 |
| 7. | उप सलाहकार (योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा) | क | 01 | - | - | - | स्तर -12 |
| 8. | सहायक सलाहकार (ए/यू/एस/एच) | क | - | 04 | 03 | 01 | स्तर -11 |
| 9. | अनुसंधान अधिकारी (ए/यू/एस/एच) | क | - | 38 | 14 | 24 | स्तर -10 |

| | | | | | | | |
|----------------------|--|---|-----------|------------|-----------|-----------|----------|
| 10. | अनुसंधान अधिकारी (योग) | क | 01 | - | - | - | स्तर -10 |
| 11. | अनुसंधान अधिकारी (प्राकृतिक चिकित्सा) | क | 01 | - | - | - | स्तर -10 |
| 12. | उप औषधि नियंत्रक (एएसयू एंड एच) | क | 01 | - | - | - | स्तर -12 |
| 13. | सहायक औषधि नियंत्रक (ए/यू/एस/एच) | क | 04 | - | - | - | स्तर -11 |
| 14. | औषधि निरीक्षक (ए/यू/एस/एच) | ख | 04 | - | - | - | स्तर -08 |
| कुल योग (III) | | | 13 | 48# | 22 | 26 | |

घ. एनएमपीबी समूह 'क' तकनीकी कर्मचारी

| | | | | | | | |
|----|-------------------------------------|---|----|----|----|----|----------|
| 1. | मुख्य कार्यकारी अधिकारी | क | 01 | - | - | - | स्तर -14 |
| 2. | उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी | क | 01 | 01 | 01 | 00 | स्तर -13 |
| 3. | उप निदेशक (औषधीय पादप) | क | 01 | - | - | - | स्तर -12 |
| 4. | सहायक सलाहकार (वनस्पति विज्ञान) | क | 01 | - | - | - | स्तर -11 |
| 5. | प्रबंधक (विपणन और व्यापार) | क | 01 | 01 | 01 | 00 | स्तर -11 |
| 6. | अनुसंधान अधिकारी (सांसद/कृषि) | क | 02 | 02 | 02 | 00 | स्तर -10 |
| 7. | अनुसंधान अधिकारी | क | 01 | - | - | - | स्तर -10 |

| | (वनस्पति विज्ञान) | | | | | | |
|-------------------------------|--|---------------|------------|-----------|-----------|-----------|----------|
| कुल योग (IV) | | | 08 | 04 | 04 | 00 | |
| ड. सांख्यिकीय कर्मचारी | | | | | | | |
| 1. | उप महानिदेशक (आईएसएस) | क | 01 | 01 | 01 | 00 | स्तर -14 |
| 2. | उप निदेशक (आईएसएस) | क | 01 | 01 | 01 | 00 | स्तर -11 |
| 3. | सहायक निदेशक (आईएसएस) | क | 01 | 01 | 01 | 00 | स्तर -10 |
| 4. | वरिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी (एसएसएस) | ख | 02 | 02 | 02 | 00 | स्तर -07 |
| 5. | कनिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी (एसएसएस) | ख | 02 | 02 | 01 | 01 | लेवल -06 |
| कुल योग (V) | | | 07 | 07 | 06 | 01 | |
| च. हिंदी कार्मिक | | | | | | | |
| 1. | संयुक्त निदेशक | क | 01 | - | - | - | स्तर -12 |
| 2. | सहायक संचालक | क | 01 | 01 | 00 | 01 | स्तर -10 |
| 3. | वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी | ख | 01 | 01 | 00 | 01 | स्तर -07 |
| 4. | कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी | ख | 01 | 01 | 01 | 00 | लेवल -06 |
| कुल योग (VI) | | | 04 | 03 | 01 | 02 | |
| छ. संविदा कर्मचारी \$ | | | | | | | |
| क्र.सं. नहीं। | संविदा पद का नाम | स्वीकृत शक्ति | स्थिति में | पुरुष | महिला | | |
| 1. | सलाहकार \$\$ | 42 | 34 | 32 | 02 | | |
| 2. | पेशेवर युवा | 10 | 04 | 03 | 01 | | |
| 3. | कार्यालय सहायक/डाटा एंट्री | 101 | 76 | 41 | 35 | | |

| | | | | | |
|---------------------------------------|--|------------|------------|------------|-----------|
| | ऑपरेटर (डीईओ) | | | | |
| 4. | हाउसकीपिंग स्टाफ (सहित पर्यवेक्षक, कचरा कलेक्टर, माली आदि) | 23 | 23 | 16 | 07 |
| 5. | मीटर | 32 | 31 | 30 | 01 |
| 6. | सुरक्षा कर्मचारी | 24 | 24 | 24 | 00 |
| कुल योग (VII) | | 232 | 192 | 146 | 46 |
| महा योग (I+II+III+IV+V+VI+VII) | | 397 | 338 | 239 | 99 |

नोट: * संयुक्त सचिव पद को विशेष सचिव के पद पर पदोन्नत किया गया है

** जी-20 सचिवालय के लिए सृजित संयुक्त सचिव का एक अस्थायी पद, उप सचिव का एक अस्थायी पद शामिल है

*** सेंट्रल स्टाफिंग स्कीम के तहत जी-20 सचिवालय के लिए सृजित अवर सचिव का एक अस्थायी पद शामिल है

आयुष चिकित्सकों के कुल स्वीकृत पद 261 हैं जिनमें 121- आयुर्वेद, 110- होम्योपैथी, 25- यूनानी और 05- सिद्ध चिकित्सक शामिल हैं। इन चिकित्सकों को या तो केंद्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना (सीजीएचएस), स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (एमओएच एंड एफडब्ल्यू) के व्यवस्थापन में सीजीएचएस औषधालयों में उनकी आगे की तैनाती के लिए रखा गया है या आयुष मंत्रालय में नीति संबंधी मामलों में समर्थन देने के लिए तकनीकी आवश्यकता के आधार पर उनकी तैनाती के लिए रखा गया है। इन पदों को कुल संयुक्त स्वीकृत पद संख्या के भीतर संचालित किया जाना है।

\$ आयुष मंत्रालय के प्रशासनिक प्रभाग द्वारा अनुबंधित कर्मचारी

\$\$ प्रशासन प्रभाग द्वारा नियुक्त सलाहकार और मंत्रालय के क्षेत्रीय संगठनों के माध्यम से नियुक्त

मंत्रालय के 05 अनुसंधान परिषदों के अंतर्गत अनुसंधान संस्थान

| राज्य/संघ राज्य क्षेत्र का नाम | केंद्रों की संख्या | संस्थान/यूनिट का नाम |
|---|--------------------|--|
| आयुर्वेद में अनुसंधान के लिए केंद्रीय परिषद (30) | | |
| अंदमान और निकोबार द्वीप | 01 | क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर |
| आंध्र प्रदेश | 01 | क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, विजयवाड़ा |
| अरुणाचल प्रदेश | 01 | क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, ईटानगर |
| असम | 01 | केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, गुवाहाटी |
| बिहार | 01 | क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पटना |
| दिल्ली | 01 | केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली |
| गोवा | 01 | खनिज एवं समुद्री औषधीय संसाधन क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, गोवा |
| गुजरात | 01 | क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, अहमदाबाद |
| हिमाचल प्रदेश | 01 | क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, मंडी |
| जम्मू-कश्मीर | 01 | क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, जम्मू |
| कर्नाटक | 01 | केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरु |
| केरल | 02 | राष्ट्रीय आयुर्वेद पंचकर्म अनुसंधान संस्थान, चेरुथुरुथी |
| | | क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, तिरुवनंतपुरम |
| मध्य प्रदेश | 01 | क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, ग्वालियर |
| महाराष्ट्र | 03 | राजा रामदेव आनंदीलाल पोद्दार (आरआरएपी) केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, मुंबई |
| | | क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, नागपुर |
| | | क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पुणे |
| नागालैंड | 01 | क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केंद्र, दीमापुर, नागालैंड |
| ओडिशा | 01 | केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर |
| पंजाब | 01 | केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पटियाला |
| राजस्थान | 01 | एमएस क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, जयपुर |
| सिक्किम | 01 | क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, गंगटोक |
| तमिलनाडु | 02 | कप्तान श्रीनिवास मूर्ति केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, चेन्नई |

| राज्य/संघ राज्य क्षेत्र का नाम | केंद्रों की संख्या | संस्थान/यूनिट का नाम |
|--|--------------------|---|
| | | डॉ. अचंता लक्ष्मीपति क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, चेन्नई |
| तेलंगाना | 01 | नेशनल सेंटर ऑफ इंडियन मेडिकल हेरिटेज, हैदराबाद |
| त्रिपुरा | 01 | क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केंद्र, अगरतला, त्रिपुरा |
| उत्तर प्रदेश | 02 | केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, झांसी |
| | | क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, लखनऊ |
| उत्तराखंड | 01 | क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, रानीखेत |
| पश्चिमी बंगाल | 01 | केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, कोलकाता |
| योग और प्राकृतिक चिकित्सा में अनुसंधान के लिए केंद्रीय परिषद (02) | | |
| कर्नाटक | 01 | पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ योग एंड नेचुरोपैथी एजुकेशन एंड रिसर्च (पीजीआईवाईएनईआर), नागमंगला, कर्नाटक: |
| हरियाणा | 01 | योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा स्नातकोत्तर शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (पीजीआईवाईएनईआर), देवरखाना, झज्जर, हरियाणा |
| यूनानी चिकित्सा में अनुसंधान के लिए केंद्रीय परिषद (23) | | |
| आंध्र प्रदेश | 01 | क्लिनिकल रिसर्च यूनिट, डॉ. अब्दुल हक यूनानी मेडिकल कॉलेज, 40/23, पार्क रोड, कुरनूल-518 001 (आंध्र प्रदेश) |
| असम | 01 | क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (आरआरआईयूएम), पशु चिकित्सा बाजार, घुंगूर, सिलचर - 788014, (असम) |
| बिहार | 01 | क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, गुजरी, पटना सिटी, पटना- 800 008 (बिहार) |
| दिल्ली | 03 | क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, डी-11/1, अबुल फ़ज़ल एन्क्लेव, जामिया नगर, ओखला, नई दिल्ली - 110 025। |
| | | हकीम अजमल खान इंस्टीट्यूट ऑफ लिटरेरी एंड हिस्टोरिकल रिसर्च इन यूनानी मेडिसिन, डॉ. एमए अंसारी हेल्थ सेंटर, जामिया मिलिया इस्लामिया, ओखला, नई दिल्ली - 25 |
| | | औषधि मानकीकरण अनुसंधान इकाई, 61-65 इंस्टीट्यूशनल एरिया अपोजिट। डी ब्लॉक जनकपुरी नई |

| राज्य/संघ राज्य क्षेत्र का नाम | केंद्रों की संख्या | संस्थान/यूनिट का नाम |
|----------------------------------|--------------------|---|
| | | दिल्ली |
| जम्मू-कश्मीर (संघ राज्य क्षेत्र) | 01 | क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, यूनिवर्सिटी ऑफ कश्मीर कैंपस, हजरत बल, श्रीनगर - 190 006 (जम्मू और कश्मीर) |
| केरल | 01 | क्लीनिकल रिसर्च यूनिट (यूनानी), कुरुपतिल नीना मेमोरियल, पंचायत कार्यालय के पास, पीओ एडथला (एन) - 683 564 अलवे, केरल |
| कर्नाटक | 01 | क्लिनिकल रिसर्च यूनिट (यूनानी), नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ यूनानी मेडिसिन, कोट्टिगेपालिया, मगदी मेन रोड, बैंगलुरु - 560 091 (कर्नाटक) |
| मध्य प्रदेश | 02 | नैदानिक अनुसंधान इकाई (यूनानी) फार्माकोलॉजी विभाग, गांधी मेडिकल कॉलेज, भोपाल - 462 001 (एमपी) |
| | | नैदानिक अनुसंधान इकाई (यूनानी) एसएच यूनानी तिब्बिया कॉलेज गणपति नाका, बुरहानपुर - 450 331 (एमपी) |
| महाराष्ट्र | 01 | क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान प्लॉट नंबर 38/39, सेक्टर-18, खारघर, नवी मुंबई (महाराष्ट्र)-410210 |
| मणिपुर | 01 | क्लिनिकल रिसर्च यूनिट, लाम्फेल रोड, लम्फेलपट, इंफाल, मणिपुर 795004 |
| ओडिशा | 01 | क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, चंदबली बाईपास रोड, ग्रामीण पुलिस स्टेशन के पास, भद्रक - 756 100 (उड़ीसा) |
| तमिलनाडु | 01 | क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, 01, वेस्ट मेडा चर्च स्ट्रीट रॉयपुरम, चेन्नई - 600 013 (तमिलनाडु) |
| तेलंगाना | 01 | त्वचा-विकार यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (तत्कालीन यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान) ईएसआई अस्पताल के सामने, एजी कॉलोनी रोड, एर्रागड्डा, हैदराबाद - 500 838 |
| उत्तर प्रदेश | 06 | केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, पोस्ट एंड विलेज, बसाहा कुर्सी रोड, लखनऊ - 226 026 (उत्तर प्रदेश) |
| | | क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, शाहजहां |

| राज्य/संघ राज्य क्षेत्र का नाम | केंद्रों की संख्या | संस्थान/यूनिट का नाम |
|---|--------------------|---|
| | | मंजिल, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ - 202 001 (उत्तर प्रदेश) |
| | | औषधि मानकीकरण अनुसंधान संस्थान, पीएलआईएम, बिल्डिंग, 'एम' ब्लॉक के सामने, सेक्टर-23, कमला नेहरू नगर, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) |
| | | क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र (आरआरसी), बी-501/4, जीटीबी नगर, दुल्हन पैलेस के सामने, करेली, इलाहाबाद - 211 016 (उत्तर प्रदेश) |
| | | नैदानिक अनुसंधान इकाई (यूनानी), छावनी सामान्य अस्पताल (सोतीगंज), बेगम ब्रिज, मेरठ (उत्तर प्रदेश) |
| | | रासायनिक अनुसंधान इकाई, यूनानी चिकित्सा अनुसंधान विभाग, डीन के कार्यालय के पास, विज्ञान संकाय, एएमयू अलीगढ़ - 202002 |
| पश्चिमी बंगाल | 01 | क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, पहली मंजिल, 250ए/29, जीटी रोड (उत्तर), जायसवाल अस्पताल के पास, लिलुआ, हावड़ा - 711201 |
| सिद्ध में अनुसंधान के लिए केंद्रीय परिषद (08) | | |
| तमिलनाडु | 02 | केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान संस्थान, चेन्नई |
| | | सिद्ध नैदानिक अनुसंधान इकाई, पलायमकोट्टई |
| केरल | 01 | क्षेत्रीय सिद्ध अनुसंधान संस्थान, तिरुवनंतपुरम |
| कर्नाटक | 01 | सिद्ध नैदानिक अनुसंधान इकाई, बेंगलुरु |
| आंध्र प्रदेश | 01 | सिद्ध नैदानिक अनुसंधान इकाई, तिरुपति |
| पुडुचेरी | 01 | सिद्ध क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, पुडुचेरी |
| नई दिल्ली | 01 | सिद्ध नैदानिक अनुसंधान इकाई, सफदरजंग |
| गोवा | 01 | सिद्ध नैदानिक अनुसंधान इकाई, गोवा |
| होम्योपैथी में अनुसंधान के लिए केंद्रीय परिषद (25) | | |
| आंध्र प्रदेश | 02 | नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्योपैथी), ओल्ड मेटरनिटी हॉस्पिटल कैंपस तिरुपति -517507 |
| | | क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्योपैथी), डॉ. जीजीएच मेडियल कॉलेज कैंपस, एलुरु रोड, गुडिवाडा - 521 301 (एपी) |

| राज्य/संघ राज्य क्षेत्र का नाम | केंद्रों की संख्या | संस्थान/यूनिट का नाम |
|--------------------------------|--------------------|---|
| तेलंगाना | 01 | क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्योपैथी) क्यू.यू.बी. 32, कमरा नंबर 4, विक्रम पुरी, हब्लिसगुड़ा, हैदराबाद - 500007 |
| असम | 01 | क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्योपैथी), एनईआईएआरआई, आयुर्वेदिक अस्पताल परिसर, बरसोजई, भेटपारा, गुवाहाटी-781028 |
| बिहार | 01 | नैदानिक सत्यापन इकाई (होम्योपैथी) गुरु गोविंद सिंह अस्पताल, दूसरी मंजिल, पटना सिटी पटना - 800008 |
| गोवा | 01 | क्लिनिकल रिसर्च यूनिट (एच) ओल्ड जीएमसी बिल्डिंग, रिबंदर, गोवा -403006 |
| हिमाचल प्रदेश | 01 | क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्योपैथी), सी-5, फेज 1, सेक्टर-2, मेन रोड न्यू शिमला -171009 |
| झारखंड | 01 | नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्योपैथी), अरसंडे, बोरेया रोड, पीओ बोरेया, रांची-835240 |
| केरल | 01 | राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य होम्योपैथी अनुसंधान संस्थान सचीवोथमपुरम, कोट्टायम-686532 |
| महाराष्ट्र | 01 | क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्योपैथी), "एमटीएनएल" हॉल नंबर 4, शॉपिंग सेंटर, सेक्टर-9, सीबीडी बेलापुर, नवी मुंबई- 400614 |
| मणिपुर | 01 | क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्योपैथी), न्यू चेकॉन, मारिंग लैंड, ट्रिवल कॉलोनी के सामने, इंफाल -795001 |
| मिजोरम | 01 | क्लिनिकल रिसर्च यूनिट (होम्योपैथी), आयुष बिल्डिंग, सिविल अस्पताल, दौरपुई आइजोल, -796001 |
| नागालैंड | 01 | क्लिनिकल रिसर्च यूनिट (होम्योपैथी), मेडिकल कॉलोनी, दीमापुर, आयुष बिल्डिंग, अपोजिट. कार्यालय मुख्य चिकित्सा अधिकारी नागालैंड -797112 |
| ओडिशा | 02 | क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्योपैथी), और विस्तार केंद्र, सीसीआरएच बिल्डिंग, मार्ची कोटे लेन, लबनिखिया चाक, पुरी -752001 आरआरआई (एच) की विस्तारित इकाई, डॉ एसी होम्योपैथी एमसी एंड हॉस्पिटल यूनिट-III भुवनेश्वर-751001 ओडिशा |
| राजस्थान | 01 | केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान संस्थान, सेक्टर-26, |

| राज्य/संघ राज्य क्षेत्र का नाम | केंद्रों की संख्या | संस्थान/यूनिट का नाम |
|--------------------------------|--------------------|--|
| | | एनआरआई सर्कल के पास, प्रताप नगर हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी (आयुष भवन के बगल में), जयपुर -302006 |
| सिक्किम | 01 | क्लिनिकल रिसर्च यूनिट (होम्योपैथी), सम्फेल होटल के सामने, संग्राम भवन के पास, विकास क्षेत्र, गंगटोक - 737101 |
| तमिलनाडु | 02 | होम्योपैथिक विकलांग अनुसंधान संस्थान कमरा नंबर 136, एनआईईपीएमडी कैंपस, ईसीआर रोड, मुद्दुकुडु, चेन्नई - 603112 |
| | | होम्योपैथी में औषधीय पादप अनुसंधान केंद्र 3/126, इंदिरा नगर, एमराल्ड पोस्ट, ऊटी, नीलगिरी जिला-643 209 |
| त्रिपुरा | 01 | क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्योपैथी), जयकृष्ण कोबरा पारा रोड, खुमुल्वंग, जिरानिया, अगरतला-799045 |
| उत्तर प्रदेश | 03 | डॉ. डीपी रस्तोगी केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान संस्थान, ए-1/1, सेक्टर 24, नोएडा, गौतमबुद्धनगर-201301 उत्तर प्रदेश |
| | | नैदानिक परीक्षण इकाई (होम्योपैथी) कमरा नंबर 10 और 11, पहली मंजिल (प्राइवेट वार्ड) बीआरडी मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, गोरखपुर -283016, उत्तर प्रदेश |
| | | होम्योपैथी औषधि अनुसंधान संस्थान (एचडीआरआई) एवं विस्तार केंद्र, राष्ट्रीय होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल परिसर, और विस्तार केंद्र 1, विराज खंड, गोमती नगर, लखनऊ -226010 |
| पश्चिमी बंगाल | 02 | डॉ. अंजलि चटर्जी क्षेत्रीय होम्योपैथी अनुसंधान संस्थान, 50, राजेंद्र चटर्जी रोड, कोलकाता-700035 |
| | | क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्योपैथी), श्री श्री रविशंकर आर्ट ऑफ़ लिविंग मंदिर के सामने छोटापथुरमजोत, जलास निजामतारा पंचायत दार्जिलिंग - 734001 |